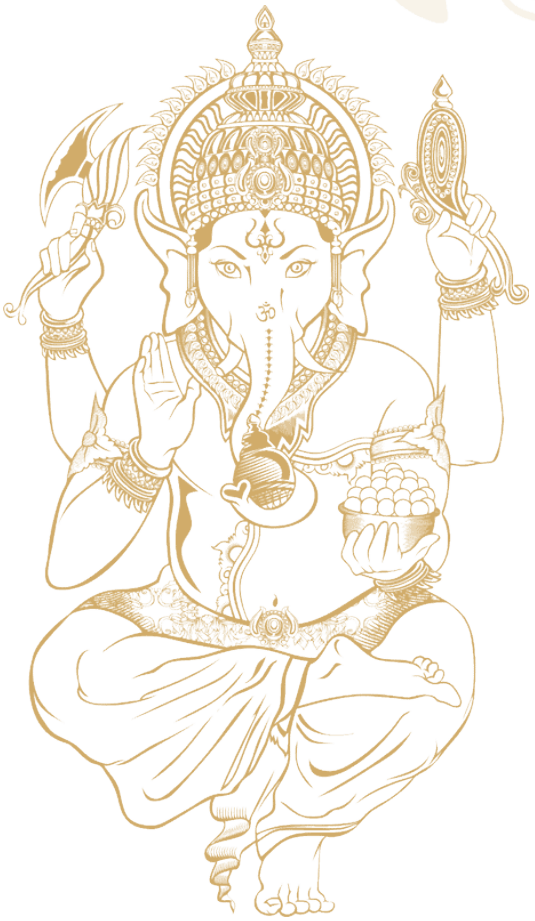

Pratiksha

24 Sep 1999

07:00 AM

Alkuti

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120819001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**24/09/1999**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**07:00:00 घंटे**
इष्ट	01:34:10 घटी
स्थान	**Alkuti**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	19:03:00 उत्तर
रेखांश	74:14:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:33:04 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	06:26:56 घंटे
वेलान्तर	00:07:45 घंटे
साम्पातिक काल	06:36:44 घंटे
सूर्योदय	06:22:19 घंटे
सूर्यास्त	18:27:57 घंटे
दिनमान	12:05:37 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	06:43:13 कन्या
लग्न के अंश	14:50:47 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**कुम्भ - शनि**
नक्षत्र-चरण	**शतभिषा - 4**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	शूल
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मेष
युँजा	अन्त्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	सू-सुगन्धा
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1921	आश्विन	2
पंजाबी	संवत : 2056	आश्विन	8
बंगाली	सन् : 1406	आश्विन	7
तमिल	संवत : 2056	पुरुटासी	8
केरल	कोल्लम : 1175	कन्नी	8
नेपाली	संवत : 2056	आश्विन	8
चैत्रादि	संवत : 2056	भाद्रपद	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2056	भाद्रपद	शुक्ल 14

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 14
तिथि समाप्ति काल _____: 18:08:06
जन्म तिथि _____: 14
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 09:04:45 घंटे
जन्म योग _____: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग _____: शूल
योग समाप्ति काल _____: 14:18:32 घंटे
जन्म योग _____: शूल
सूर्योदय कालीन करण _____: गर
करण समाप्ति काल _____: 06:48:40 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 54:16:43
भभोग _____: 59:28:34
भोग्य दशा काल _____: राहु 1 वर्ष 7 मा 3 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: श्वान
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

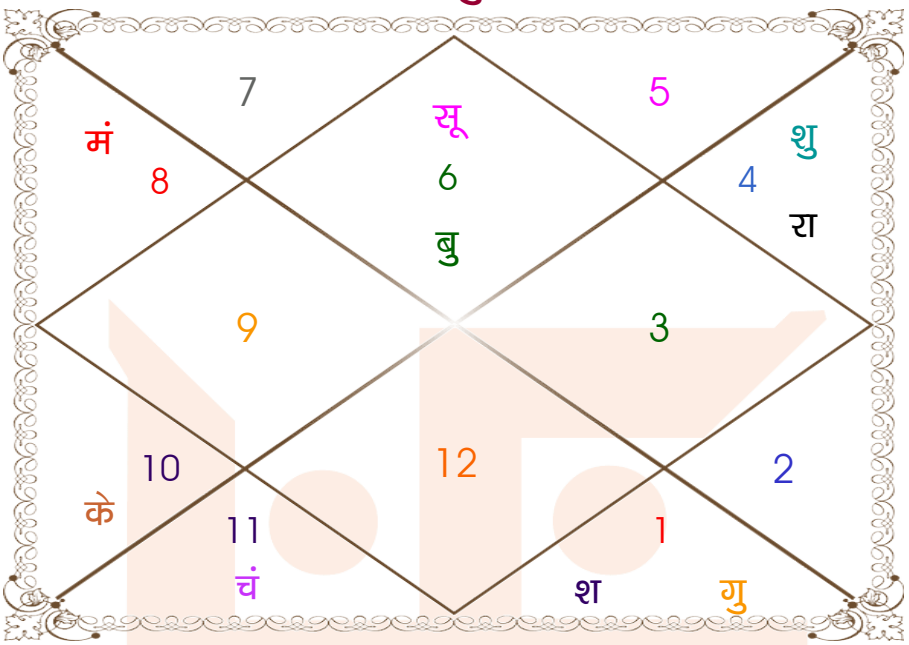

चन्द्र कुंडली

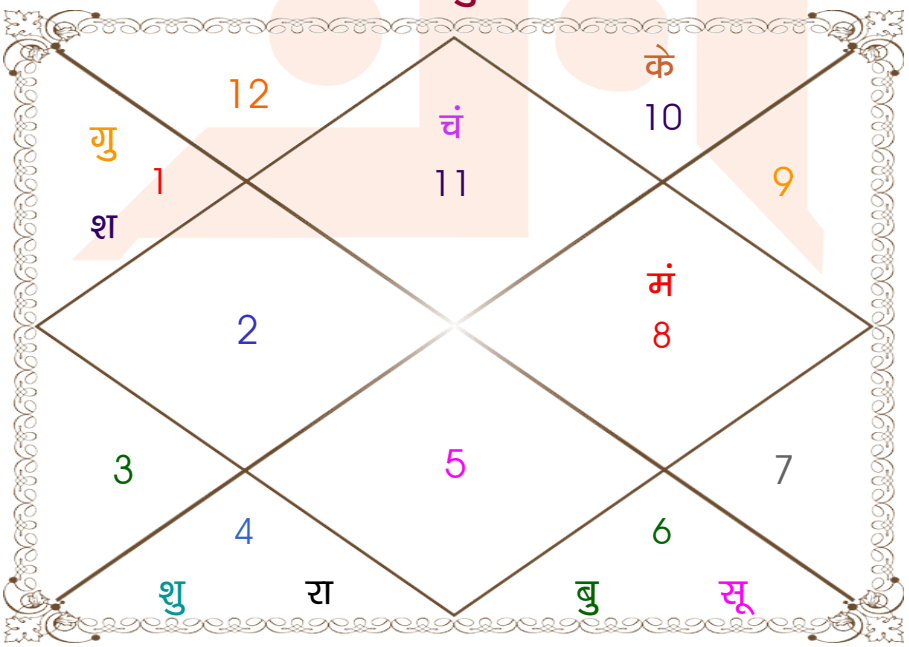

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

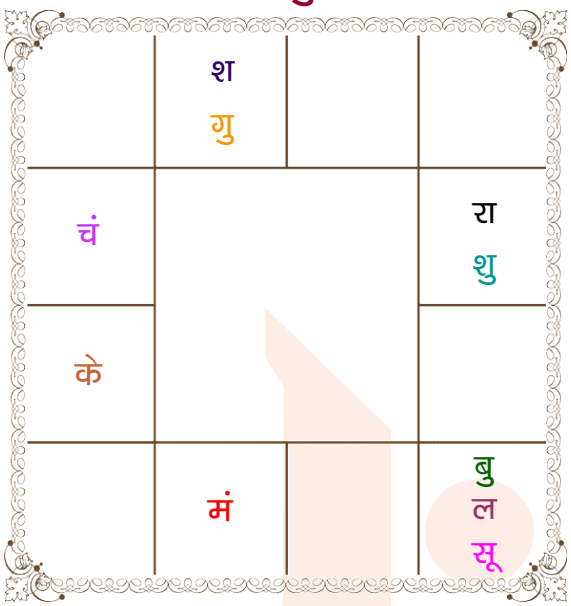

लग्न कुंडली

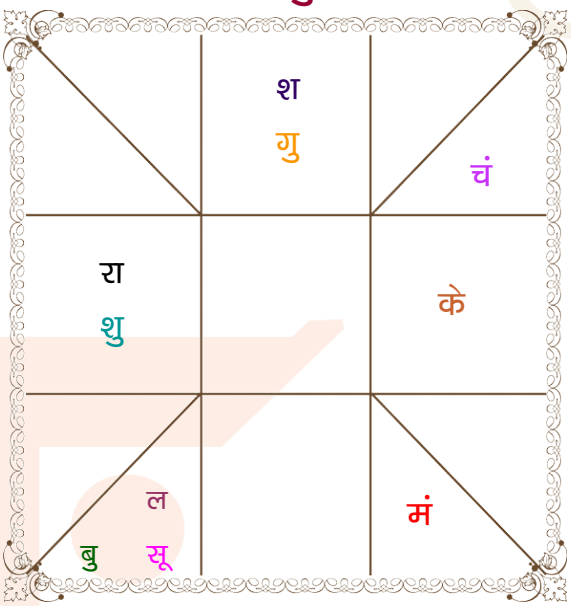

विंशोत्तरी
राहु 1वर्ष 7मा 3दि

राहु

24/09/1999

29/04/2103

राहु	28/04/2001
गुरु	28/04/2017
शनि	28/04/2036
बुध	28/04/2053
केतु	28/04/2060
शुक्र	28/04/2080
सूर्य	28/04/2086
चन्द्र	28/04/2096
मंगल	29/04/2103

योगिनी
धान्या 0वर्ष 3मा 5दि

संकटा

29/12/2021

29/12/2029

संकटा	10/10/2023
मंगला	30/12/2023
पिंगला	09/06/2024
धान्या	08/02/2025
भ्रामरी	29/12/2025
भद्रिका	08/02/2027
उल्का	09/06/2028
सिद्धा	29/12/2029

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	14:50:47	341:22:16	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	गुरु	---
सूर्य			कन्या	06:43:13	00:58:43	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	बुध	सम राशि
चंद्र			कुंभ	18:49:11	13:36:32	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	सम राशि
मंगल			वृश्चि	20:01:43	00:40:42	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	स्वराशि
बुध		अ	कन्या	18:53:54	01:37:52	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
गुरु	व		मेष	09:40:49	00:05:37	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	शनि	मित्र राशि
शुक्र			कर्क	27:57:59	00:26:19	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	शनि	शत्रु राशि
शनि	व		मेष	22:47:09	00:02:33	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	नीच राशि
राहु	व		कर्क	18:12:08	00:04:31	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		मक	18:12:08	00:04:31	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	19:21:26	00:01:22	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
नेप	व		मक	07:50:50	00:00:38	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	---
प्लूटो			वृश्चि	14:14:36	00:01:10	अनुराधा	4	17	मंगल	शनि	राहु	---
दशम भाव			मिथु	14:35:04	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	केतु	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:50:58

लग्न-चलित

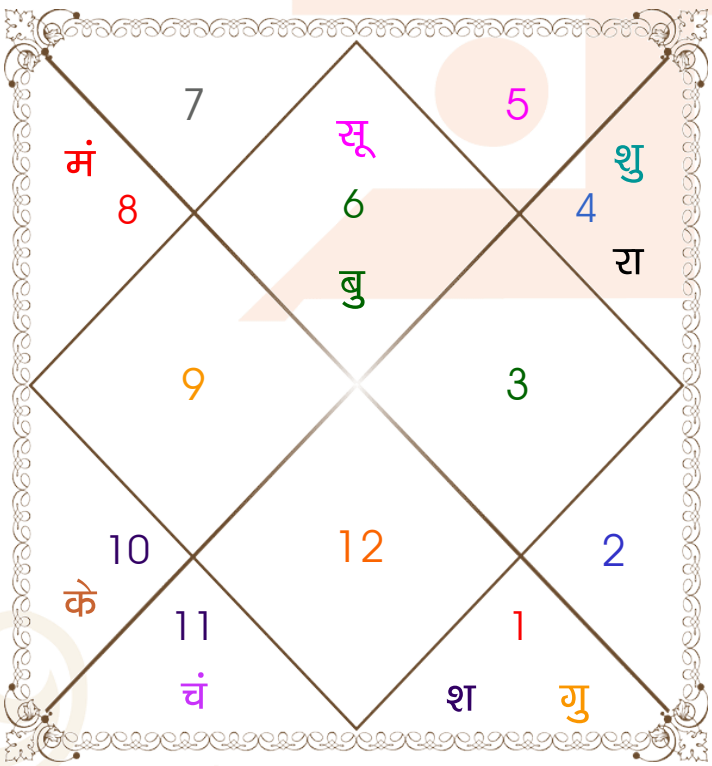

चन्द्र कुंडली

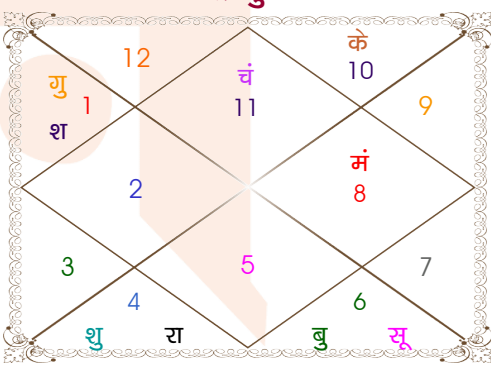

नवमांश कुंडली

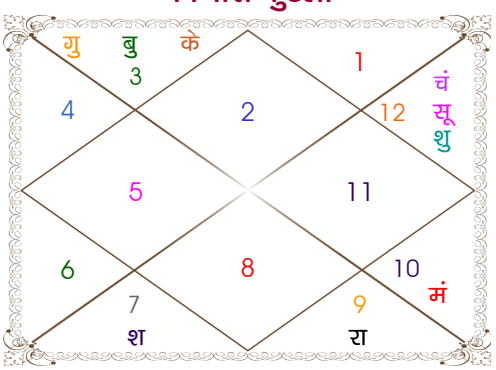

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	29:48:10	कन्या	14:50:47
2	कन्या	29:48:10	तुला	14:45:33
3	तुला	29:42:56	वृश्चिक	14:40:18
4	वृश्चिक	29:37:41	धनु	14:35:04
5	धनु	29:37:41	मकर	14:40:18
6	मकर	29:42:56	कुम्भ	14:45:33
7	कुम्भ	29:48:10	मीन	14:50:47
8	मीन	29:48:10	मेष	14:45:33
9	मेष	29:42:56	वृष	14:40:18
10	वृष	29:37:41	मिथुन	14:35:04
11	मिथुन	29:37:41	कर्क	14:40:18
12	कर्क	29:42:56	सिंह	14:45:33

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	14:50:47
2	तुला	14:21:01
3	वृश्चिक	14:26:52
4	धनु	14:35:04
5	मकर	15:03:04
6	कुम्भ	15:37:16
7	मीन	14:50:47
8	मेष	14:21:01
9	वृष	14:26:52
10	मिथुन	14:35:04
11	कर्क	15:03:04
12	सिंह	15:37:16

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

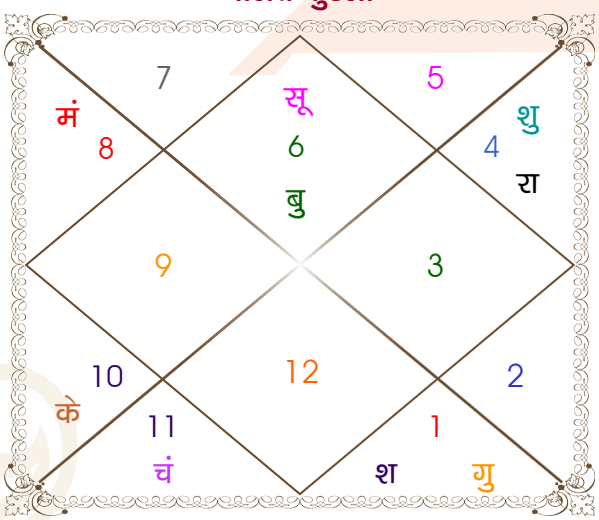

भाव कुंडली

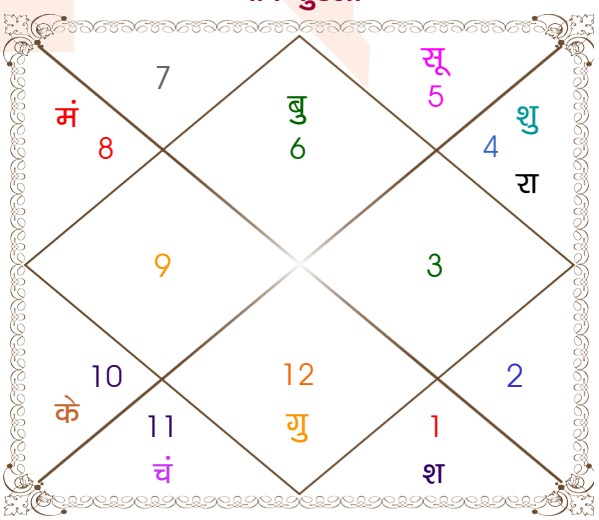

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	कलत्र	पितृ	वृद्ध	निपीदित	सभा	0.92	46 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	वृद्ध	शक्त	सभा	6.35	59 %
मंगल	भ्रातृ	भ्रातृ	कुमार	स्वस्थ	शयन	4.67	34 %
बुध	मातृ	ज्ञाति	कुमार	विकल	सभा	0.00	76 %
गुरु	ज्ञाति	धन	कुमार	मुदित	नृत्यलिप्सा	3.68	42 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल	खल	शयन	1.05	41 %
शनि	अमात्य	आयु	वृद्ध	भीत	भोजन	0.03	31 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	सभा	0.00	76 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	सभा	0.00	76 %
कुल						16.70	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली

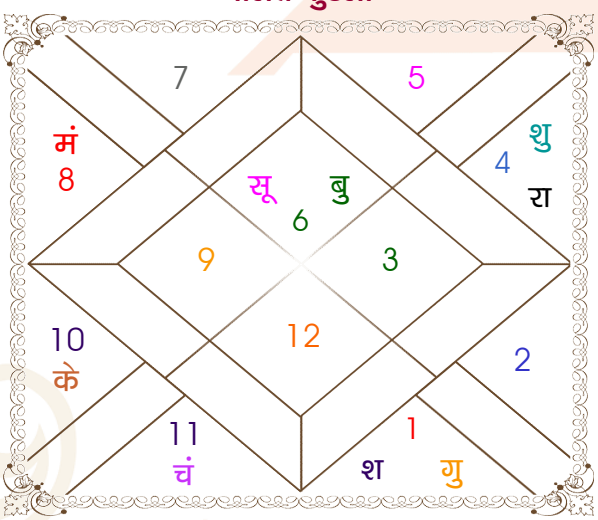

लग्न-चलित

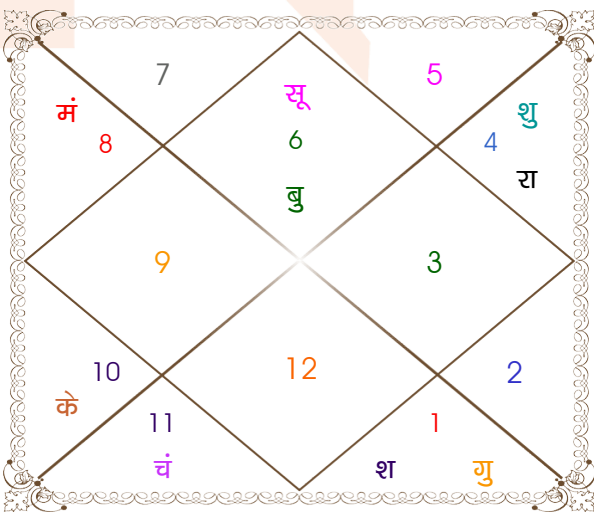

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

सुदर्शन चक्र

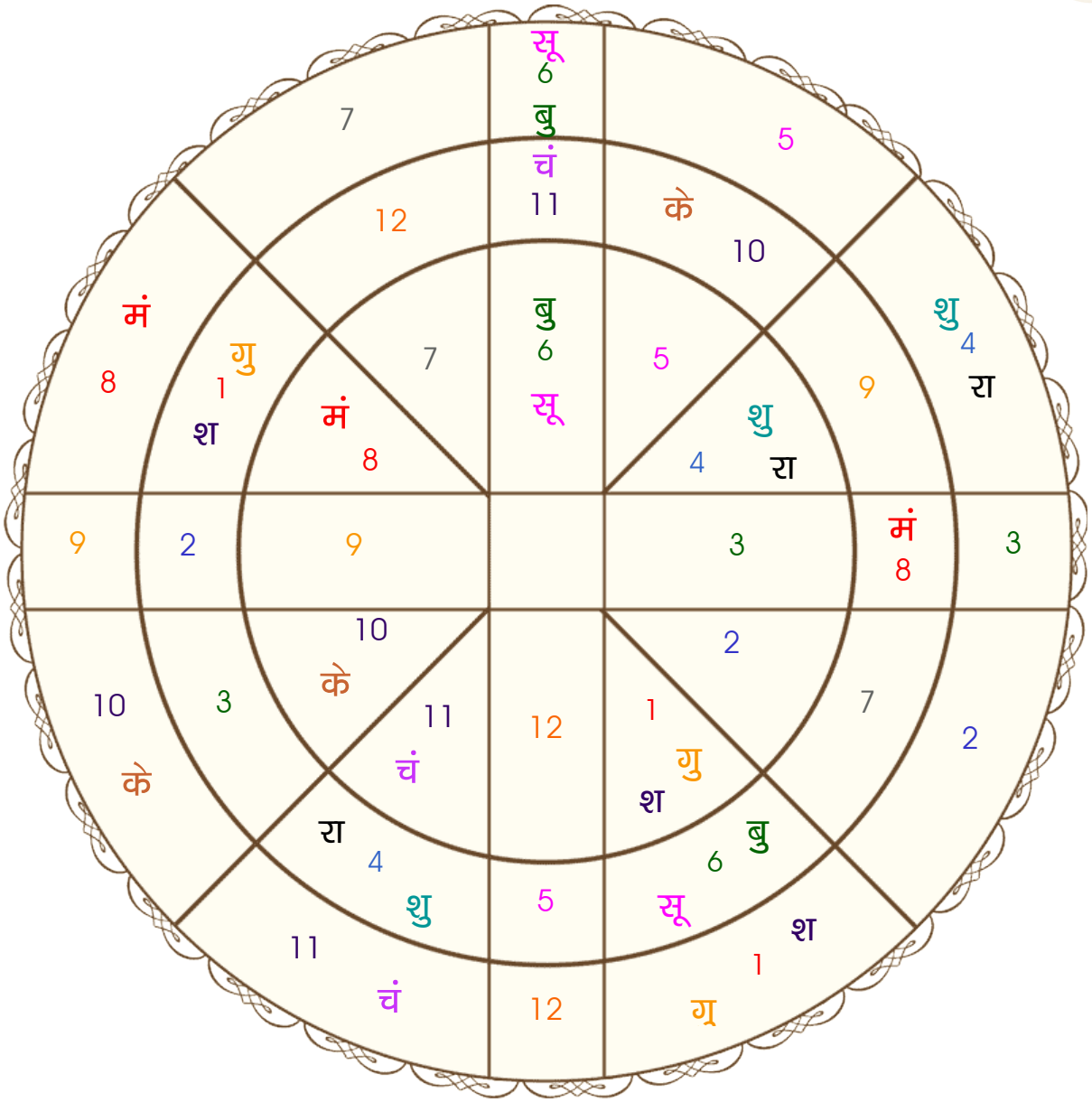

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : राहु 1 वर्ष 5 मास 19 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कन्या	06:48:40	बुध	सूर्य	बुध	शनि
चंद्र		कुंभ	18:54:38	शनि	राहु	चंद्र	बुध
मंगल		वृश्चि	20:07:10	मंगल	बुध	शुक्र	मंगल
बुध		कन्या	18:59:21	बुध	चंद्र	बुध	राहु
गुरु	व	मेष	09:46:16	मंगल	केतु	शनि	बुध
शुक्र		कर्क	28:03:26	चंद्र	बुध	शनि	शनि
शनि	व	मेष	22:52:36	मंगल	शुक्र	शनि	शुक्र
राहु	व	कर्क	18:17:35	चंद्र	बुध	बुध	शनि
केतु	व	मक	18:17:35	शनि	चंद्र	बुध	शुक्र
हर्ष	व	मक	19:26:53	शनि	चंद्र	बुध	शनि
नेप	व	मक	07:56:17	शनि	सूर्य	शुक्र	शुक्र
प्लूटो		वृश्चि	14:20:03	मंगल	शनि	राहु	शुक्र

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	कन्या	14:56:14	बुध	चंद्र	गुरु	शुक्र
2	तुला	14:26:28	शुक्र	राहु	बुध	शनि
3	वृश्चि	14:32:19	मंगल	शनि	राहु	सूर्य
4	धनु	14:40:31	गुरु	शुक्र	शुक्र	गुरु
5	मक	15:08:31	शनि	चंद्र	गुरु	सूर्य
6	कुंभ	15:42:43	शनि	राहु	शुक्र	चंद्र
7	मीन	14:56:14	गुरु	शनि	गुरु	गुरु
8	मेष	14:26:28	मंगल	शुक्र	शुक्र	राहु
9	वृष	14:32:19	शुक्र	चंद्र	गुरु	बुध
10	मिथु	14:40:31	बुध	राहु	केतु	चंद्र
11	कर्क	15:08:31	चंद्र	शनि	गुरु	शनि
12	सिंह	15:42:43	सूर्य	शुक्र	सूर्य	राहु

के.पी. अयनांश : 23:45:31

फॉरच्युना : कुम्भ 27:02:12

लग्न कुंडली

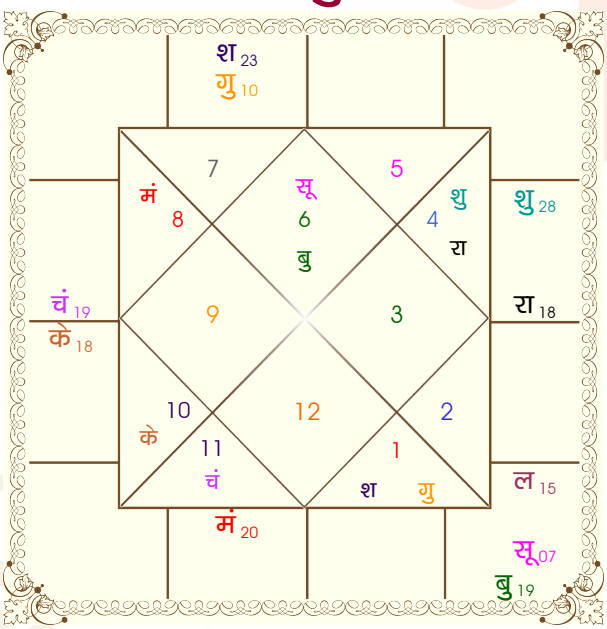

भाव कुंडली

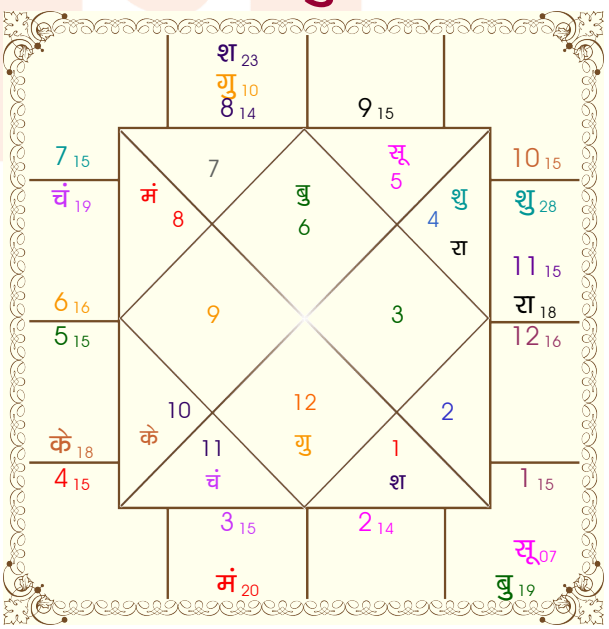

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	मंगल+ बुध, शुक्र+ राहु+
2	शुक्र- शनि-
3	मंगल,
4	गुरु-
5	गुरु, शनि- केतु,
6	चंद्र, बुध, शनि- केतु,
7	गुरु,
8	मंगल- शनि,
9	शुक्र- शनि-
10	मंगल- बुध- शुक्र- राहु-
11	चंद्र+ बुध- शुक्र, शनि, राहु, केतु-
12	सूर्य+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	12+
चंद्र	6, 11+
मंगल	1+ 3, 8- 10-
बुध	1, 6, 10- 11-
गुरु	4- 5, 7,
शुक्र	1+ 2- 9- 10- 11,
शनि	2- 5- 6- 8, 9- 11,
राहु	1+ 10- 11,
केतु	5, 6, 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	राहु
राशि स्वामी	शनि
वार स्वामी	शुक्र
लग्न अन्तर स्वामी	गुरु
राशि अन्तर स्वामी	चन्द्र

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	मं शु रा	बु	मं शु रा	बु
2	--	--	श	शु
3	--	मं	--	मं
4	--	--	--	गु
5	गु	के	--	श
6	बु के	चं	--	श
7	--	गु	--	गु
8	--	श	--	मं
9	--	--	श	शु
10	--	--	मं शु रा	बु
11	चं श	शु रा	बु के	चं
12	सू	सू	सू	सू

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	12	---	कन्या	12
चंद्र	11	1,5,9	कुम्भ	6
मंगल	3,8	---	वृश्चिक	3
बुध	1,10	---	कन्या	1
गुरु	4,7	---	मेष	7
शुक्र	2,9	4,8,12	कर्क	11
शनि	5,6	3,7,11	मेष	8
राहु	---	2,6,10	कर्क	11
केतु	---	---	मकर	5

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	12	---	12	1,10	---	1
चंद्र	---	2,6,10	11	11	1,5,9	6
मंगल	1,10	---	1	2,9	4,8,12	11
बुध	11	1,5,9	6	1,10	---	1
गुरु	---	---	5	5,6	3,7,11	8
शुक्र	1,10	---	1	5,6	3,7,11	8
शनि	2,9	4,8,12	11	5,6	3,7,11	8
राहु	1,10	---	1	1,10	---	1
केतु	11	1,5,9	6	1,10	---	1

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	156.72	318.82	230.03	168.90	9.68	117.97	22.79	108.20	288.20	289.36	277.85	224.24
सूर्य	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	पंच	--
156.72	0.00	0.00	0.00	2.91	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.87	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	--	तृती	षष्ठ	--	--	--	--
318.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.52	0.57	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	4था	--	--	--	--	--	--	तृती	तृती	--	युति
230.03	0.00	9.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.66	2.95	0.00	8.22
बुध	युति	षष्ठ	तृती	--	--	--	--	--	पंच	पंच	--	तृती
168.90	2.91	0.99	2.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.95	2.98	0.00	1.03
गुरु	--	--	--	--	--	5वां	युति	--	--	--	--	--
9.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.37	1.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	सप्त	--	--
117.97	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.21	5.21	6.20	0.00	0.00
शनि	--	--	--	--	युति	चतु	--	चतु	10वा	10वा	10वा	--
22.79	0.00	0.00	0.00	0.00	1.97	0.64	0.00	1.09	8.87	9.36	0.06	0.00
राहु	--	--	पंच	तृती	--	युति	--	--	सप्त	सप्त	सप्त	पंच
108.20	0.00	0.00	2.66	2.95	0.00	5.21	0.00	0.00	10.00	9.93	4.67	1.53
केतु	--	--	--	--	--	सप्त	चतु	सप्त	--	युति	युति	--
288.20	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	5.21	1.09	10.00	0.00	9.93	4.67	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	सप्त	चतु	सप्त	युति	--	युति	--
289.36	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.20	1.87	9.93	9.93	0.00	3.57	0.00
नेप	--	नवां	--	--	चतु	--	--	सप्त	युति	युति	--	--
277.85	0.00	0.04	0.00	0.00	2.66	0.00	0.00	4.67	4.67	3.57	0.00	0.00
प्लूटो	--	चतु	युति	--	--	--	--	--	तृती	तृती	--	--
224.24	0.00	1.09	8.22	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.53	0.69	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	164.85	194.76	224.67	254.58	284.67	314.76	344.85	14.76	44.67	74.58	104.67	134.76
सूर्य	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
156.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त
318.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.11	0.00	1.46	1.40	1.34	0.00	9.11
मंगल	--	--	--	--	तृती	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--
230.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.50	8.52	0.64	0.00	8.47	8.42	0.00	0.00
बुध	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
168.90	9.11	0.00	1.34	0.00	1.34	0.00	9.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
9.68	0.00	8.62	0.00	8.71	0.00	0.00	0.00	8.62	0.00	0.85	0.78	8.62
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
117.97	0.00	0.00	0.00	0.00	1.78	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.78	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--
22.79	0.00	6.67	0.00	0.00	6.60	0.00	0.00	6.67	0.00	6.53	0.00	0.00
राहु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
108.20	1.91	1.86	1.81	0.00	9.32	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.32	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
288.20	0.00	0.00	0.00	0.00	9.32	0.00	1.91	1.86	0.00	0.00	9.32	0.00
हर्ष	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--
289.36	0.00	0.00	0.00	0.00	8.82	0.00	1.14	1.08	1.01	0.00	8.82	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
277.85	0.00	0.00	0.00	0.00	7.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
224.24	0.00	0.00	9.99	0.00	2.98	2.97	2.96	0.69	9.99	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	164.85	194.35	224.45	254.58	285.05	315.62	344.85	14.35	44.45	74.58	105.05	135.62
सूर्य	--	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
156.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.59	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त
318.82	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.44	0.00	1.17	1.24	1.34	0.00	9.44
मंगल	--	--	--	--	तृती	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--	--
230.03	0.00	0.00	0.00	0.00	0.79	8.95	0.64	0.00	8.34	8.42	0.00	0.00
बुध	युति	--	तृती	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--
168.90	9.11	0.00	1.18	0.00	1.60	0.00	9.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	सप्त	--	9वां	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	5वां
9.68	0.00	8.83	0.00	8.71	0.00	0.00	0.00	8.83	0.00	0.85	0.49	8.13
शुक्र	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
117.97	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.17	0.00
शनि	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--	3रा	--	--
22.79	0.00	6.35	0.00	0.00	6.90	0.00	0.00	6.35	0.00	6.53	0.00	0.00
राहु	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
108.20	1.91	1.60	1.66	0.00	9.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.46	0.00
केतु	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
288.20	0.00	0.00	0.00	0.00	9.46	0.00	1.91	1.60	0.00	0.00	9.46	0.00
हर्ष	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--
289.36	0.00	0.00	0.00	0.00	9.00	0.00	1.14	0.77	0.84	0.00	9.00	0.00
नेप	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--
277.85	0.00	0.00	0.00	0.00	7.29	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--
224.24	0.00	0.00	10.00	0.00	2.93	2.81	2.96	0.99	10.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

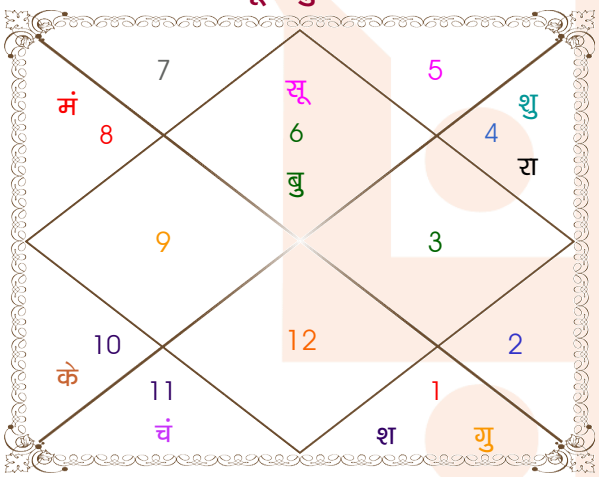

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

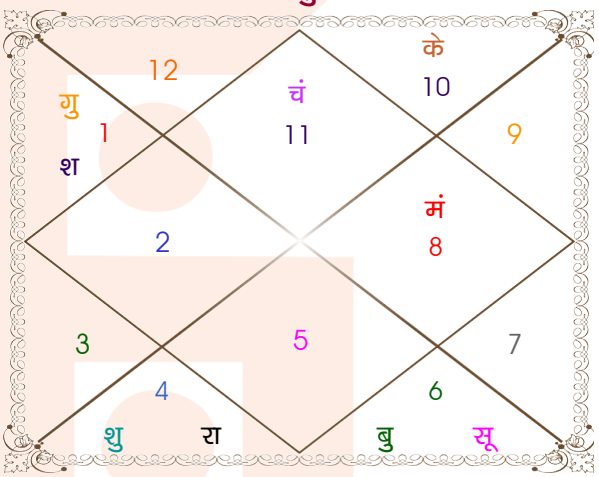

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

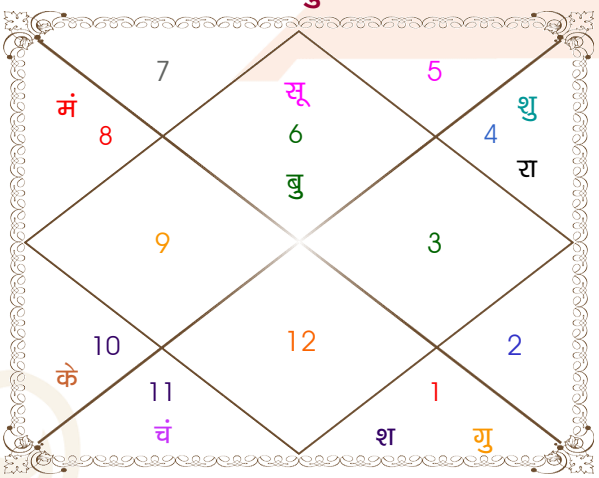

देह विचारः

होरा कुंडली

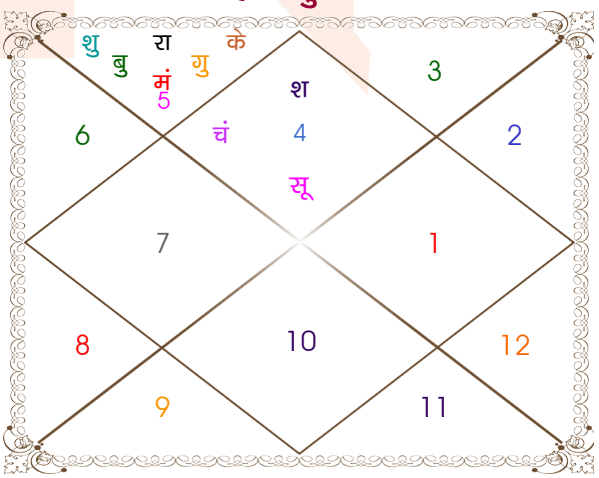

सम्पदाविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

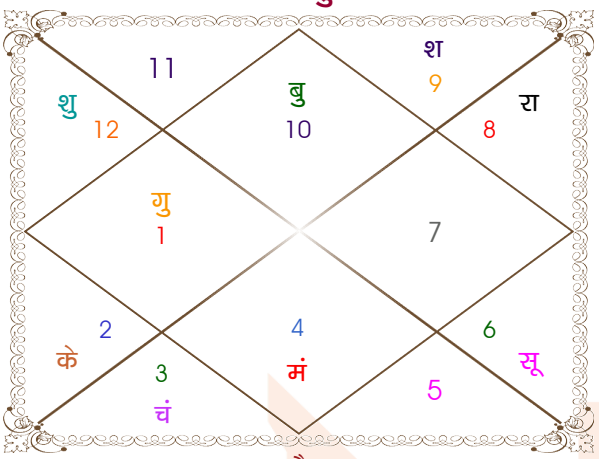

भातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

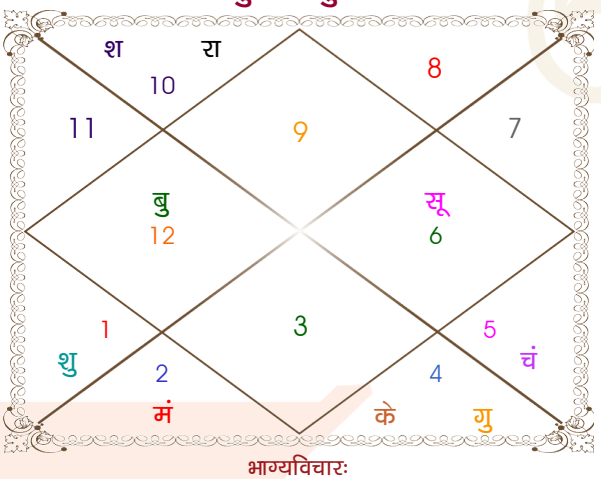

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

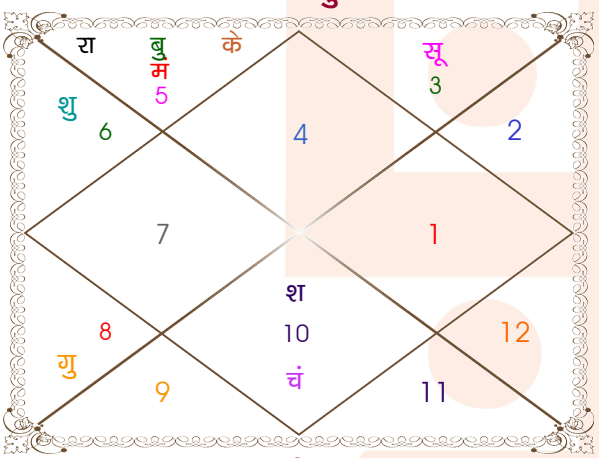

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

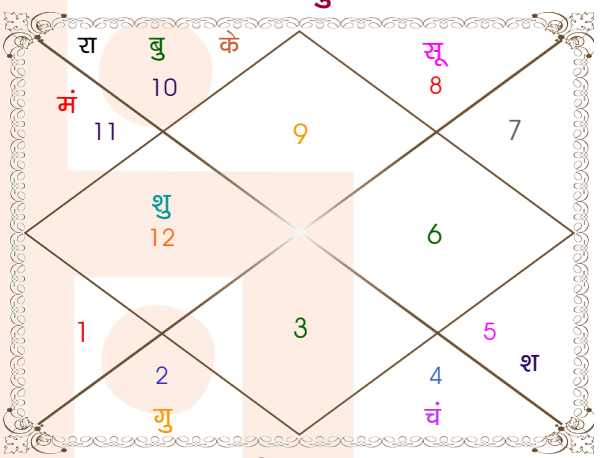

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

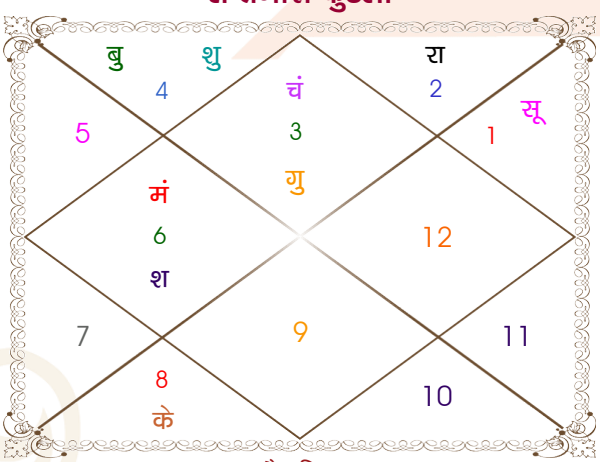

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

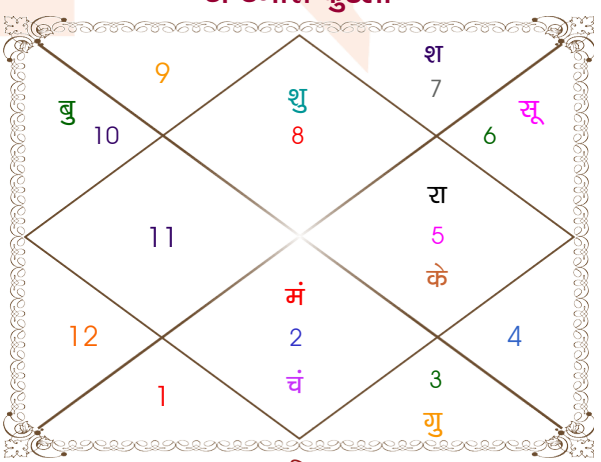

आयुविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

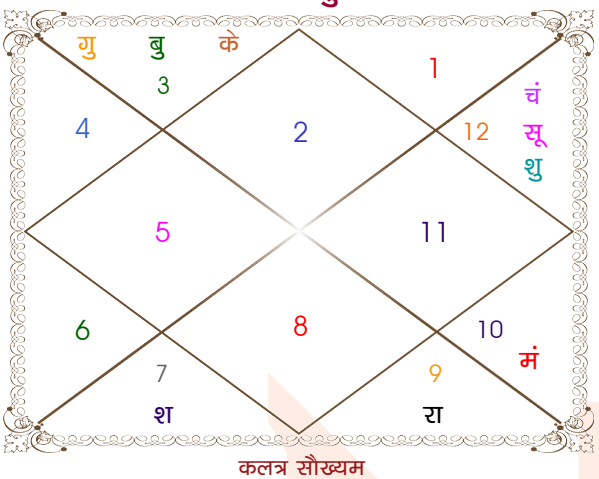

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

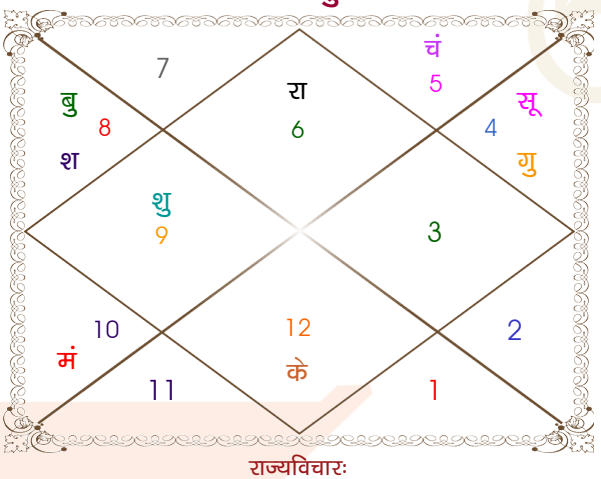

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

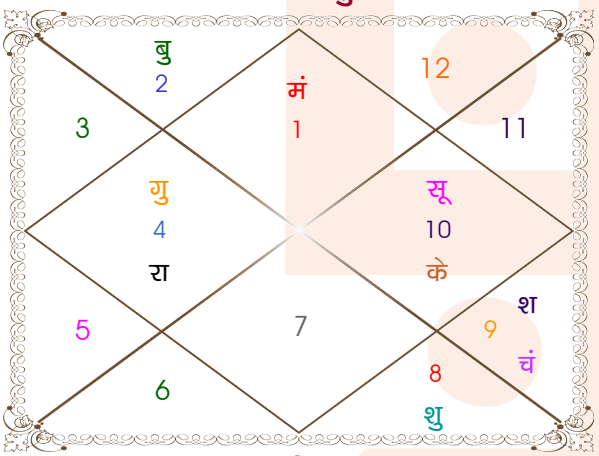

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

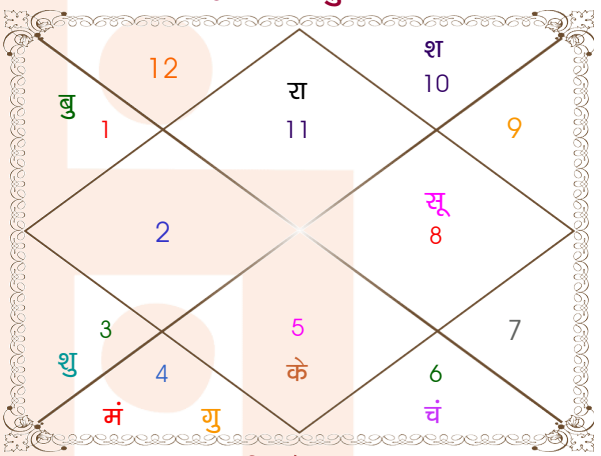

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

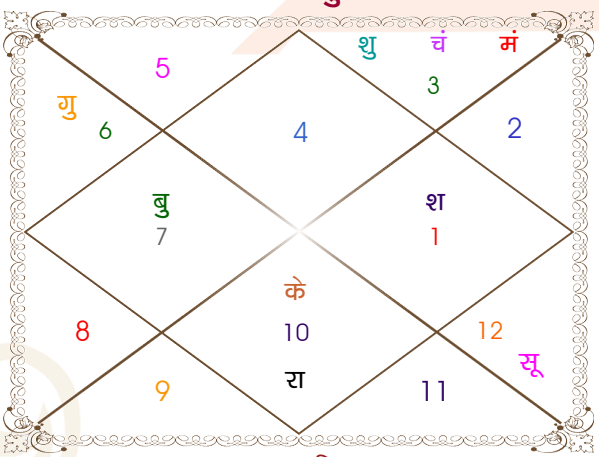

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

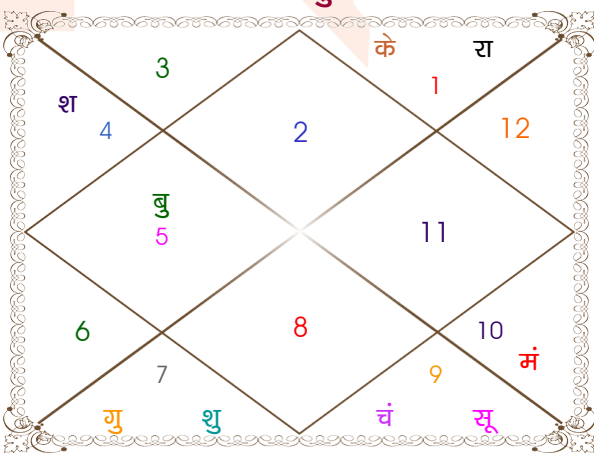

उपासनाज्ञानम्

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

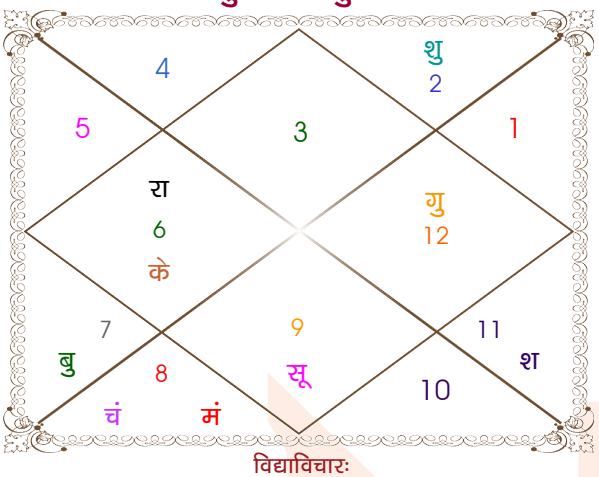

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

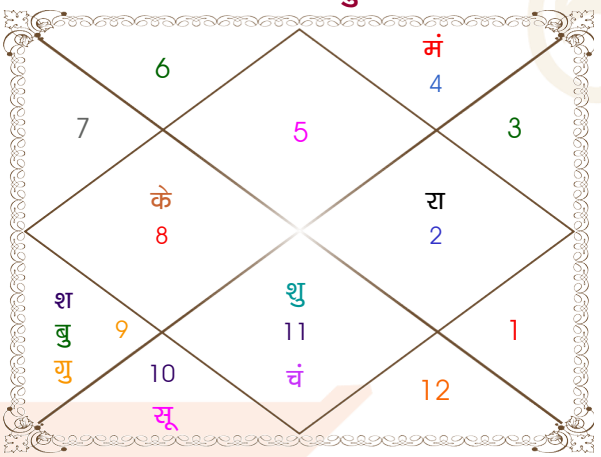

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

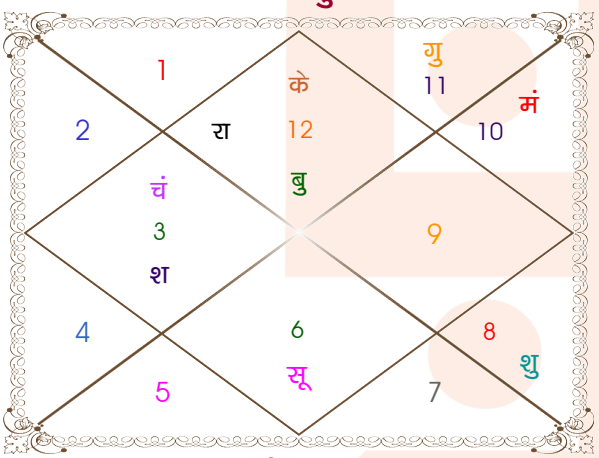

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

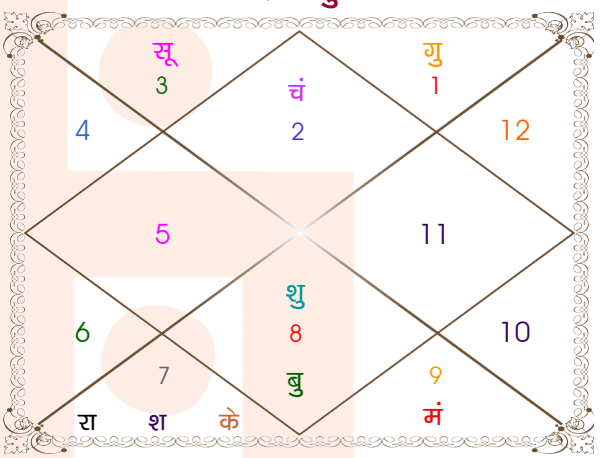

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

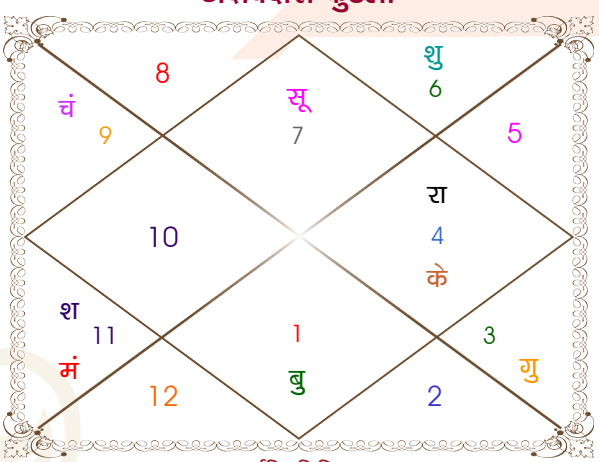

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

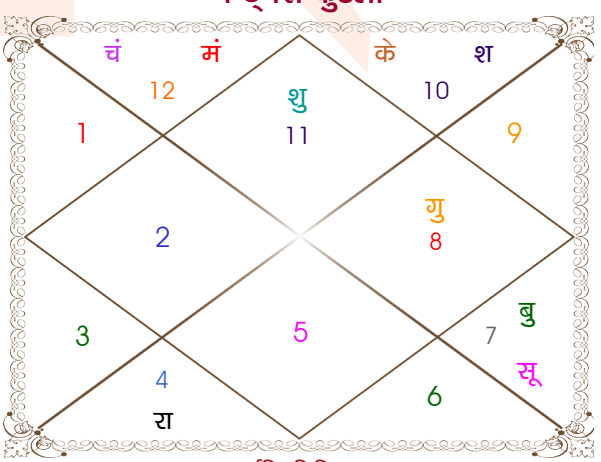

सर्वास्थितिविचारः

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	कन्या	कन्या	कुंभ	वृश्चि	कन्या	मेष	कर्क	मेष	कर्क	मक
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह	सिंह	कर्क	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मक	कन्या	मिथु	कर्क	मक	मेष	मीन	धनु	वृश्चि	वृष
चतुर्थांश	धनु	कन्या	सिंह	वृष	मीन	कर्क	मेष	मक	मक	कर्क
सप्तमांश	मिथु	मेष	मिथु	कन्या	कर्क	मिथु	कर्क	कन्या	वृष	वृश्चि
नवमांश	वृष	मीन	मीन	मक	मिथु	मिथु	मीन	तुला	धनु	मिथु
दशमांश	कन्या	कर्क	सिंह	मक	वृश्चि	कर्क	धनु	वृश्चि	कन्या	मीन
द्वादशांश	कुंभ	वृश्चि	कन्या	कर्क	मेष	कर्क	मिथु	मक	कुंभ	सिंह
षोडशांश	कर्क	मीन	मिथु	मिथु	तुला	कन्या	मिथु	मेष	मक	मक
विंशांश	वृष	धनु	धनु	मक	सिंह	तुला	तुला	कर्क	मेष	मेष
चतुर्विंशांश	मिथु	धनु	वृश्चि	वृश्चि	तुला	मीन	वृष	कुंभ	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	सिंह	मक	कुंभ	कर्क	धनु	धनु	कुंभ	धनु	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	मीन	कन्या	मिथु	मक	मीन	कुंभ	वृश्चि	मिथु	मीन	मीन
खवेदांश	वृष	मिथु	वृष	धनु	वृश्चि	मेष	वृश्चि	तुला	तुला	तुला
अक्षवेदांश	तुला	तुला	धनु	कुंभ	मेष	मिथु	कन्या	कुंभ	कर्क	कर्क
षष्ट्यंश	कुंभ	तुला	मीन	मीन	तुला	वृश्चि	कुंभ	मक	कर्क	मक

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	0 ---	1 ---	1 ---	1 ---
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	6 केरल
बुध	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	2 भेदक
गुरु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	5 कन्दुक
शुक्र	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प
शनि	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	7 कल्पवृक्ष
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
केतु	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	9.15	13.75	15.30	15.25	9.40	11.40	10.90	9.80	8.50
सप्तवर्ग	10.45	13.38	14.48	14.03	8.90	10.65	11.10	10.18	9.58
दशवर्ग	10.30	13.13	12.63	14.78	9.85	12.98	12.13	9.95	10.38
षोडशवर्ग	9.30	13.55	12.30	15.78	9.45	13.33	12.68	10.08	10.08

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	---	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	---	मित्र	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	---	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	अधिशत्रु	मित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	---	सम	शत्रु	मित्र	मित्र
शुक्र	सम	अधिशत्रु	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अतिमित्र	---	अतिमित्र	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	मित्र	मित्र	सम	अतिमित्र	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	सम	सम	अधिशत्रु	---

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	11	35	37	59	32	20	1
सप्तवर्गज बल	71	90	113	107	53	68	81
ओजयुग्मक बल	0	15	0	15	30	30	30
केन्द्र बल	60	15	15	60	30	30	30
द्रेष्काण बल	15	0	0	15	15	15	0
कुल स्थान बल	157	155	165	256	159	162	142
कुल दिग्बल	33	39	8	59	8	14	47
नतोन्नत बल	33	27	27	60	33	33	27
पक्ष बल	6	108	6	6	54	54	6
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	0	0	0	60	0
अयन बल	59	39	1	37	47	49	8
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	113	174	34	163	193	240	71
कुल चेष्टाबल	0	0	32	11	51	46	46
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	16	-16	-1	17	-17	-4	-12
कुल षट्बल	380	403	255	530	429	502	302
रूप षट्बल	6.3	6.7	4.3	8.8	7.1	8.4	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.3	1.1	0.9	1.3	1.1	1.5	1.0
संबंधित पद	2	4	7	3	5	1	6

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	18.18	43.66	34.38	24.91	40.01	30.01	6.52
कष्ट फल	38.43	12.15	25.34	8.01	16.25	23.96	28.97

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	530	502	255	429	302	302	429	255	502	530	403	380
भावदिग्बल	60	50	20	30	10	10	30	40	50	30	10	40
भावदृष्टि बल	22	61	51	83	40	-9	35	44	28	28	13	55
कुल भाव बल	612	614	326	542	352	303	494	340	580	588	426	475
रूप भाव बल	10.2	10.2	5.4	9.0	5.9	5.1	8.2	5.7	9.7	9.8	7.1	7.9
संबंधित पद	2	1	11	5	9	12	6	10	4	3	8	7

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

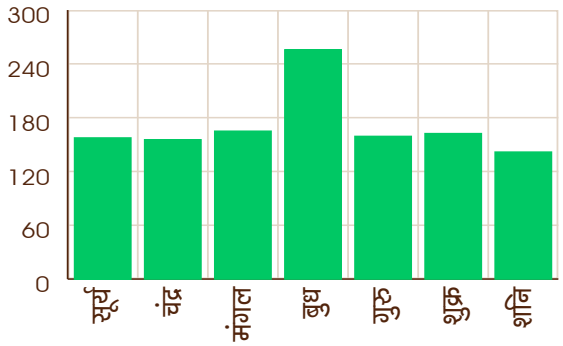

दिग्बल

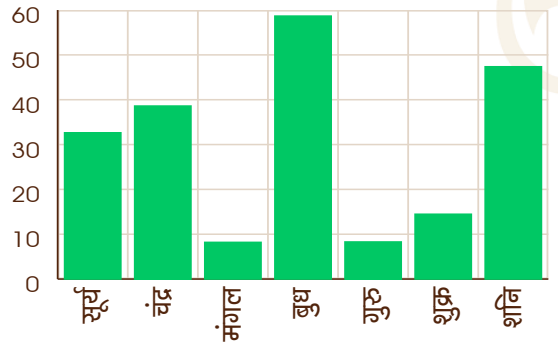

कालबल

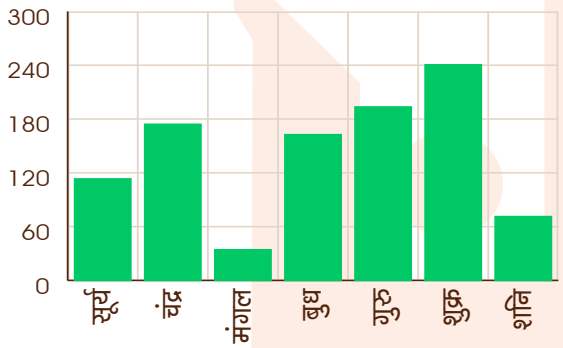

चेष्टाबल

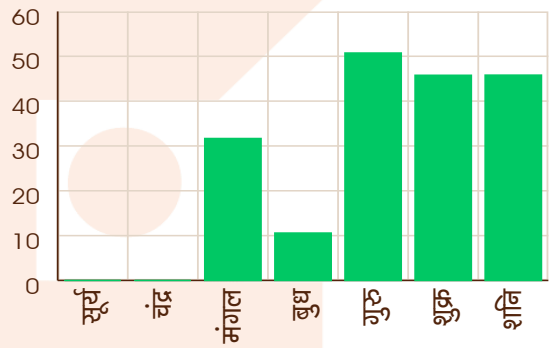

नैसर्गिक बल

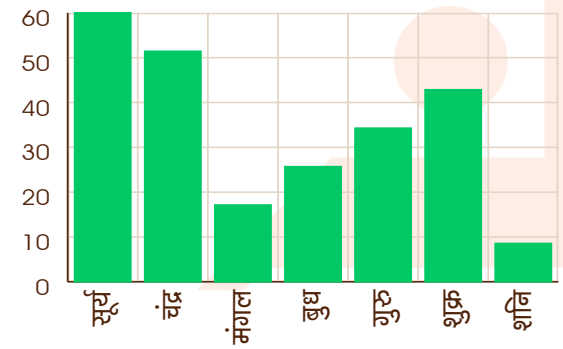

दृग्बल

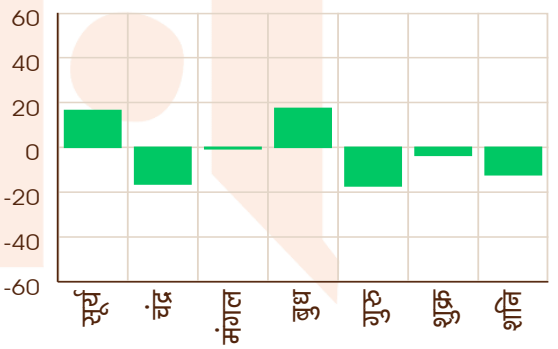

रूप षट्बल

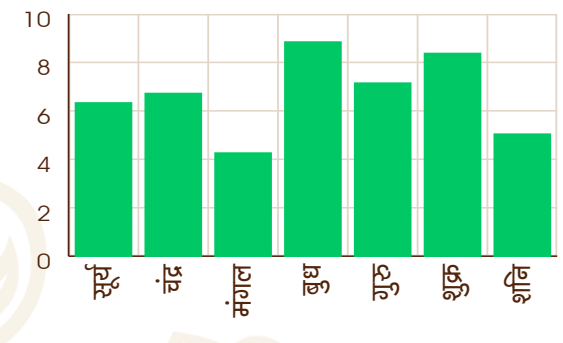

न्यूनतम षट्बल

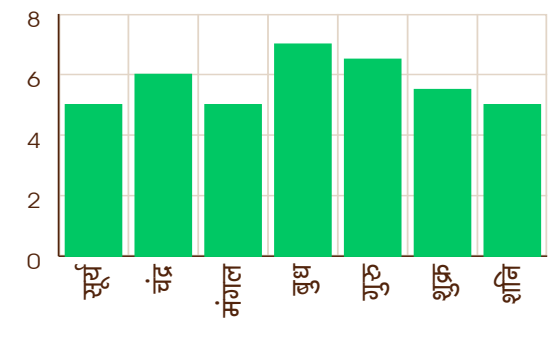

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

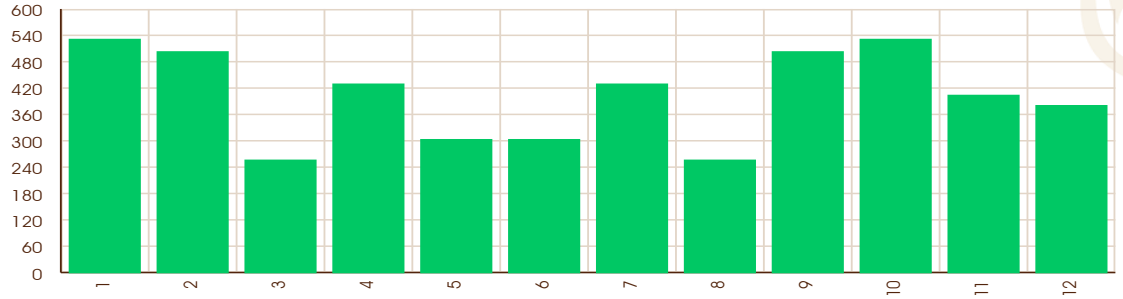

भावदिग्बल

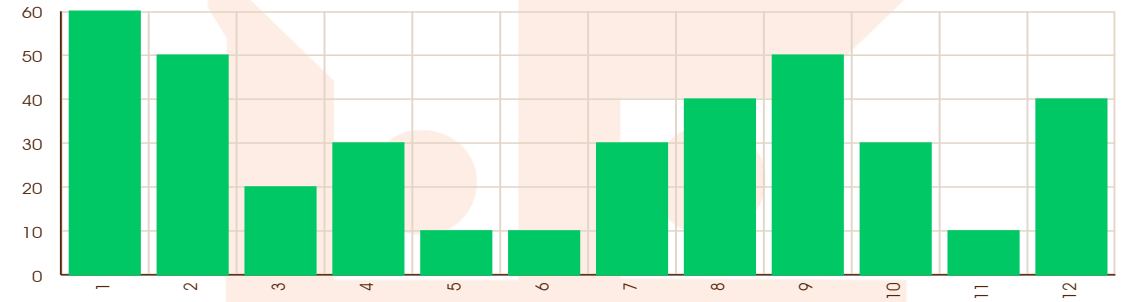

भावदृष्टि बल

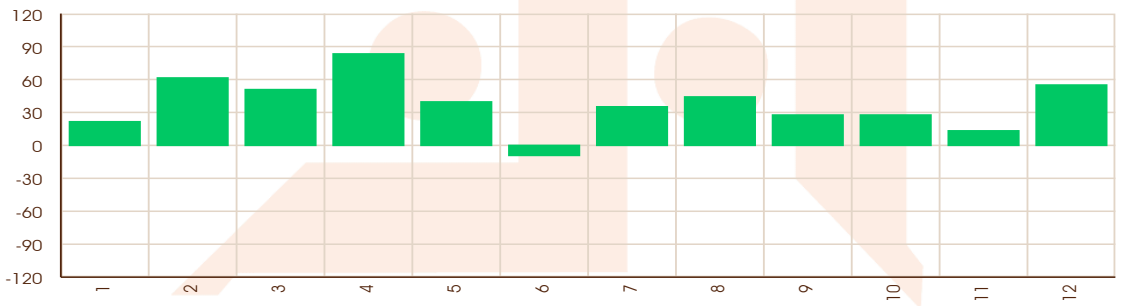

भाव बल

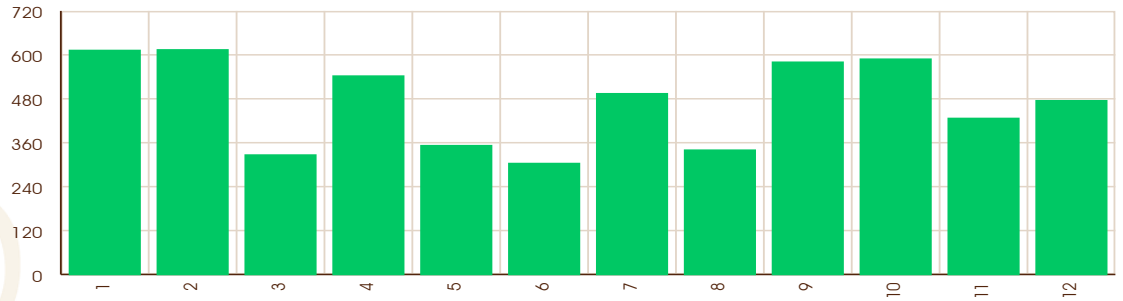

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

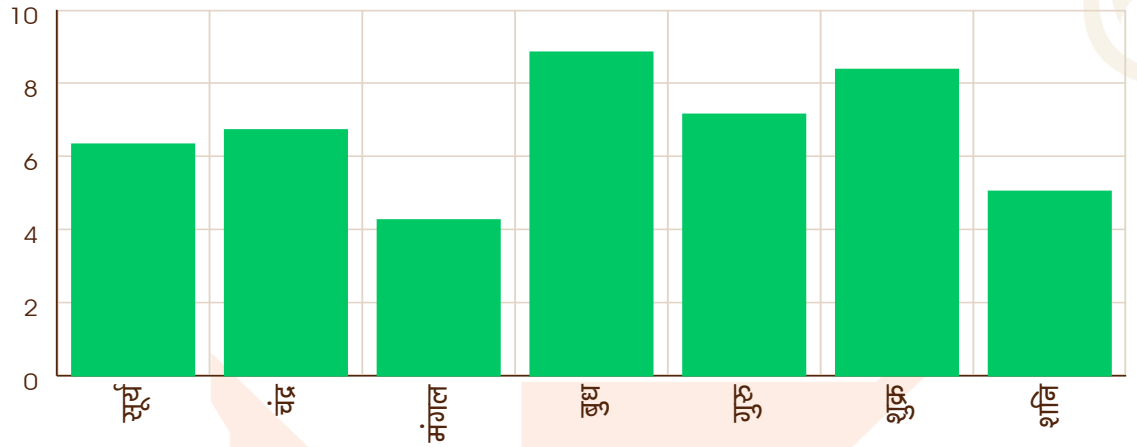

इष्ट - कष्ट फल

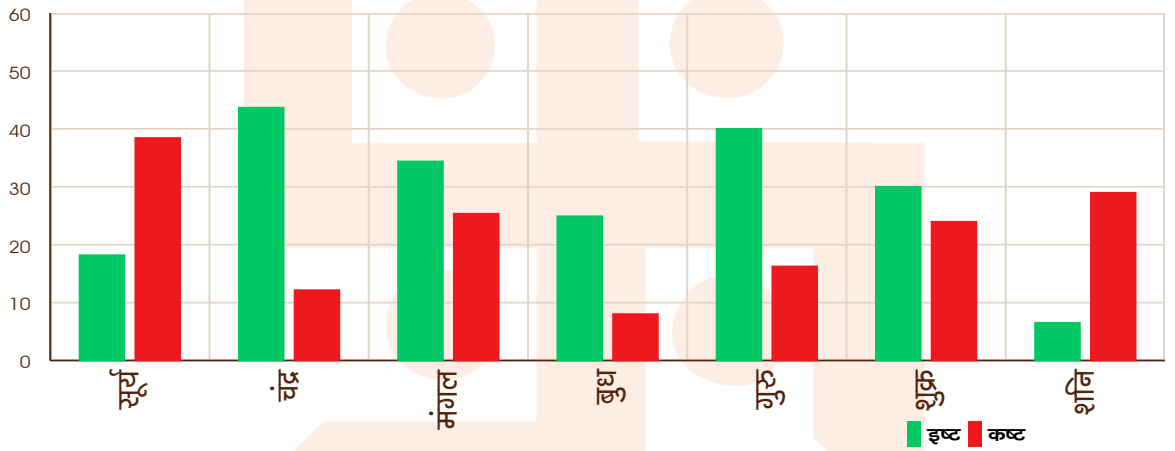

रूप भाव बल

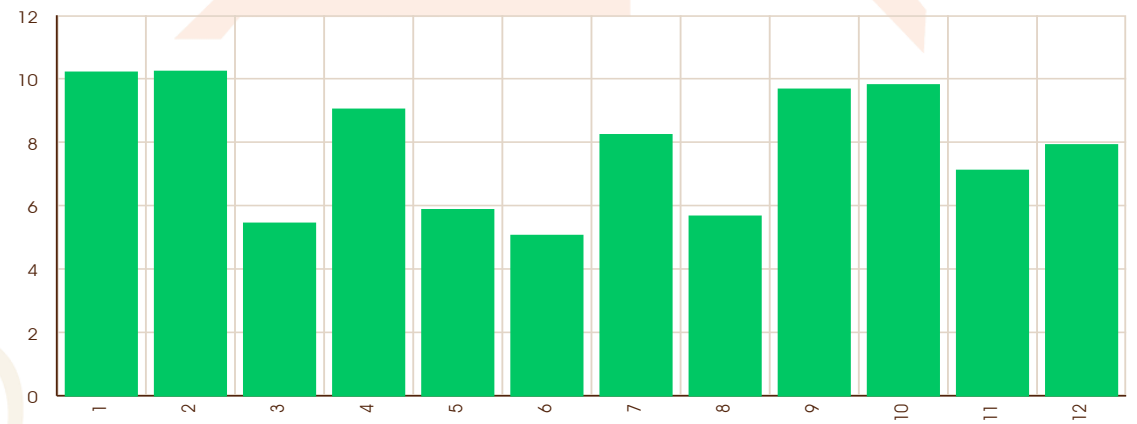

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	कन्या	14:50:47	--	--	हस्त	2	13
गुलिक	गु	तुला	18:32:30	--	--	स्वाति	4	15
काल	का	वृश्चि	08:41:02	--	--	अनुराधा	2	17
मृत्यु	मृ	धनु	20:18:36	--	--	पूर्वाषाढ़ा	3	20
यमघंटक	यम	कुंभ	09:32:19	--	--	शतभिषा	1	24
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मक	13:33:11	--	--	श्रवण	2	22
धूम	धू	मक	20:03:13	--	मूल	श्रवण	4	22
व्यतिपात	व्य	मिथु	09:56:47	--	मूल	आर्द्रा	1	6
परिवेश	परि	धनु	09:56:47	नीच	मूल	मूल	3	19
इन्द्रचाप	इ	कर्क	20:03:13	--	मूल	आश्लेषा	2	9
उपकेतु	उप	सिंह	06:43:13	नीच	--	मघा	3	10

प्राणपद	:	कर्क	15:03:42	कारकाँश लग्न	:	मीन	11:41:53
भाव लग्न	:	कन्या	24:15:49	होरा लग्न	:	तुला	03:40:50
घटी लग्न	:	तुला	23:48:20	वर्णद लग्न	:	मेष	11:28:22

उपग्रह कुंडली

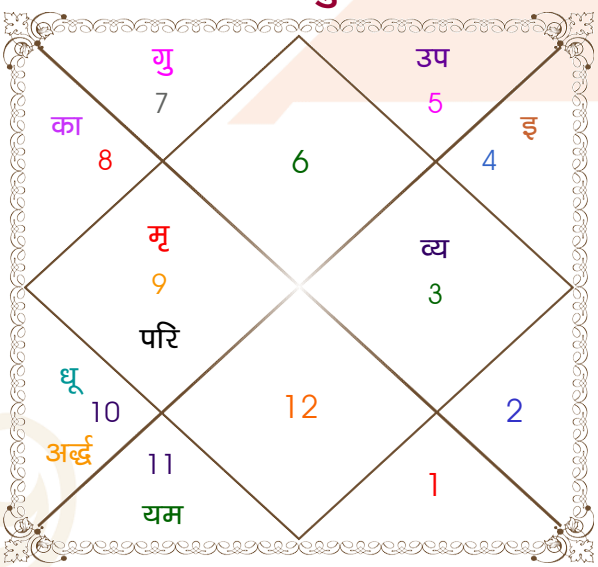

आरूढ़ कुंडली

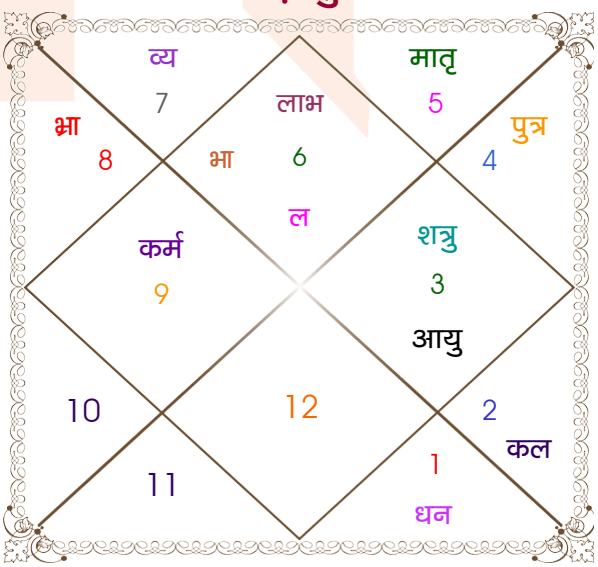

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

षन्नाडी चक्र

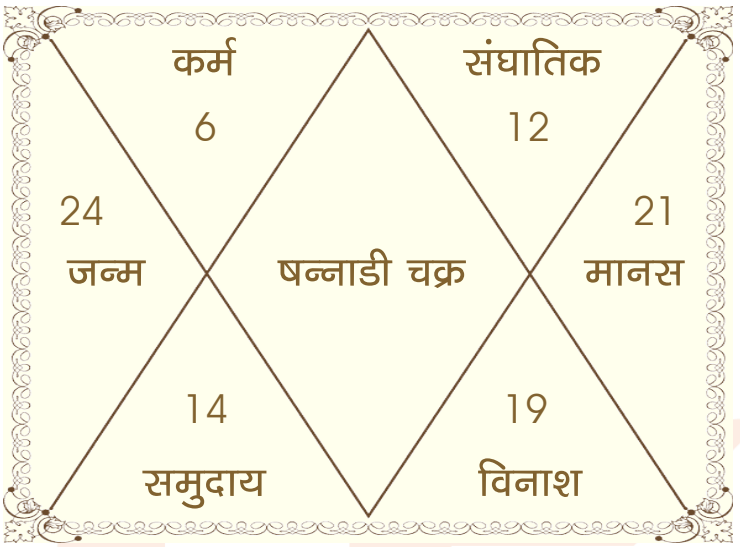

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
केतु कुंडली	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु
गुरु कुंडली	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
कुल	3	2	5	7	3	5	1	3	4	5	6	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	4
कुल	5	4	6	2	4	5	3	4	3	6	3	4	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	कुल
शनि	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	7
गुरु	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	5
कुल	5	4	4	7	1	2	2	4	5	1	3	1	39

बुध का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	8
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	0	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
लग्न	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
कुल	6	3	6	4	3	7	3	2	6	3	7	4	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
सूर्य	1	1	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	9
शुक्र	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	6
बुध	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	8
चंद्र	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
कुल	3	6	7	4	4	5	5	4	6	3	4	5	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	7
गुरु	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
मंगल	1	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
चंद्र	0	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	6	4	4	4	5	4	6	6	2	5	4	2	52

शनि का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	कं	सि	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	4
मंगल	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	6
सूर्य	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	3
बुध	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	6
चंद्र	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
कुल	4	2	5	4	4	5	2	1	4	1	4	3	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	कं	तु	वृशि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कं	सि	कुल
शनि	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	9
मंगल	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
सूर्य	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	7
चंद्र	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	5	3	5	4	4	6	1	5	1	4	7	4	49

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	4	2	5	4	4	5	2	1	4	1	4	3	39
गुरु	3	6	7	4	4	5	5	4	6	3	4	5	56
मंगल	2	2	4	5	1	3	1	5	4	4	7	1	39
सूर्य	3	4	5	6	4	3	2	5	7	3	5	1	48
शुक्र	5	4	2	6	4	4	4	5	4	6	6	2	52
बुध	2	6	3	7	4	6	3	6	4	3	7	3	54
चंद्र	6	2	4	5	3	4	3	6	3	4	5	4	49
बिन्दु	25	26	30	37	24	30	20	32	32	24	38	19	337
रेखा	31	30	26	19	32	26	36	24	24	32	18	37	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	3	3	0	4	0	0	0	0	2	2	15
गुरु	0	3	3	0	1	2	1	0	3	0	0	1	14
मंगल	1	0	3	4	0	1	0	4	3	2	6	0	24
सूर्य	0	1	3	5	1	0	0	4	4	0	3	0	21
शुक्र	1	0	0	4	0	0	2	3	0	2	4	0	16
बुध	0	3	0	4	2	3	0	3	2	0	4	0	21
चंद्र	3	0	1	1	0	2	0	2	0	2	2	0	13
रेखा	5	8	13	21	4	12	3	16	12	6	21	3	124

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	0	3	0	4	0	0	0	0	2	2	12
गुरु	0	2	1	0	1	2	1	0	2	0	0	1	10
मंगल	1	0	2	4	0	1	0	4	3	0	6	0	21
सूर्य	0	1	3	5	1	0	0	4	4	0	3	0	21
शुक्र	1	0	0	4	0	0	2	3	0	0	4	0	14
बुध	0	3	0	4	2	3	0	3	2	0	4	0	21
चंद्र	3	0	0	1	0	2	0	2	0	0	2	0	10
रेखा	5	7	6	21	4	12	3	16	11	0	21	3	109

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	165	73	169	167	85	105	88
ग्रह पिंड	82	98	115	102	20	87	71
शोध्य पिंड	247	171	284	269	105	192	159

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

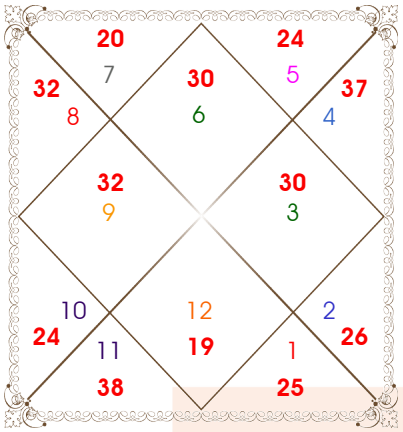

सूर्य का अष्टकवर्ग

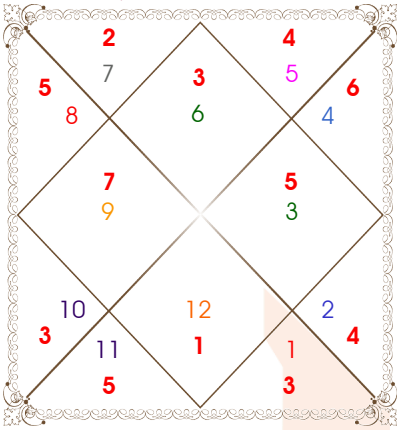

चंद्र का अष्टकवर्ग

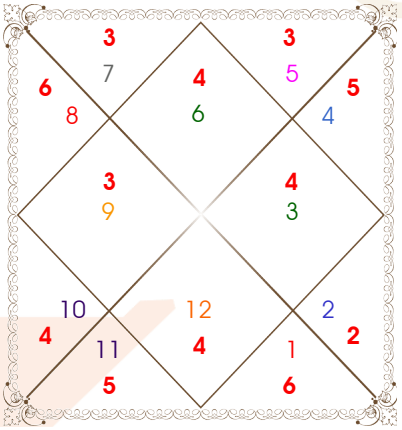

मंगल का अष्टकवर्ग

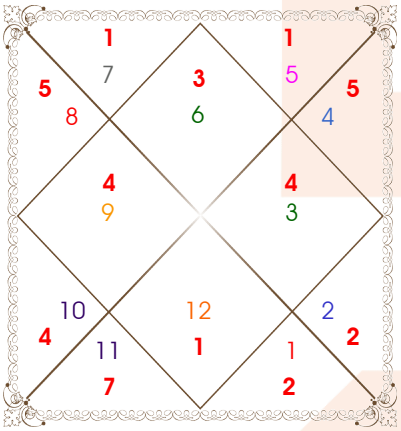

बुध का अष्टकवर्ग

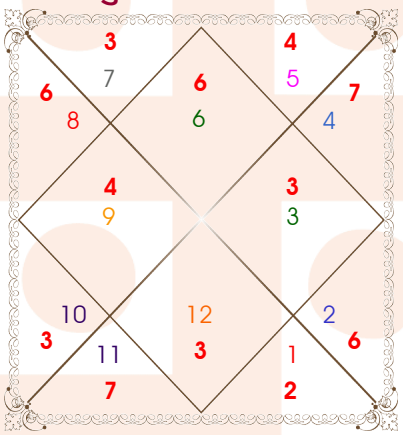

गुरू का अष्टकवर्ग

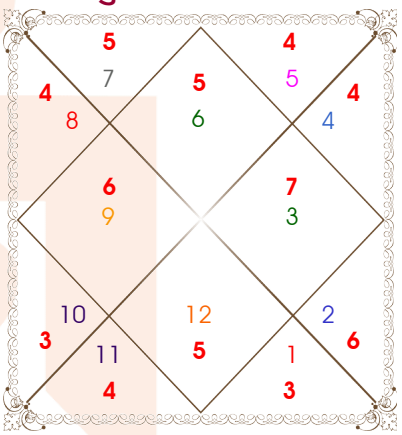

शुक्र का अष्टकवर्ग

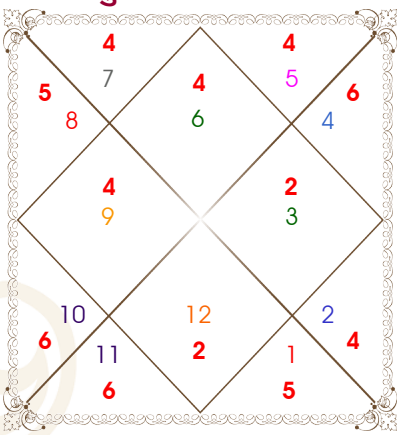

शनि का अष्टकवर्ग

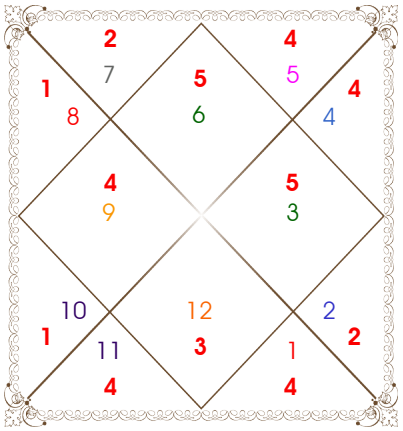

लग्न का अष्टकवर्ग

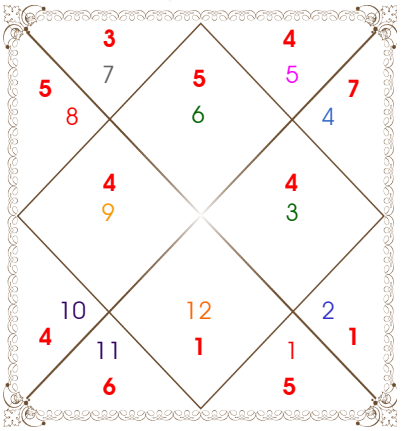

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

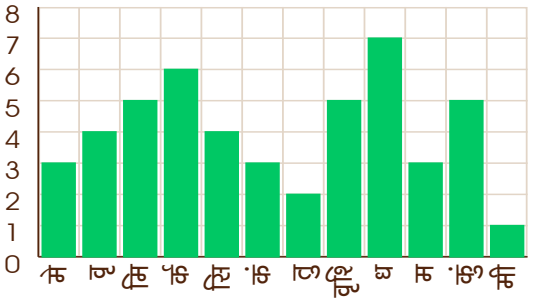

चन्द्र

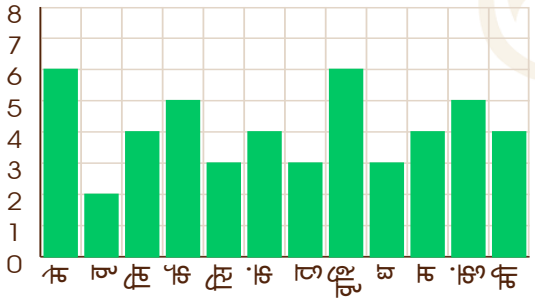

मंगल

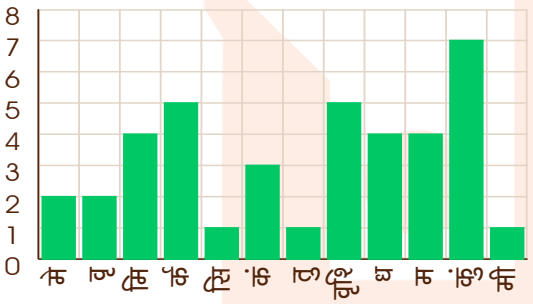

बुध

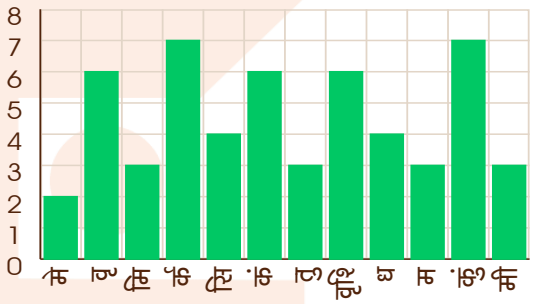

गुरु

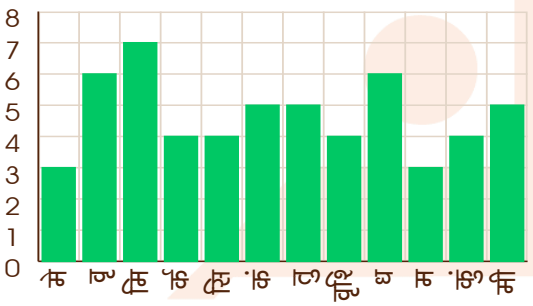

शुक्र

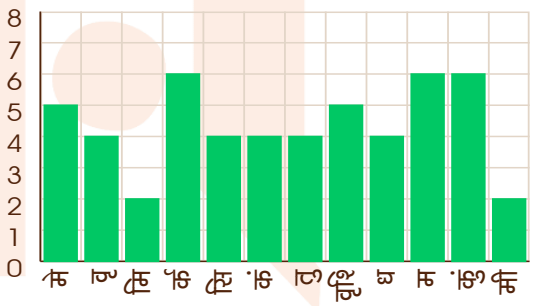

शनि

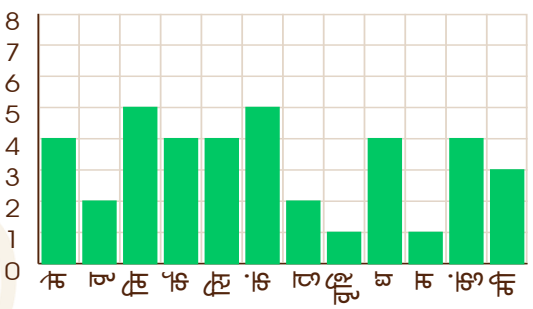

लग्न

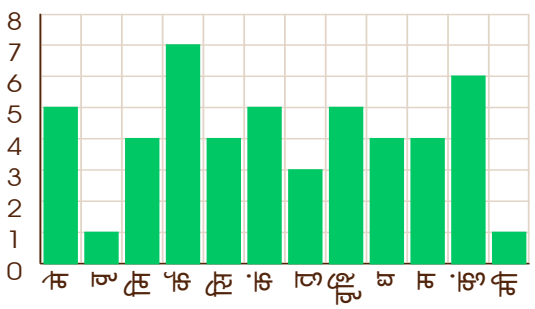

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

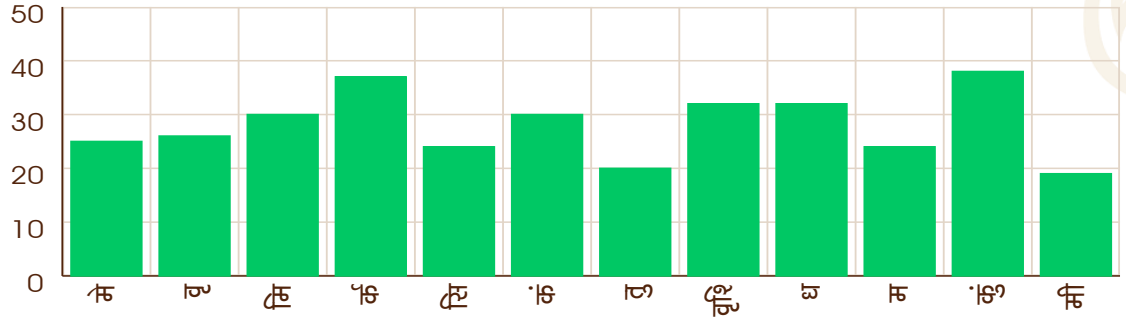

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

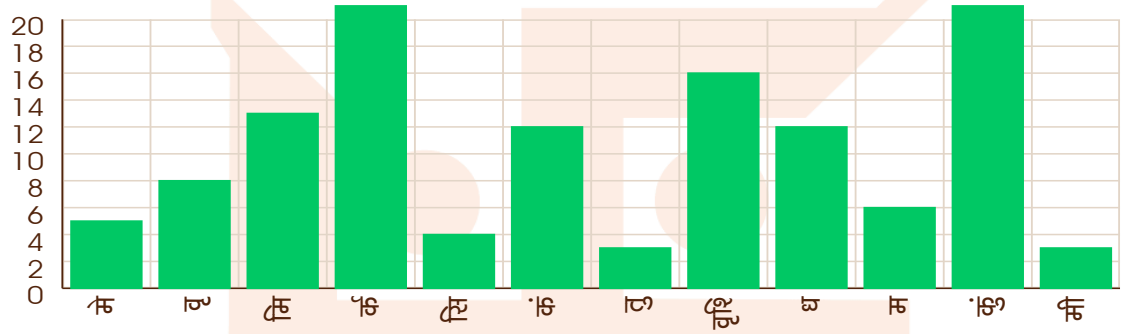

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

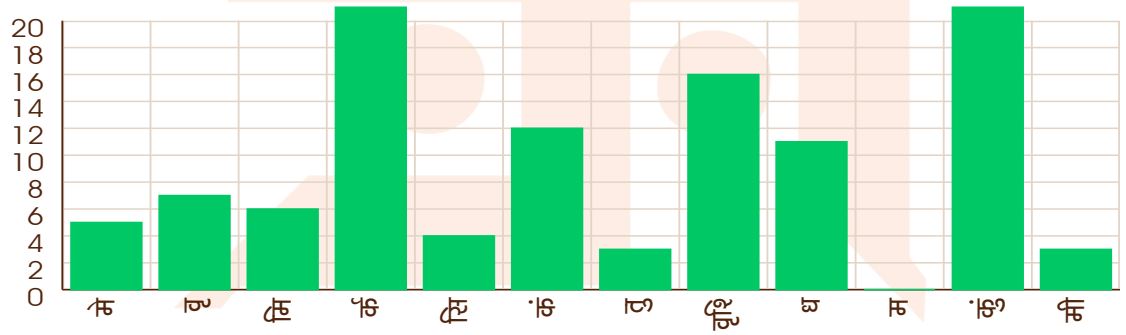

शोध्य पिंड

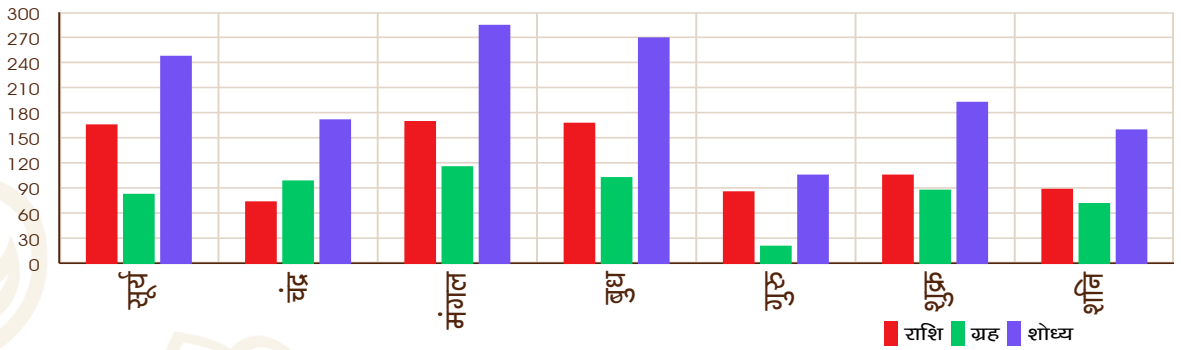

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 1 वर्ष 7 मास 3 दिन

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
24/09/1999		28/04/2001		28/04/2017		28/04/2036		28/04/2053	
28/04/2001		28/04/2017		28/04/2036		28/04/2053		28/04/2060	
	00/00/0000	गुरु	16/06/2003	शनि	01/05/2020	बुध	24/09/2038	केतु	24/09/2053
	00/00/0000	शनि	27/12/2005	बुध	09/01/2023	केतु	21/09/2039	शुक्र	24/11/2054
	00/00/0000	बुध	03/04/2008	केतु	18/02/2024	शुक्र	22/07/2042	सूर्य	01/04/2055
	00/00/0000	केतु	10/03/2009	शुक्र	19/04/2027	सूर्य	29/05/2043	चंद्र	31/10/2055
	00/00/0000	शुक्र	09/11/2011	सूर्य	31/03/2028	चंद्र	27/10/2044	मंगल	28/03/2056
	00/00/0000	सूर्य	27/08/2012	चंद्र	30/10/2029	मंगल	24/10/2045	राहु	16/04/2057
	24/09/1999	चंद्र	27/12/2013	मंगल	09/12/2030	राहु	13/05/2048	गुरु	23/03/2058
चंद्र	09/04/2000	मंगल	03/12/2014	राहु	15/10/2033	गुरु	19/08/2050	शनि	01/05/2059
मंगल	28/04/2001	राहु	28/04/2017	गुरु	28/04/2036	शनि	28/04/2053	बुध	28/04/2060

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
28/04/2060		28/04/2080		28/04/2086		28/04/2096		29/04/2103	
28/04/2080		28/04/2086		28/04/2096		29/04/2103		00/00/0000	
शुक्र	28/08/2063	सूर्य	15/08/2080	चंद्र	26/02/2087	मंगल	24/09/2096	राहु	09/01/2106
सूर्य	27/08/2064	चंद्र	14/02/2081	मंगल	27/09/2087	राहु	12/10/2097	गुरु	04/06/2108
चंद्र	28/04/2066	मंगल	22/06/2081	राहु	28/03/2089	गुरु	18/09/2098	शनि	11/04/2111
मंगल	28/06/2067	राहु	16/05/2082	गुरु	28/07/2090	शनि	28/10/2099	बुध	28/10/2113
राहु	28/06/2070	गुरु	04/03/2083	शनि	27/02/2092	बुध	25/10/2100	केतु	16/11/2114
गुरु	26/02/2073	शनि	14/02/2084	बुध	28/07/2093	केतु	23/03/2101	शुक्र	16/11/2117
शनि	28/04/2076	बुध	21/12/2084	केतु	26/02/2094	शुक्र	23/05/2102	सूर्य	10/10/2118
बुध	26/02/2079	केतु	28/04/2085	शुक्र	28/10/2095	सूर्य	28/09/2102	चंद्र	25/09/2119
केतु	28/04/2080	शुक्र	28/04/2086	सूर्य	28/04/2096	चंद्र	29/04/2103		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 1 वर्ष 6 मा 26 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
24/09/1999		09/04/2000		28/04/2001		16/06/2003		27/12/2005	
09/04/2000		28/04/2001		16/06/2003		27/12/2005		03/04/2008	
	00/00/0000	मंगल	02/05/2000	गुरु	10/08/2001	शनि	09/11/2003	बुध	24/04/2006
	00/00/0000	राहु	28/06/2000	शनि	11/12/2001	बुध	20/03/2004	केतु	11/06/2006
	00/00/0000	गुरु	18/08/2000	बुध	31/03/2002	केतु	13/05/2004	शुक्र	27/10/2006
	00/00/0000	शनि	18/10/2000	केतु	16/05/2002	शुक्र	14/10/2004	सूर्य	07/12/2006
	24/09/1999	बुध	11/12/2000	शुक्र	23/09/2002	सूर्य	29/11/2004	चंद्र	14/02/2007
बुध	11/11/1999	केतु	03/01/2001	सूर्य	01/11/2002	चंद्र	14/02/2005	मंगल	04/04/2007
केतु	13/12/1999	शुक्र	08/03/2001	चंद्र	05/01/2003	मंगल	09/04/2005	राहु	06/08/2007
शुक्र	13/03/2000	सूर्य	27/03/2001	मंगल	19/02/2003	राहु	26/08/2005	गुरु	24/11/2007
सूर्य	09/04/2000	चंद्र	28/04/2001	राहु	16/06/2003	गुरु	27/12/2005	शनि	03/04/2008

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
03/04/2008		10/03/2009		09/11/2011		27/08/2012		27/12/2013	
10/03/2009		09/11/2011		27/08/2012		27/12/2013		03/12/2014	
केतु	23/04/2008	शुक्र	19/08/2009	सूर्य	24/11/2011	चंद्र	07/10/2012	मंगल	16/01/2014
शुक्र	19/06/2008	सूर्य	07/10/2009	चंद्र	18/12/2011	मंगल	04/11/2012	राहु	08/03/2014
सूर्य	06/07/2008	चंद्र	27/12/2009	मंगल	04/01/2012	राहु	16/01/2013	गुरु	23/04/2014
चंद्र	03/08/2008	मंगल	22/02/2010	राहु	17/02/2012	गुरु	22/03/2013	शनि	16/06/2014
मंगल	23/08/2008	राहु	18/07/2010	गुरु	27/03/2012	शनि	07/06/2013	बुध	03/08/2014
राहु	13/10/2008	गुरु	25/11/2010	शनि	12/05/2012	बुध	15/08/2013	केतु	23/08/2014
गुरु	28/11/2008	शनि	28/04/2011	बुध	23/06/2012	केतु	13/09/2013	शुक्र	19/10/2014
शनि	21/01/2009	बुध	13/09/2011	केतु	10/07/2012	शुक्र	03/12/2013	सूर्य	05/11/2014
बुध	10/03/2009	केतु	09/11/2011	शुक्र	27/08/2012	सूर्य	27/12/2013	चंद्र	03/12/2014

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
03/12/2014		28/04/2017		01/05/2020		09/01/2023		18/02/2024	
28/04/2017		01/05/2020		09/01/2023		18/02/2024		19/04/2027	
राहु	14/04/2015	शनि	19/10/2017	बुध	17/09/2020	केतु	01/02/2023	शुक्र	28/08/2024
गुरु	09/08/2015	बुध	23/03/2018	केतु	13/11/2020	शुक्र	10/04/2023	सूर्य	25/10/2024
शनि	25/12/2015	केतु	27/05/2018	शुक्र	26/04/2021	सूर्य	30/04/2023	चंद्र	30/01/2025
बुध	28/04/2016	शुक्र	26/11/2018	सूर्य	14/06/2021	चंद्र	03/06/2023	मंगल	07/04/2025
केतु	18/06/2016	सूर्य	20/01/2019	चंद्र	04/09/2021	मंगल	26/06/2023	राहु	27/09/2025
शुक्र	11/11/2016	चंद्र	21/04/2019	मंगल	31/10/2021	राहु	26/08/2023	गुरु	01/03/2026
सूर्य	25/12/2016	मंगल	24/06/2019	राहु	28/03/2022	गुरु	19/10/2023	शनि	31/08/2026
चंद्र	08/03/2017	राहु	06/12/2019	गुरु	06/08/2022	शनि	22/12/2023	बुध	11/02/2027
मंगल	28/04/2017	गुरु	01/05/2020	शनि	09/01/2023	बुध	18/02/2024	केतु	19/04/2027

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
19/04/2027		31/03/2028		30/10/2029		09/12/2030		15/10/2033	
31/03/2028		30/10/2029		09/12/2030		15/10/2033		28/04/2036	
सूर्य	07/05/2027	चंद्र	18/05/2028	मंगल	23/11/2029	राहु	14/05/2031	गुरु	16/02/2034
चंद्र	04/06/2027	मंगल	21/06/2028	राहु	23/01/2030	गुरु	30/09/2031	शनि	12/07/2034
मंगल	25/06/2027	राहु	16/09/2028	गुरु	18/03/2030	शनि	13/03/2032	बुध	20/11/2034
राहु	16/08/2027	गुरु	02/12/2028	शनि	21/05/2030	बुध	08/08/2032	केतु	13/01/2035
गुरु	01/10/2027	शनि	03/03/2029	बुध	17/07/2030	केतु	07/10/2032	शुक्र	16/06/2035
शनि	25/11/2027	बुध	24/05/2029	केतु	10/08/2030	शुक्र	30/03/2033	सूर्य	02/08/2035
बुध	13/01/2028	केतु	27/06/2029	शुक्र	16/10/2030	सूर्य	21/05/2033	चंद्र	18/10/2035
केतु	02/02/2028	शुक्र	02/10/2029	सूर्य	06/11/2030	चंद्र	16/08/2033	मंगल	11/12/2035
शुक्र	31/03/2028	सूर्य	30/10/2029	चंद्र	09/12/2030	मंगल	15/10/2033	राहु	28/04/2036

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
28/04/2036		24/09/2038		21/09/2039		22/07/2042		29/05/2043	
24/09/2038		21/09/2039		22/07/2042		29/05/2043		27/10/2044	
बुध	30/08/2036	केतु	15/10/2038	शुक्र	12/03/2040	सूर्य	07/08/2042	चंद्र	11/07/2043
केतु	20/10/2036	शुक्र	15/12/2038	सूर्य	03/05/2040	चंद्र	02/09/2042	मंगल	10/08/2043
शुक्र	16/03/2037	सूर्य	02/01/2039	चंद्र	28/07/2040	मंगल	20/09/2042	राहु	27/10/2043
सूर्य	29/04/2037	चंद्र	01/02/2039	मंगल	26/09/2040	राहु	05/11/2042	गुरु	04/01/2044
चंद्र	11/07/2037	मंगल	22/02/2039	राहु	28/02/2041	गुरु	17/12/2042	शनि	26/03/2044
मंगल	01/09/2037	राहु	17/04/2039	गुरु	16/07/2041	शनि	04/02/2043	बुध	07/06/2044
राहु	11/01/2038	गुरु	05/06/2039	शनि	27/12/2041	बुध	20/03/2043	केतु	07/07/2044
गुरु	08/05/2038	शनि	01/08/2039	बुध	23/05/2042	केतु	07/04/2043	शुक्र	01/10/2044
शनि	24/09/2038	बुध	21/09/2039	केतु	22/07/2042	शुक्र	29/05/2043	सूर्य	27/10/2044

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
27/10/2044		24/10/2045		13/05/2048		19/08/2050		28/04/2053	
24/10/2045		13/05/2048		19/08/2050		28/04/2053		24/09/2053	
मंगल	17/11/2044	राहु	13/03/2046	गुरु	31/08/2048	शनि	21/01/2051	केतु	06/05/2053
राहु	11/01/2045	गुरु	15/07/2046	शनि	09/01/2049	बुध	10/06/2051	शुक्र	31/05/2053
गुरु	28/02/2045	शनि	10/12/2046	बुध	07/05/2049	केतु	06/08/2051	सूर्य	08/06/2053
शनि	26/04/2045	बुध	21/04/2047	केतु	24/06/2049	शुक्र	17/01/2052	चंद्र	20/06/2053
बुध	17/06/2045	केतु	14/06/2047	शुक्र	09/11/2049	सूर्य	06/03/2052	मंगल	29/06/2053
केतु	08/07/2045	शुक्र	16/11/2047	सूर्य	20/12/2049	चंद्र	27/05/2052	राहु	21/07/2053
शुक्र	06/09/2045	सूर्य	02/01/2048	चंद्र	27/02/2050	मंगल	23/07/2052	गुरु	10/08/2053
सूर्य	24/09/2045	चंद्र	19/03/2048	मंगल	16/04/2050	राहु	18/12/2052	शनि	03/09/2053
चंद्र	24/10/2045	मंगल	13/05/2048	राहु	19/08/2050	गुरु	28/04/2053	बुध	24/09/2053

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
24/09/2053		24/11/2054		01/04/2055		31/10/2055		28/03/2056	
24/11/2054		01/04/2055		31/10/2055		28/03/2056		16/04/2057	
शुक्र	04/12/2053	सूर्य	30/11/2054	चंद्र	19/04/2055	मंगल	09/11/2055	राहु	25/05/2056
सूर्य	25/12/2053	चंद्र	11/12/2054	मंगल	01/05/2055	राहु	01/12/2055	गुरु	15/07/2056
चंद्र	30/01/2054	मंगल	19/12/2054	राहु	02/06/2055	गुरु	21/12/2055	शनि	13/09/2056
मंगल	24/02/2054	राहु	07/01/2055	गुरु	30/06/2055	शनि	14/01/2056	बुध	07/11/2056
राहु	29/04/2054	गुरु	24/01/2055	शनि	03/08/2055	बुध	04/02/2056	केतु	29/11/2056
गुरु	24/06/2054	शनि	13/02/2055	बुध	02/09/2055	केतु	12/02/2056	शुक्र	01/02/2057
शनि	31/08/2054	बुध	03/03/2055	केतु	15/09/2055	शुक्र	08/03/2056	सूर्य	20/02/2057
बुध	30/10/2054	केतु	11/03/2055	शुक्र	20/10/2055	सूर्य	16/03/2056	चंद्र	24/03/2057
केतु	24/11/2054	शुक्र	01/04/2055	सूर्य	31/10/2055	चंद्र	28/03/2056	मंगल	16/04/2057

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
16/04/2057		23/03/2058		01/05/2059		28/04/2060		28/08/2063	
23/03/2058		01/05/2059		28/04/2060		28/08/2063		27/08/2064	
गुरु	31/05/2057	शनि	26/05/2058	बुध	22/06/2059	शुक्र	16/11/2060	सूर्य	15/09/2063
शनि	24/07/2057	बुध	22/07/2058	केतु	13/07/2059	सूर्य	16/01/2061	चंद्र	16/10/2063
बुध	10/09/2057	केतु	15/08/2058	शुक्र	11/09/2059	चंद्र	28/04/2061	मंगल	06/11/2063
केतु	30/09/2057	शुक्र	21/10/2058	सूर्य	29/09/2059	मंगल	08/07/2061	राहु	31/12/2063
शुक्र	26/11/2057	सूर्य	10/11/2058	चंद्र	29/10/2059	राहु	06/01/2062	गुरु	18/02/2064
सूर्य	13/12/2057	चंद्र	14/12/2058	मंगल	20/11/2059	गुरु	18/06/2062	शनि	15/04/2064
चंद्र	10/01/2058	मंगल	07/01/2059	राहु	13/01/2060	शनि	28/12/2062	बुध	06/06/2064
मंगल	30/01/2058	राहु	08/03/2059	गुरु	01/03/2060	बुध	18/06/2063	केतु	27/06/2064
राहु	23/03/2058	गुरु	01/05/2059	शनि	28/04/2060	केतु	28/08/2063	शुक्र	27/08/2064

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
27/08/2064		28/04/2066		28/06/2067		28/06/2070		26/02/2073	
28/04/2066		28/06/2067		28/06/2070		26/02/2073		28/04/2076	
चंद्र	17/10/2064	मंगल	23/05/2066	राहु	10/12/2067	गुरु	05/11/2070	शनि	28/08/2073
मंगल	22/11/2064	राहु	26/07/2066	गुरु	04/05/2068	शनि	08/04/2071	बुध	08/02/2074
राहु	21/02/2065	गुरु	21/09/2066	शनि	24/10/2068	बुध	24/08/2071	केतु	16/04/2074
गुरु	13/05/2065	शनि	27/11/2066	बुध	28/03/2069	केतु	20/10/2071	शुक्र	26/10/2074
शनि	17/08/2065	बुध	26/01/2067	केतु	31/05/2069	शुक्र	30/03/2072	सूर्य	23/12/2074
बुध	12/11/2065	केतु	20/02/2067	शुक्र	30/11/2069	सूर्य	18/05/2072	चंद्र	29/03/2075
केतु	17/12/2065	शुक्र	02/05/2067	सूर्य	24/01/2070	चंद्र	07/08/2072	मंगल	05/06/2075
शुक्र	29/03/2066	सूर्य	24/05/2067	चंद्र	25/04/2070	मंगल	03/10/2072	राहु	25/11/2075
सूर्य	28/04/2066	चंद्र	28/06/2067	मंगल	28/06/2070	राहु	26/02/2073	गुरु	28/04/2076

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
28/04/2076		26/02/2079		28/04/2080		15/08/2080		14/02/2081	
26/02/2079		28/04/2080		15/08/2080		14/02/2081		22/06/2081	
बुध	21/09/2076	केतु	23/03/2079	सूर्य	03/05/2080	चंद्र	30/08/2080	मंगल	21/02/2081
केतु	21/11/2076	शुक्र	02/06/2079	चंद्र	12/05/2080	मंगल	10/09/2080	राहु	12/03/2081
शुक्र	12/05/2077	सूर्य	24/06/2079	मंगल	19/05/2080	राहु	07/10/2080	गुरु	29/03/2081
सूर्य	03/07/2077	चंद्र	29/07/2079	राहु	04/06/2080	गुरु	01/11/2080	शनि	19/04/2081
चंद्र	27/09/2077	मंगल	23/08/2079	गुरु	19/06/2080	शनि	30/11/2080	बुध	07/05/2081
मंगल	26/11/2077	राहु	26/10/2079	शनि	06/07/2080	बुध	26/12/2080	केतु	14/05/2081
राहु	01/05/2078	गुरु	22/12/2079	बुध	21/07/2080	केतु	05/01/2081	शुक्र	05/06/2081
गुरु	16/09/2078	शनि	27/02/2080	केतु	28/07/2080	शुक्र	05/02/2081	सूर्य	11/06/2081
शनि	26/02/2079	बुध	28/04/2080	शुक्र	15/08/2080	सूर्य	14/02/2081	चंद्र	22/06/2081

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
22/06/2081		16/05/2082		04/03/2083		14/02/2084		21/12/2084	
16/05/2082		04/03/2083		14/02/2084		21/12/2084		28/04/2085	
राहु	10/08/2081	गुरु	24/06/2082	शनि	28/04/2083	बुध	29/03/2084	केतु	28/12/2084
गुरु	23/09/2081	शनि	10/08/2082	बुध	17/06/2083	केतु	17/04/2084	शुक्र	19/01/2085
शनि	14/11/2081	बुध	20/09/2082	केतु	07/07/2083	शुक्र	07/06/2084	सूर्य	25/01/2085
बुध	30/12/2081	केतु	07/10/2082	शुक्र	03/09/2083	सूर्य	23/06/2084	चंद्र	05/02/2085
केतु	19/01/2082	शुक्र	25/11/2082	सूर्य	20/09/2083	चंद्र	19/07/2084	मंगल	12/02/2085
शुक्र	14/03/2082	सूर्य	09/12/2082	चंद्र	19/10/2083	मंगल	06/08/2084	राहु	03/03/2085
सूर्य	31/03/2082	चंद्र	03/01/2083	मंगल	08/11/2083	राहु	21/09/2084	गुरु	20/03/2085
चंद्र	27/04/2082	मंगल	20/01/2083	राहु	30/12/2083	गुरु	02/11/2084	शनि	10/04/2085
मंगल	16/05/2082	राहु	04/03/2083	गुरु	14/02/2084	शनि	21/12/2084	बुध	28/04/2085

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
28/04/2085		28/04/2086		26/02/2087		27/09/2087		28/03/2089	
28/04/2086		26/02/2087		27/09/2087		28/03/2089		28/07/2090	
शुक्र	28/06/2085	चंद्र	23/05/2086	मंगल	11/03/2087	राहु	19/12/2087	गुरु	01/06/2089
सूर्य	16/07/2085	मंगल	10/06/2086	राहु	12/04/2087	गुरु	01/03/2088	शनि	17/08/2089
चंद्र	15/08/2085	राहु	26/07/2086	गुरु	10/05/2087	शनि	26/05/2088	बुध	25/10/2089
मंगल	06/09/2085	गुरु	04/09/2086	शनि	13/06/2087	बुध	12/08/2088	केतु	23/11/2089
राहु	30/10/2085	शनि	23/10/2086	बुध	13/07/2087	केतु	13/09/2088	शुक्र	12/02/2090
गुरु	18/12/2085	बुध	05/12/2086	केतु	26/07/2087	शुक्र	13/12/2088	सूर्य	08/03/2090
शनि	14/02/2086	केतु	22/12/2086	शुक्र	30/08/2087	सूर्य	10/01/2089	चंद्र	18/04/2090
बुध	07/04/2086	शुक्र	11/02/2087	सूर्य	10/09/2087	चंद्र	24/02/2089	मंगल	16/05/2090
केतु	28/04/2086	सूर्य	26/02/2087	चंद्र	27/09/2087	मंगल	28/03/2089	राहु	28/07/2090

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
28/07/2090		27/02/2092		28/07/2093		26/02/2094		28/10/2095	
27/02/2092		28/07/2093		26/02/2094		28/10/2095		28/04/2096	
शनि	28/10/2090	बुध	10/05/2092	केतु	10/08/2093	शुक्र	08/06/2094	सूर्य	06/11/2095
बुध	18/01/2091	केतु	09/06/2092	शुक्र	14/09/2093	सूर्य	08/07/2094	चंद्र	21/11/2095
केतु	21/02/2091	शुक्र	03/09/2092	सूर्य	25/09/2093	चंद्र	28/08/2094	मंगल	02/12/2095
शुक्र	28/05/2091	सूर्य	29/09/2092	चंद्र	12/10/2093	मंगल	02/10/2094	राहु	29/12/2095
सूर्य	26/06/2091	चंद्र	11/11/2092	मंगल	25/10/2093	राहु	02/01/2095	गुरु	23/01/2096
चंद्र	13/08/2091	मंगल	12/12/2092	राहु	26/11/2093	गुरु	24/03/2095	शनि	21/02/2096
मंगल	16/09/2091	राहु	27/02/2093	गुरु	24/12/2093	शनि	28/06/2095	बुध	17/03/2096
राहु	12/12/2091	गुरु	07/05/2093	शनि	27/01/2094	बुध	22/09/2095	केतु	28/03/2096
गुरु	27/02/2092	शनि	28/07/2093	बुध	26/02/2094	केतु	28/10/2095	शुक्र	28/04/2096

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
28/04/2096		24/09/2096		12/10/2097		18/09/2098		28/10/2099	
24/09/2096		12/10/2097		18/09/2098		28/10/2099		25/10/2100	
मंगल	06/05/2096	राहु	20/11/2096	गुरु	27/11/2097	शनि	21/11/2098	बुध	18/12/2099
राहु	29/05/2096	गुरु	10/01/2097	शनि	20/01/2098	बुध	18/01/2099	केतु	08/01/2100
गुरु	17/06/2096	शनि	12/03/2097	बुध	09/03/2098	केतु	10/02/2099	शुक्र	10/03/2100
शनि	11/07/2096	बुध	05/05/2097	केतु	29/03/2098	शुक्र	19/04/2099	सूर्य	28/03/2100
बुध	01/08/2096	केतु	28/05/2097	शुक्र	25/05/2098	सूर्य	09/05/2099	चंद्र	27/04/2100
केतु	10/08/2096	शुक्र	31/07/2097	सूर्य	11/06/2098	चंद्र	12/06/2099	मंगल	18/05/2100
शुक्र	04/09/2096	सूर्य	19/08/2097	चंद्र	09/07/2098	मंगल	05/07/2099	राहु	11/07/2100
सूर्य	11/09/2096	चंद्र	20/09/2097	मंगल	29/07/2098	राहु	04/09/2099	गुरु	29/08/2100
चंद्र	24/09/2096	मंगल	12/10/2097	राहु	18/09/2098	गुरु	28/10/2099	शनि	25/10/2100

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
25/10/2100		23/03/2101		23/05/2102		28/09/2102		29/04/2103	
23/03/2101		23/05/2102		28/09/2102		29/04/2103		09/01/2106	
केतु	03/11/2100	शुक्र	02/06/2101	सूर्य	30/05/2102	चंद्र	16/10/2102	राहु	24/09/2103
शुक्र	28/11/2100	सूर्य	24/06/2101	चंद्र	09/06/2102	मंगल	28/10/2102	गुरु	03/02/2104
सूर्य	05/12/2100	चंद्र	29/07/2101	मंगल	17/06/2102	राहु	29/11/2102	शनि	08/07/2104
चंद्र	18/12/2100	मंगल	23/08/2101	राहु	06/07/2102	गुरु	28/12/2102	बुध	25/11/2104
मंगल	26/12/2100	राहु	26/10/2101	गुरु	23/07/2102	शनि	31/01/2103	केतु	21/01/2105
राहु	18/01/2101	गुरु	22/12/2101	शनि	12/08/2102	बुध	02/03/2103	शुक्र	04/07/2105
गुरु	07/02/2101	शनि	27/02/2102	बुध	30/08/2102	केतु	14/03/2103	सूर्य	23/08/2105
शनि	02/03/2101	बुध	29/04/2102	केतु	07/09/2102	शुक्र	19/04/2103	चंद्र	13/11/2105
बुध	23/03/2101	केतु	23/05/2102	शुक्र	28/09/2102	सूर्य	29/04/2103	मंगल	09/01/2106

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - शुक्र - गुरु		शनि - शुक्र - शनि		शनि - शुक्र - बुध		शनि - शुक्र - केतु	
27/09/2025 23:31		01/03/2026 04:43		31/08/2026 07:53		11/02/2027 04:25	
01/03/2026 04:43		31/08/2026 07:53		11/02/2027 04:25		19/04/2027 15:41	
गुरु	18/10/2025 13:00	शनि	30/03/2026 04:37	बुध	23/09/2026 13:00	केतु	15/02/2027 02:52
शनि	11/11/2025 23:02	बुध	25/04/2026 03:16	केतु	03/10/2026 02:24	शुक्र	26/02/2027 08:45
बुध	03/12/2025 19:22	केतु	05/05/2026 19:39	शुक्र	30/10/2026 09:49	सूर्य	01/03/2027 17:43
केतु	12/12/2025 19:16	शुक्र	05/06/2026 08:11	सूर्य	07/11/2026 14:26	चंद्र	07/03/2027 08:39
शुक्र	07/01/2026 12:08	सूर्य	14/06/2026 11:56	चंद्र	21/11/2026 06:09	मंगल	11/03/2027 07:07
सूर्य	15/01/2026 05:12	चंद्र	29/06/2026 18:12	मंगल	30/11/2026 19:33	राहु	21/03/2027 10:00
चंद्र	28/01/2026 01:38	मंगल	10/07/2026 10:35	राहु	25/12/2026 09:26	गुरु	30/03/2027 09:54
मंगल	06/02/2026 01:32	राहु	06/08/2026 21:52	गुरु	16/01/2027 05:46	शनि	10/04/2027 02:17
राहु	01/03/2026 04:43	गुरु	31/08/2026 07:53	शनि	11/02/2027 04:25	बुध	19/04/2027 15:41

शनि - सूर्य - सूर्य		शनि - सूर्य - चंद्र		शनि - सूर्य - मंगल		शनि - सूर्य - राहु	
19/04/2027 15:41		07/05/2027 00:04		04/06/2027 22:03		25/06/2027 03:50	
07/05/2027 00:04		04/06/2027 22:03		25/06/2027 03:50		16/08/2027 04:59	
सूर्य	20/04/2027 12:30	चंद्र	09/05/2027 09:54	मंगल	06/06/2027 02:23	राहु	02/07/2027 23:12
चंद्र	21/04/2027 23:12	मंगल	11/05/2027 02:23	राहु	09/06/2027 03:15	गुरु	09/07/2027 21:45
मंगल	22/04/2027 23:30	राहु	15/05/2027 10:29	गुरु	11/06/2027 20:01	शनि	18/07/2027 03:32
राहु	25/04/2027 13:57	गुरु	19/05/2027 07:01	शनि	15/06/2027 00:56	बुध	25/07/2027 12:30
गुरु	27/04/2027 21:28	शनि	23/05/2027 20:54	बुध	17/06/2027 21:46	केतु	28/07/2027 13:22
शनि	30/04/2027 15:24	बुध	27/05/2027 23:12	केतु	19/06/2027 02:06	शुक्र	06/08/2027 05:34
बुध	03/05/2027 02:23	केतु	29/05/2027 15:41	शुक्र	22/06/2027 11:04	सूर्य	08/08/2027 20:01
केतु	04/05/2027 02:41	शुक्र	03/06/2027 11:21	सूर्य	23/06/2027 11:21	चंद्र	13/08/2027 04:07
शुक्र	07/05/2027 00:04	सूर्य	04/06/2027 22:03	चंद्र	25/06/2027 03:50	मंगल	16/08/2027 04:59

शनि - सूर्य - गुरु		शनि - सूर्य - शनि		शनि - सूर्य - बुध		शनि - सूर्य - केतु	
16/08/2027 04:59		01/10/2027 11:21		25/11/2027 09:54		13/01/2028 13:39	
01/10/2027 11:21		25/11/2027 09:54		13/01/2028 13:39		02/02/2028 19:26	
गुरु	22/08/2027 09:02	शनि	10/10/2027 04:07	बुध	02/12/2027 09:02	केतु	14/01/2028 18:00
शनि	29/08/2027 16:50	बुध	17/10/2027 22:55	केतु	05/12/2027 05:51	शुक्र	18/01/2028 02:57
बुध	05/09/2027 06:09	केतु	21/10/2027 03:50	शुक्र	13/12/2027 10:29	सूर्य	19/01/2028 03:15
केतु	07/09/2027 22:55	शुक्र	30/10/2027 07:35	सूर्य	15/12/2027 21:28	चंद्र	20/01/2028 19:44
शुक्र	15/09/2027 15:58	सूर्य	02/11/2027 01:31	चंद्र	19/12/2027 23:47	मंगल	22/01/2028 00:04
सूर्य	17/09/2027 23:29	चंद्र	06/11/2027 15:24	मंगल	22/12/2027 20:36	राहु	25/01/2028 00:56
चंद्र	21/09/2027 20:01	मंगल	09/11/2027 20:19	राहु	30/12/2027 05:34	गुरु	27/01/2028 17:42
मंगल	24/09/2027 12:48	राहु	18/11/2027 02:05	गुरु	05/01/2028 18:52	शनि	30/01/2028 22:37
राहु	01/10/2027 11:21	गुरु	25/11/2027 09:54	शनि	13/01/2028 13:39	बुध	02/02/2028 19:26

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - सूर्य - शुक्र	
02/02/2028 19:26	
31/03/2028 15:23	
शुक्र	12/02/2028 10:46
सूर्य	15/02/2028 08:10
चंद्र	20/02/2028 03:49
मंगल	23/02/2028 12:47
राहु	03/03/2028 04:59
गुरु	10/03/2028 22:02
शनि	20/03/2028 01:48
बुध	28/03/2028 06:25
केतु	31/03/2028 15:23

शनि - चंद्र - चंद्र	
31/03/2028 15:23	
18/05/2028 20:01	
चंद्र	04/04/2028 15:46
मंगल	07/04/2028 11:15
राहु	14/04/2028 16:44
गुरु	21/04/2028 02:57
शनि	28/04/2028 18:05
बुध	05/05/2028 13:56
केतु	08/05/2028 09:25
शुक्र	16/05/2028 10:11
सूर्य	18/05/2028 20:01

शनि - चंद्र - मंगल	
18/05/2028 20:01	
21/06/2028 13:39	
मंगल	20/05/2028 19:15
राहु	25/05/2028 20:41
गुरु	30/05/2028 08:38
शनि	04/06/2028 16:50
बुध	09/06/2028 11:32
केतु	11/06/2028 10:46
शुक्र	17/06/2028 01:42
सूर्य	18/06/2028 18:11
चंद्र	21/06/2028 13:39

शनि - चंद्र - राहु	
21/06/2028 13:39	
16/09/2028 07:35	
राहु	04/07/2028 13:56
गुरु	16/07/2028 03:32
शनि	29/07/2028 21:10
बुध	11/08/2028 04:06
केतु	16/08/2028 05:33
शुक्र	30/08/2028 16:32
सूर्य	04/09/2028 00:38
चंद्र	11/09/2028 06:08
मंगल	16/09/2028 07:35

शनि - चंद्र - गुरु	
16/09/2028 07:35	
02/12/2028 10:11	
गुरु	26/09/2028 14:19
शनि	08/10/2028 19:20
बुध	19/10/2028 17:30
केतु	24/10/2028 05:27
शुक्र	06/11/2028 01:53
सूर्य	09/11/2028 22:25
चंद्र	16/11/2028 08:38
मंगल	20/11/2028 20:35
राहु	02/12/2028 10:11

शनि - चंद्र - शनि	
02/12/2028 10:11	
03/03/2029 23:46	
शनि	16/12/2028 22:08
बुध	29/12/2028 21:27
केतु	04/01/2029 05:39
शुक्र	19/01/2029 11:55
सूर्य	24/01/2029 01:47
चंद्र	31/01/2029 16:55
मंगल	06/02/2029 01:07
राहु	19/02/2029 18:45
गुरु	03/03/2029 23:46

शनि - चंद्र - बुध	
03/03/2029 23:46	
24/05/2029 22:02	
बुध	15/03/2029 14:19
केतु	20/03/2029 09:01
शुक्र	03/04/2029 00:44
सूर्य	07/04/2029 03:02
चंद्र	13/04/2029 22:54
मंगल	18/04/2029 17:36
राहु	01/05/2029 00:32
गुरु	11/05/2029 22:42
शनि	24/05/2029 22:02

शनि - चंद्र - केतु	
24/05/2029 22:02	
27/06/2029 15:40	
केतु	26/05/2029 21:15
शुक्र	01/06/2029 12:12
सूर्य	03/06/2029 04:41
चंद्र	06/06/2029 00:09
मंगल	07/06/2029 23:22
राहु	13/06/2029 00:49
गुरु	17/06/2029 12:46
शनि	22/06/2029 20:58
बुध	27/06/2029 15:40

शनि - चंद्र - शुक्र	
27/06/2029 15:40	
02/10/2029 00:55	
शुक्र	13/07/2029 17:12
सूर्य	18/07/2029 12:52
चंद्र	26/07/2029 13:38
मंगल	01/08/2029 04:35
राहु	15/08/2029 15:34
गुरु	28/08/2029 12:00
शनि	12/09/2029 18:16
बुध	26/09/2029 09:58
केतु	02/10/2029 00:55

शनि - चंद्र - सूर्य	
02/10/2029 00:55	
30/10/2029 22:53	
सूर्य	03/10/2029 11:37
चंद्र	05/10/2029 21:27
मंगल	07/10/2029 13:56
राहु	11/10/2029 22:01
गुरु	15/10/2029 18:33
शनि	20/10/2029 08:26
बुध	24/10/2029 10:45
केतु	26/10/2029 03:14
शुक्र	30/10/2029 22:53

शनि - मंगल - मंगल	
30/10/2029 22:53	
23/11/2029 13:38	
मंगल	01/11/2029 07:57
राहु	04/11/2029 20:58
गुरु	08/11/2029 00:32
शनि	11/11/2029 18:16
बुध	15/11/2029 02:33
केतु	16/11/2029 11:37
शुक्र	20/11/2029 10:04
सूर्य	21/11/2029 14:24
चंद्र	23/11/2029 13:38

शनि - मंगल - राहु	
23/11/2029 13:38	
23/01/2030 06:59	
राहु	02/12/2029 16:14
गुरु	10/12/2029 18:33
शनि	20/12/2029 09:18
बुध	28/12/2029 23:45
केतु	01/01/2030 12:46
शुक्र	11/01/2030 15:39
सूर्य	14/01/2030 16:31
चंद्र	19/01/2030 17:58
मंगल	23/01/2030 06:59

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - मंगल - गुरु	
23/01/2030 06:59	
18/03/2030 06:24	
गुरु	30/01/2030 11:42
शनि	08/02/2030 00:49
बुध	15/02/2030 16:20
केतु	18/02/2030 19:54
शुक्र	27/02/2030 19:48
सूर्य	02/03/2030 12:34
चंद्र	07/03/2030 00:31
मंगल	10/03/2030 04:05
राहु	18/03/2030 06:24

शनि - मंगल - शनि	
18/03/2030 06:24	
21/05/2030 08:43	
शनि	28/03/2030 09:58
बुध	06/04/2030 11:54
केतु	10/04/2030 05:38
शुक्र	20/04/2030 22:01
सूर्य	24/04/2030 02:56
चंद्र	29/04/2030 11:07
मंगल	03/05/2030 04:52
राहु	12/05/2030 19:36
गुरु	21/05/2030 08:43

शनि - मंगल - बुध	
21/05/2030 08:43	
17/07/2030 17:06	
बुध	29/05/2030 11:42
केतु	01/06/2030 19:59
शुक्र	11/06/2030 09:23
सूर्य	14/06/2030 06:12
चंद्र	19/06/2030 00:54
मंगल	22/06/2030 09:12
राहु	30/06/2030 23:39
गुरु	08/07/2030 15:10
शनि	17/07/2030 17:06

शनि - मंगल - केतु	
17/07/2030 17:06	
10/08/2030 07:51	
केतु	19/07/2030 02:09
शुक्र	23/07/2030 00:37
सूर्य	24/07/2030 04:57
चंद्र	26/07/2030 04:11
मंगल	27/07/2030 13:14
राहु	31/07/2030 02:15
गुरु	03/08/2030 05:49
शनि	06/08/2030 23:33
बुध	10/08/2030 07:51

शनि - मंगल - शुक्र	
10/08/2030 07:51	
16/10/2030 19:07	
शुक्र	21/08/2030 13:43
सूर्य	24/08/2030 22:41
चंद्र	30/08/2030 13:38
मंगल	03/09/2030 12:05
राहु	13/09/2030 14:58
गुरु	22/09/2030 14:53
शनि	03/10/2030 07:16
बुध	12/10/2030 20:40
केतु	16/10/2030 19:07

शनि - मंगल - सूर्य	
16/10/2030 19:07	
06/11/2030 00:54	
सूर्य	17/10/2030 19:24
चंद्र	19/10/2030 11:53
मंगल	20/10/2030 16:14
राहु	23/10/2030 17:06
गुरु	26/10/2030 09:52
शनि	29/10/2030 14:47
बुध	01/11/2030 11:36
केतु	02/11/2030 15:56
शुक्र	06/11/2030 00:54

शनि - मंगल - चंद्र	
06/11/2030 00:54	
09/12/2030 18:32	
चंद्र	08/11/2030 20:22
मंगल	10/11/2030 19:36
राहु	15/11/2030 21:03
गुरु	20/11/2030 09:00
शनि	25/11/2030 17:11
बुध	30/11/2030 11:53
केतु	02/12/2030 11:07
शुक्र	08/12/2030 02:03
सूर्य	09/12/2030 18:32

शनि - राहु - राहु	
09/12/2030 18:32	
14/05/2031 22:00	
राहु	02/01/2031 04:39
गुरु	23/01/2031 00:19
शनि	16/02/2031 17:40
बुध	10/03/2031 20:34
केतु	19/03/2031 23:10
शुक्र	14/04/2031 23:44
सूर्य	22/04/2031 19:07
चंद्र	05/05/2031 19:24
मंगल	14/05/2031 22:00

शनि - राहु - गुरु	
14/05/2031 22:00	
30/09/2031 17:05	
गुरु	02/06/2031 10:09
शनि	24/06/2031 09:34
बुध	14/07/2031 01:28
केतु	22/07/2031 03:47
शुक्र	14/08/2031 06:58
सूर्य	21/08/2031 05:31
चंद्र	01/09/2031 19:07
मंगल	09/09/2031 21:25
राहु	30/09/2031 17:05

शनि - राहु - शनि	
30/09/2031 17:05	
13/03/2032 12:44	
शनि	26/10/2031 19:24
बुध	19/11/2031 03:47
केतु	28/11/2031 18:32
शुक्र	26/12/2031 05:48
सूर्य	03/01/2032 11:35
चंद्र	17/01/2032 05:13
मंगल	26/01/2032 19:58
राहु	20/02/2032 13:19
गुरु	13/03/2032 12:44

शनि - राहु - बुध	
13/03/2032 12:44	
08/08/2032 00:01	
बुध	03/04/2032 10:08
केतु	12/04/2032 00:36
शुक्र	06/05/2032 14:28
सूर्य	13/05/2032 23:26
चंद्र	26/05/2032 06:23
मंगल	03/06/2032 20:50
राहु	25/06/2032 23:44
गुरु	15/07/2032 15:38
शनि	08/08/2032 00:01

शनि - राहु - केतु	
08/08/2032 00:01	
07/10/2032 17:22	
केतु	11/08/2032 13:02
शुक्र	21/08/2032 15:55
सूर्य	24/08/2032 16:47
चंद्र	29/08/2032 18:14
मंगल	02/09/2032 07:14
राहु	11/09/2032 09:51
गुरु	19/09/2032 12:09
शनि	29/09/2032 02:54
बुध	07/10/2032 17:22

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

शनि - राहु - शुक्र	
07/10/2032 17:22	
30/03/2033 05:13	
शुक्र	05/11/2032 15:20
सूर्य	14/11/2032 07:32
चंद्र	28/11/2032 18:31
मंगल	08/12/2032 21:24
राहु	03/01/2033 21:59
गुरु	27/01/2033 01:10
शनि	23/02/2033 12:26
बुध	20/03/2033 02:19
केतु	30/03/2033 05:13

शनि - राहु - सूर्य	
30/03/2033 05:13	
21/05/2033 06:22	
सूर्य	01/04/2033 19:40
चंद्र	06/04/2033 03:46
मंगल	09/04/2033 04:38
राहु	17/04/2033 00:00
गुरु	23/04/2033 22:34
शनि	02/05/2033 04:21
बुध	09/05/2033 13:18
केतु	12/05/2033 14:10
शुक्र	21/05/2033 06:22

शनि - राहु - चंद्र	
21/05/2033 06:22	
16/08/2033 00:17	
चंद्र	28/05/2033 11:52
मंगल	02/06/2033 13:18
राहु	15/06/2033 13:36
गुरु	27/06/2033 03:11
शनि	10/07/2033 20:49
बुध	23/07/2033 03:46
केतु	28/07/2033 05:12
शुक्र	11/08/2033 16:12
सूर्य	16/08/2033 00:17

शनि - राहु - मंगल	
16/08/2033 00:17	
15/10/2033 17:38	
मंगल	19/08/2033 13:18
राहु	28/08/2033 15:54
गुरु	05/09/2033 18:13
शनि	15/09/2033 08:58
बुध	23/09/2033 23:25
केतु	27/09/2033 12:26
शुक्र	07/10/2033 15:20
सूर्य	10/10/2033 16:12
चंद्र	15/10/2033 17:38

शनि - गुरु - गुरु	
15/10/2033 17:38	
16/02/2034 02:36	
गुरु	01/11/2033 04:26
शनि	20/11/2033 17:15
बुध	08/12/2033 04:43
केतु	15/12/2033 09:27
शुक्र	04/01/2034 22:56
सूर्य	11/01/2034 02:59
चंद्र	21/01/2034 09:44
मंगल	28/01/2034 14:27
राहु	16/02/2034 02:36

शनि - गुरु - शनि	
16/02/2034 02:36	
12/07/2034 14:44	
शनि	11/03/2034 07:19
बुध	01/04/2034 01:26
केतु	09/04/2034 14:33
शुक्र	04/05/2034 00:34
सूर्य	11/05/2034 08:23
चंद्र	23/05/2034 13:23
मंगल	01/06/2034 02:30
राहु	23/06/2034 01:55
गुरु	12/07/2034 14:44

शनि - गुरु - बुध	
12/07/2034 14:44	
20/11/2034 16:46	
बुध	31/07/2034 04:25
केतु	07/08/2034 19:57
शुक्र	29/08/2034 16:17
सूर्य	05/09/2034 05:35
चंद्र	16/09/2034 03:45
मंगल	23/09/2034 19:16
राहु	13/10/2034 11:10
गुरु	30/10/2034 22:38
शनि	20/11/2034 16:46

शनि - गुरु - केतु	
20/11/2034 16:46	
13/01/2035 16:11	
केतु	23/11/2034 20:19
शुक्र	02/12/2034 20:14
सूर्य	05/12/2034 13:00
चंद्र	10/12/2034 00:57
मंगल	13/12/2034 04:31
राहु	21/12/2034 06:50
गुरु	28/12/2034 11:33
शनि	06/01/2035 00:40
बुध	13/01/2035 16:11

शनि - गुरु - शुक्र	
13/01/2035 16:11	
16/06/2035 21:23	
शुक्र	08/02/2035 09:03
सूर्य	16/02/2035 02:06
चंद्र	28/02/2035 22:32
मंगल	09/03/2035 22:27
राहु	02/04/2035 01:37
गुरु	22/04/2035 15:07
शनि	17/05/2035 01:08
बुध	07/06/2035 21:29
केतु	16/06/2035 21:23

शनि - गुरु - सूर्य	
16/06/2035 21:23	
02/08/2035 03:44	
सूर्य	19/06/2035 04:54
चंद्र	23/06/2035 01:26
मंगल	25/06/2035 18:12
राहु	02/07/2035 16:45
गुरु	08/07/2035 20:48
शनि	16/07/2035 04:36
बुध	22/07/2035 17:54
केतु	25/07/2035 10:41
शुक्र	02/08/2035 03:44

शनि - गुरु - चंद्र	
02/08/2035 03:44	
18/10/2035 06:20	
चंद्र	08/08/2035 13:57
मंगल	13/08/2035 01:54
राहु	24/08/2035 15:30
गुरु	03/09/2035 22:15
शनि	16/09/2035 03:15
बुध	27/09/2035 01:25
केतु	01/10/2035 13:23
शुक्र	14/10/2035 09:49
सूर्य	18/10/2035 06:20

शनि - गुरु - मंगल	
18/10/2035 06:20	
11/12/2035 05:46	
मंगल	21/10/2035 09:54
राहु	29/10/2035 12:13
गुरु	05/11/2035 16:56
शनि	14/11/2035 06:03
बुध	21/11/2035 21:34
केतु	25/11/2035 01:08
शुक्र	04/12/2035 01:02
सूर्य	06/12/2035 17:48
चंद्र	11/12/2035 05:46

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - शुक्र - गुरु - शुक्र	
12/12/2025 19:16	
07/01/2026 12:08	
शुक्र	17/12/2025 02:05
सूर्य	18/12/2025 08:55
चंद्र	20/12/2025 12:20
मंगल	22/12/2025 00:19
राहु	25/12/2025 20:51
गुरु	29/12/2025 07:06
शनि	02/01/2026 08:46
बुध	06/01/2026 00:09
केतु	07/01/2026 12:08

शनि - शुक्र - गुरु - सूर्य	
07/01/2026 12:08	
15/01/2026 05:12	
सूर्य	07/01/2026 21:23
चंद्र	08/01/2026 12:49
मंगल	08/01/2026 23:36
राहु	10/01/2026 03:22
गुरु	11/01/2026 04:02
शनि	12/01/2026 09:20
बुध	13/01/2026 11:33
केतु	13/01/2026 22:21
शुक्र	15/01/2026 05:12

शनि - शुक्र - गुरु - चंद्र	
15/01/2026 05:12	
28/01/2026 01:38	
चंद्र	16/01/2026 06:54
मंगल	17/01/2026 00:53
राहु	18/01/2026 23:09
गुरु	20/01/2026 16:17
शनि	22/01/2026 17:07
बुध	24/01/2026 12:49
केतु	25/01/2026 06:48
शुक्र	27/01/2026 10:13
सूर्य	28/01/2026 01:38

शनि - शुक्र - गुरु - मंगल	
28/01/2026 01:38	
06/02/2026 01:32	
मंगल	28/01/2026 14:13
राहु	29/01/2026 22:37
गुरु	31/01/2026 03:24
शनि	01/02/2026 13:35
बुध	02/02/2026 20:10
केतु	03/02/2026 08:46
शुक्र	04/02/2026 20:45
सूर्य	05/02/2026 07:32
चंद्र	06/02/2026 01:32

शनि - शुक्र - गुरु - राहु	
06/02/2026 01:32	
01/03/2026 04:43	
राहु	09/02/2026 12:49
गुरु	12/02/2026 14:50
शनि	16/02/2026 06:44
बुध	19/02/2026 13:23
केतु	20/02/2026 21:46
शुक्र	24/02/2026 18:18
सूर्य	25/02/2026 22:04
चंद्र	27/02/2026 20:20
मंगल	01/03/2026 04:43

शनि - शुक्र - शनि - शनि	
01/03/2026 04:43	
30/03/2026 04:37	
शनि	05/03/2026 18:54
बुध	09/03/2026 21:29
केतु	11/03/2026 14:05
शुक्र	16/03/2026 10:04
सूर्य	17/03/2026 20:51
चंद्र	20/03/2026 06:51
मंगल	21/03/2026 23:27
राहु	26/03/2026 07:50
गुरु	30/03/2026 04:37

शनि - शुक्र - शनि - बुध	
30/03/2026 04:37	
25/04/2026 03:16	
बुध	02/04/2026 20:49
केतु	04/04/2026 09:09
शुक्र	08/04/2026 16:55
सूर्य	10/04/2026 00:03
चंद्र	12/04/2026 03:56
मंगल	13/04/2026 16:16
राहु	17/04/2026 13:40
गुरु	21/04/2026 00:41
शनि	25/04/2026 03:16

शनि - शुक्र - शनि - केतु	
25/04/2026 03:16	
05/05/2026 19:39	
केतु	25/04/2026 18:13
शुक्र	27/04/2026 12:57
सूर्य	28/04/2026 01:46
चंद्र	28/04/2026 23:08
मंगल	29/04/2026 14:06
राहु	01/05/2026 04:33
गुरु	02/05/2026 14:44
शनि	04/05/2026 07:20
बुध	05/05/2026 19:39

शनि - शुक्र - शनि - शुक्र	
05/05/2026 19:39	
05/06/2026 08:11	
शुक्र	10/05/2026 21:44
सूर्य	12/05/2026 10:22
चंद्र	14/05/2026 23:25
मंगल	16/05/2026 18:08
राहु	21/05/2026 08:01
गुरु	25/05/2026 09:41
शनि	30/05/2026 05:40
बुध	03/06/2026 13:27
केतु	05/06/2026 08:11

शनि - शुक्र - शनि - सूर्य	
05/06/2026 08:11	
14/06/2026 11:56	
सूर्य	05/06/2026 19:10
चंद्र	06/06/2026 13:29
मंगल	07/06/2026 02:18
राहु	08/06/2026 11:16
गुरु	09/06/2026 16:34
शनि	11/06/2026 03:22
बुध	12/06/2026 10:30
केतु	12/06/2026 23:19
शुक्र	14/06/2026 11:56

शनि - शुक्र - शनि - चंद्र	
14/06/2026 11:56	
29/06/2026 18:12	
चंद्र	15/06/2026 18:28
मंगल	16/06/2026 15:50
राहु	18/06/2026 22:46
गुरु	20/06/2026 23:36
शनि	23/06/2026 09:36
बुध	25/06/2026 13:29
केतु	26/06/2026 10:51
शुक्र	28/06/2026 23:53
सूर्य	29/06/2026 18:12

शनि - शुक्र - शनि - मंगल	
29/06/2026 18:12	
10/07/2026 10:35	
मंगल	30/06/2026 09:10
राहु	01/07/2026 23:37
गुरु	03/07/2026 09:48
शनि	05/07/2026 02:24
बुध	06/07/2026 14:43
केतु	07/07/2026 05:40
शुक्र	09/07/2026 00:24
सूर्य	09/07/2026 13:13
चंद्र	10/07/2026 10:35

विंशोत्तरी दशा - प्राण

शनि - शुक्र - शनि - राहु	
10/07/2026 10:35	
06/08/2026 21:52	
राहु	14/07/2026 13:29
गुरु	18/07/2026 05:23
शनि	22/07/2026 13:46
बुध	26/07/2026 11:10
केतु	28/07/2026 01:37
शुक्र	01/08/2026 15:30
सूर्य	03/08/2026 00:28
चंद्र	05/08/2026 07:24
मंगल	06/08/2026 21:52

शनि - शुक्र - शनि - गुरु	
06/08/2026 21:52	
31/08/2026 07:53	
गुरु	10/08/2026 04:00
शनि	14/08/2026 00:47
बुध	17/08/2026 11:49
केतु	18/08/2026 22:00
शुक्र	22/08/2026 23:40
सूर्य	24/08/2026 04:58
चंद्र	26/08/2026 05:48
मंगल	27/08/2026 15:59
राहु	31/08/2026 07:53

शनि - शुक्र - बुध - बुध	
31/08/2026 07:53	
23/09/2026 13:00	
बुध	03/09/2026 14:49
केतु	04/09/2026 23:19
शुक्र	08/09/2026 20:10
सूर्य	10/09/2026 00:01
चंद्र	11/09/2026 22:27
मंगल	13/09/2026 06:56
राहु	16/09/2026 18:30
गुरु	19/09/2026 20:47
शनि	23/09/2026 13:00

शनि - शुक्र - बुध - केतु	
23/09/2026 13:00	
03/10/2026 02:24	
केतु	24/09/2026 02:23
शुक्र	25/09/2026 16:37
सूर्य	26/09/2026 04:05
चंद्र	26/09/2026 23:12
मंगल	27/09/2026 12:35
राहु	28/09/2026 22:59
गुरु	30/09/2026 05:34
शनि	01/10/2026 17:54
बुध	03/10/2026 02:24

शनि - शुक्र - बुध - शुक्र	
03/10/2026 02:24	
30/10/2026 09:49	
शुक्र	07/10/2026 15:38
सूर्य	09/10/2026 00:24
चंद्र	11/10/2026 07:01
मंगल	12/10/2026 21:15
राहु	16/10/2026 23:34
गुरु	20/10/2026 14:57
शनि	24/10/2026 22:44
बुध	28/10/2026 19:35
केतु	30/10/2026 09:49

शनि - शुक्र - बुध - सूर्य	
30/10/2026 09:49	
07/11/2026 14:26	
सूर्य	30/10/2026 19:39
चंद्र	31/10/2026 12:02
मंगल	31/10/2026 23:30
राहु	02/11/2026 05:00
गुरु	03/11/2026 07:13
शनि	04/11/2026 14:21
बुध	05/11/2026 18:12
केतु	06/11/2026 05:40
शुक्र	07/11/2026 14:26

शनि - शुक्र - बुध - चंद्र	
07/11/2026 14:26	
21/11/2026 06:09	
चंद्र	08/11/2026 17:45
मंगल	09/11/2026 12:52
राहु	11/11/2026 14:01
गुरु	13/11/2026 09:43
शनि	15/11/2026 13:36
बुध	17/11/2026 12:02
केतु	18/11/2026 07:09
शुक्र	20/11/2026 13:46
सूर्य	21/11/2026 06:09

शनि - शुक्र - बुध - मंगल	
21/11/2026 06:09	
30/11/2026 19:33	
मंगल	21/11/2026 19:32
राहु	23/11/2026 05:57
गुरु	24/11/2026 12:32
शनि	26/11/2026 00:51
बुध	27/11/2026 09:21
केतु	27/11/2026 22:44
शुक्र	29/11/2026 12:58
सूर्य	30/11/2026 00:26
चंद्र	30/11/2026 19:33

शनि - शुक्र - बुध - राहु	
30/11/2026 19:33	
25/12/2026 09:26	
राहु	04/12/2026 12:02
गुरु	07/12/2026 18:41
शनि	11/12/2026 16:05
बुध	15/12/2026 03:39
केतु	16/12/2026 14:03
शुक्र	20/12/2026 16:22
सूर्य	21/12/2026 21:52
चंद्र	23/12/2026 23:01
मंगल	25/12/2026 09:26

शनि - शुक्र - बुध - गुरु	
25/12/2026 09:26	
16/01/2027 05:46	
गुरु	28/12/2026 07:20
शनि	31/12/2026 18:22
बुध	03/01/2027 20:38
केतु	05/01/2027 03:14
शुक्र	08/01/2027 18:37
सूर्य	09/01/2027 20:50
चंद्र	11/01/2027 16:32
मंगल	12/01/2027 23:07
राहु	16/01/2027 05:46

शनि - शुक्र - बुध - शनि	
16/01/2027 05:46	
11/02/2027 04:25	
शनि	20/01/2027 08:21
बुध	24/01/2027 00:34
केतु	25/01/2027 12:53
शुक्र	29/01/2027 20:39
सूर्य	31/01/2027 03:47
चंद्र	02/02/2027 07:40
मंगल	03/02/2027 20:00
राहु	07/02/2027 17:24
गुरु	11/02/2027 04:25

शनि - शुक्र - केतु - केतु	
11/02/2027 04:25	
15/02/2027 02:52	
केतु	11/02/2027 09:55
शुक्र	12/02/2027 01:40
सूर्य	12/02/2027 06:23
चंद्र	12/02/2027 14:16
मंगल	12/02/2027 19:46
राहु	13/02/2027 09:56
गुरु	13/02/2027 22:32
शनि	14/02/2027 13:29
बुध	15/02/2027 02:52

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 0 वर्ष 11 मास 20 दिन

सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष	
24/09/1999		13/09/2000		13/09/2012		14/09/2025		14/09/2039	
13/09/2000		13/09/2012		14/09/2025		14/09/2039		14/09/2054	
	00/00/0000	मंगल	11/12/2001	गुरु	28/02/2014	शनि	24/05/2027	केतु	23/08/2041
	00/00/0000	गुरु	16/04/2003	शनि	24/09/2015	केतु	15/03/2029	चंद्र	17/09/2043
	00/00/0000	शनि	26/09/2004	केतु	30/05/2017	चंद्र	18/02/2031	बुध	28/11/2045
	00/00/0000	केतु	16/04/2006	चंद्र	16/03/2019	बुध	09/03/2033	शुक्र	27/03/2048
	00/00/0000	चंद्र	11/12/2007	बुध	08/02/2021	शुक्र	11/05/2035	सूर्य	29/08/2049
	00/00/0000	बुध	14/09/2009	शुक्र	15/02/2023	सूर्य	07/09/2036	मंगल	19/03/2051
	24/09/1999	शुक्र	26/07/2011	सूर्य	11/05/2024	मंगल	18/02/2038	गुरु	22/11/2052
शुक्र	13/09/2000	सूर्य	13/09/2012	मंगल	14/09/2025	गुरु	14/09/2039	शनि	14/09/2054

चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष	
14/09/2054		14/09/2070		14/09/2087		15/09/2105	
14/09/2070		14/09/2087		15/09/2105		25/09/2115	
चंद्र	28/11/2056	बुध	12/03/2073	शुक्र	30/06/2090	सूर्य	01/10/2106
बुध	03/04/2059	शुक्र	31/10/2075	सूर्य	15/03/2092	मंगल	20/11/2107
शुक्र	26/09/2061	सूर्य	11/06/2077	मंगल	24/01/2094	गुरु	13/02/2109
सूर्य	03/04/2063	मंगल	16/03/2079	गुरु	31/01/2096	शनि	12/06/2110
मंगल	28/11/2064	गुरु	08/02/2081	शनि	03/04/2098	केतु	14/11/2111
गुरु	14/09/2066	शनि	28/02/2083	केतु	01/08/2100	चंद्र	21/05/2113
शनि	19/08/2068	केतु	11/05/2085	चंद्र	25/01/2103	बुध	31/12/2114
केतु	14/09/2070	चंद्र	14/09/2087	बुध	15/09/2105	शुक्र	25/09/2115

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
24/09/1999		13/09/2000		11/12/2001		16/04/2003		26/09/2004	
13/09/2000		11/12/2001		16/04/2003		26/09/2004		16/04/2006	
	00/00/0000	मंगल	30/10/2000	गुरु	04/02/2002	शनि	19/06/2003	केतु	08/12/2004
	00/00/0000	गुरु	20/12/2000	शनि	04/04/2002	केतु	26/08/2003	चंद्र	25/02/2005
	24/09/1999	शनि	13/02/2001	केतु	07/06/2002	चंद्र	07/11/2003	बुध	19/05/2005
गुरु	16/10/1999	केतु	13/04/2001	चंद्र	13/08/2002	बुध	24/01/2004	शुक्र	15/08/2005
शनि	30/12/1999	चंद्र	14/06/2001	बुध	24/10/2002	शुक्र	15/04/2004	सूर्य	07/10/2005
केतु	20/03/2000	बुध	20/08/2001	शुक्र	09/01/2003	सूर्य	04/06/2004	मंगल	05/12/2005
चंद्र	14/06/2000	शुक्र	29/10/2001	सूर्य	24/02/2003	मंगल	29/07/2004	गुरु	06/02/2006
बुध	13/09/2000	सूर्य	11/12/2001	मंगल	16/04/2003	गुरु	26/09/2004	शनि	16/04/2006

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
16/04/2006		11/12/2007		14/09/2009		26/07/2011		13/09/2012	
11/12/2007		14/09/2009		26/07/2011		13/09/2012		28/02/2014	
चंद्र	08/07/2006	बुध	15/03/2008	शुक्र	28/12/2009	सूर्य	03/09/2011	गुरु	12/11/2012
बुध	05/10/2006	शुक्र	22/06/2008	सूर्य	03/03/2010	मंगल	16/10/2011	शनि	15/01/2013
शुक्र	07/01/2007	सूर्य	22/08/2008	मंगल	12/05/2010	गुरु	02/12/2011	केतु	25/03/2013
सूर्य	05/03/2007	मंगल	28/10/2008	गुरु	27/07/2010	शनि	21/01/2012	चंद्र	07/06/2013
मंगल	06/05/2007	गुरु	08/01/2009	शनि	17/10/2010	केतु	15/03/2012	बुध	24/08/2013
गुरु	13/07/2007	शनि	26/03/2009	केतु	13/01/2011	चंद्र	11/05/2012	शुक्र	14/11/2013
शनि	24/09/2007	केतु	17/06/2009	चंद्र	17/04/2011	बुध	11/07/2012	सूर्य	04/01/2014
केतु	11/12/2007	चंद्र	14/09/2009	बुध	26/07/2011	शुक्र	13/09/2012	मंगल	28/02/2014

गुरु - शनि		गुरु - केतु		गुरु - चंद्र		गुरु - बुध		गुरु - शुक्र	
28/02/2014		24/09/2015		30/05/2017		16/03/2019		08/02/2021	
24/09/2015		30/05/2017		16/03/2019		08/02/2021		15/02/2023	
शनि	08/05/2014	केतु	12/12/2015	चंद्र	28/08/2017	बुध	26/06/2019	शुक्र	03/06/2021
केतु	21/07/2014	चंद्र	06/03/2016	बुध	02/12/2017	शुक्र	12/10/2019	सूर्य	12/08/2021
चंद्र	08/10/2014	बुध	04/06/2016	शुक्र	14/03/2018	सूर्य	17/12/2019	मंगल	27/10/2021
बुध	31/12/2014	शुक्र	07/09/2016	सूर्य	15/05/2018	मंगल	27/02/2020	गुरु	17/01/2022
शुक्र	30/03/2015	सूर्य	04/11/2016	मंगल	21/07/2018	गुरु	14/05/2020	शनि	16/04/2022
सूर्य	23/05/2015	मंगल	07/01/2017	गुरु	03/10/2018	शनि	06/08/2020	केतु	21/07/2022
मंगल	21/07/2015	गुरु	17/03/2017	शनि	21/12/2018	केतु	04/11/2020	चंद्र	30/10/2022
गुरु	24/09/2015	शनि	30/05/2017	केतु	16/03/2019	चंद्र	08/02/2021	बुध	15/02/2023

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु		शनि - चंद्र	
15/02/2023		11/05/2024		14/09/2025		24/05/2027		15/03/2029	
11/05/2024		14/09/2025		24/05/2027		15/03/2029		18/02/2031	
सूर्य	30/03/2023	मंगल	30/06/2024	शनि	27/11/2025	केतु	17/08/2027	चंद्र	20/06/2029
मंगल	16/05/2023	गुरु	24/08/2024	केतु	15/02/2026	चंद्र	17/11/2027	बुध	02/10/2029
गुरु	05/07/2023	शनि	23/10/2024	चंद्र	11/05/2026	बुध	21/02/2028	शुक्र	19/01/2030
शनि	28/08/2023	केतु	25/12/2024	बुध	10/08/2026	शुक्र	03/06/2028	सूर्य	27/03/2030
केतु	26/10/2023	चंद्र	03/03/2025	शुक्र	13/11/2026	सूर्य	05/08/2028	मंगल	08/06/2030
चंद्र	27/12/2023	बुध	14/05/2025	सूर्य	11/01/2027	मंगल	12/10/2028	गुरु	26/08/2030
बुध	02/03/2024	शुक्र	29/07/2025	मंगल	16/03/2027	गुरु	25/12/2028	शनि	19/11/2030
शुक्र	11/05/2024	सूर्य	14/09/2025	गुरु	24/05/2027	शनि	15/03/2029	केतु	18/02/2031

शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल		शनि - गुरु	
18/02/2031		09/03/2033		11/05/2035		07/09/2036		18/02/2038	
09/03/2033		11/05/2035		07/09/2036		18/02/2038		14/09/2039	
बुध	08/06/2031	शुक्र	10/07/2033	सूर्य	26/06/2035	मंगल	01/11/2036	गुरु	23/04/2038
शुक्र	02/10/2031	सूर्य	23/09/2033	मंगल	15/08/2035	गुरु	30/12/2036	शनि	02/07/2038
सूर्य	13/12/2031	मंगल	14/12/2033	गुरु	09/10/2035	शनि	04/03/2037	केतु	14/09/2038
मंगल	28/02/2032	गुरु	13/03/2034	शनि	06/12/2035	केतु	11/05/2037	चंद्र	02/12/2038
गुरु	22/05/2032	शनि	17/06/2034	केतु	07/02/2036	चंद्र	23/07/2037	बुध	24/02/2039
शनि	21/08/2032	केतु	28/09/2034	चंद्र	14/04/2036	बुध	09/10/2037	शुक्र	24/05/2039
केतु	25/11/2032	चंद्र	15/01/2035	बुध	24/06/2036	शुक्र	30/12/2037	सूर्य	17/07/2039
चंद्र	09/03/2033	बुध	11/05/2035	शुक्र	07/09/2036	सूर्य	18/02/2038	मंगल	14/09/2039

केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य	
14/09/2039		23/08/2041		17/09/2043		28/11/2045		27/03/2048	
23/08/2041		17/09/2043		28/11/2045		27/03/2048		29/08/2049	
केतु	15/12/2039	चंद्र	05/12/2041	बुध	13/01/2044	शुक्र	09/04/2046	सूर्य	16/05/2048
चंद्र	22/03/2040	बुध	26/03/2042	शुक्र	17/05/2044	सूर्य	29/06/2046	मंगल	08/07/2048
बुध	03/07/2040	शुक्र	21/07/2042	सूर्य	01/08/2044	मंगल	25/09/2046	गुरु	05/09/2048
शुक्र	21/10/2040	सूर्य	01/10/2042	मंगल	23/10/2044	गुरु	29/12/2046	शनि	06/11/2048
सूर्य	27/12/2040	मंगल	18/12/2042	गुरु	21/01/2045	शनि	11/04/2047	केतु	13/01/2049
मंगल	11/03/2041	गुरु	12/03/2043	शनि	28/04/2045	केतु	30/07/2047	चंद्र	25/03/2049
गुरु	29/05/2041	शनि	12/06/2043	केतु	10/08/2045	चंद्र	24/11/2047	बुध	09/06/2049
शनि	23/08/2041	केतु	17/09/2043	चंद्र	28/11/2045	बुध	27/03/2048	शुक्र	29/08/2049

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल		केतु - गुरु		केतु - शनि		चंद्र - चंद्र		चंद्र - बुध	
29/08/2049		19/03/2051		22/11/2052		14/09/2054		28/11/2056	
19/03/2051		22/11/2052		14/09/2054		28/11/2056		03/04/2059	
मंगल	27/10/2049	गुरु	27/05/2051	शनि	10/02/2053	चंद्र	03/01/2055	बुध	03/04/2057
गुरु	29/12/2049	शनि	09/08/2051	केतु	06/05/2053	बुध	01/05/2055	शुक्र	13/08/2057
शनि	08/03/2050	केतु	27/10/2051	चंद्र	05/08/2053	शुक्र	03/09/2055	सूर्य	03/11/2057
केतु	20/05/2050	चंद्र	20/01/2052	बुध	10/11/2053	सूर्य	19/11/2055	मंगल	30/01/2058
चंद्र	06/08/2050	बुध	19/04/2052	शुक्र	21/02/2054	मंगल	10/02/2056	गुरु	06/05/2058
बुध	28/10/2050	शुक्र	23/07/2052	सूर्य	24/04/2054	गुरु	11/05/2056	शनि	18/08/2058
शुक्र	24/01/2051	सूर्य	19/09/2052	मंगल	02/07/2054	शनि	16/08/2056	केतु	06/12/2058
सूर्य	19/03/2051	मंगल	22/11/2052	गुरु	14/09/2054	केतु	28/11/2056	चंद्र	03/04/2059

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		चंद्र - मंगल		चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि	
03/04/2059		26/09/2061		03/04/2063		28/11/2064		14/09/2066	
26/09/2061		03/04/2063		28/11/2064		14/09/2066		19/08/2068	
शुक्र	22/08/2059	सूर्य	18/11/2061	मंगल	05/06/2063	गुरु	09/02/2065	शनि	08/12/2066
सूर्य	16/11/2059	मंगल	14/01/2062	गुरु	12/08/2063	शनि	29/04/2065	केतु	09/03/2067
मंगल	18/02/2060	गुरु	17/03/2062	शनि	24/10/2063	केतु	23/07/2065	चंद्र	15/06/2067
गुरु	30/05/2060	शनि	23/05/2062	केतु	10/01/2064	चंद्र	21/10/2065	बुध	26/09/2067
शनि	16/09/2060	केतु	03/08/2062	चंद्र	02/04/2064	बुध	25/01/2066	शुक्र	13/01/2068
केतु	11/01/2061	चंद्र	18/10/2062	बुध	30/06/2064	शुक्र	07/05/2066	सूर्य	20/03/2068
चंद्र	16/05/2061	बुध	07/01/2063	शुक्र	02/10/2064	सूर्य	08/07/2066	मंगल	01/06/2068
बुध	26/09/2061	शुक्र	03/04/2063	सूर्य	28/11/2064	मंगल	14/09/2066	गुरु	19/08/2068

चंद्र - केतु		बुध - बुध		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - मंगल	
19/08/2068		14/09/2070		12/03/2073		31/10/2075		11/06/2077	
14/09/2070		12/03/2073		31/10/2075		11/06/2077		16/03/2079	
केतु	25/11/2068	बुध	25/01/2071	शुक्र	08/08/2073	सूर्य	26/12/2075	मंगल	17/08/2077
चंद्र	09/03/2069	शुक्र	16/06/2071	सूर्य	08/11/2073	मंगल	25/02/2076	गुरु	28/10/2077
बुध	28/06/2069	सूर्य	10/09/2071	मंगल	15/02/2074	गुरु	01/05/2076	शनि	13/01/2078
शुक्र	23/10/2069	मंगल	13/12/2071	गुरु	03/06/2074	शनि	11/07/2076	केतु	06/04/2078
सूर्य	03/01/2070	गुरु	24/03/2072	शनि	28/09/2074	केतु	25/09/2076	चंद्र	04/07/2078
मंगल	22/03/2070	शनि	12/07/2072	केतु	30/01/2075	चंद्र	16/12/2076	बुध	06/10/2078
गुरु	15/06/2070	केतु	06/11/2072	चंद्र	12/06/2075	बुध	12/03/2077	शुक्र	14/01/2079
शनि	14/09/2070	चंद्र	12/03/2073	बुध	31/10/2075	शुक्र	11/06/2077	सूर्य	16/03/2079

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र		शुक्र - शुक्र	
16/03/2079		08/02/2081		28/02/2083		11/05/2085		14/09/2087	
08/02/2081		28/02/2083		11/05/2085		14/09/2087		30/06/2090	
गुरु	02/06/2079	शनि	10/05/2081	केतु	12/06/2083	चंद्र	06/09/2085	शुक्र	20/02/2088
शनि	25/08/2079	केतु	15/08/2081	चंद्र	30/09/2083	बुध	09/01/2086	सूर्य	26/05/2088
केतु	23/11/2079	चंद्र	26/11/2081	बुध	26/01/2084	शुक्र	22/05/2086	मंगल	09/09/2088
चंद्र	27/02/2080	बुध	16/03/2082	शुक्र	30/05/2084	सूर्य	12/08/2086	गुरु	01/01/2089
बुध	07/06/2080	शुक्र	10/07/2082	सूर्य	14/08/2084	मंगल	08/11/2086	शनि	04/05/2089
शुक्र	23/09/2080	सूर्य	19/09/2082	मंगल	05/11/2084	गुरु	12/02/2087	केतु	13/09/2089
सूर्य	28/11/2080	मंगल	06/12/2082	गुरु	03/02/2085	शनि	26/05/2087	चंद्र	01/02/2090
मंगल	08/02/2081	गुरु	28/02/2083	शनि	11/05/2085	केतु	14/09/2087	बुध	30/06/2090

शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - केतु	
30/06/2090		15/03/2092		24/01/2094		31/01/2096		03/04/2098	
15/03/2092		24/01/2094		31/01/2096		03/04/2098		01/08/2100	
सूर्य	29/08/2090	मंगल	24/05/2092	गुरु	17/04/2094	शनि	06/05/2096	केतु	22/07/2098
मंगल	01/11/2090	गुरु	08/08/2092	शनि	14/07/2094	केतु	16/08/2096	चंद्र	16/11/2098
गुरु	10/01/2091	शनि	29/10/2092	केतु	18/10/2094	चंद्र	04/12/2096	बुध	21/03/2099
शनि	26/03/2091	केतु	25/01/2093	चंद्र	27/01/2095	बुध	30/03/2097	शुक्र	31/07/2099
केतु	15/06/2091	चंद्र	29/04/2093	बुध	15/05/2095	शुक्र	31/07/2097	सूर्य	20/10/2099
चंद्र	09/09/2091	बुध	07/08/2093	शुक्र	07/09/2095	सूर्य	14/10/2097	मंगल	15/01/2100
बुध	09/12/2091	शुक्र	20/11/2093	सूर्य	16/11/2095	मंगल	04/01/2098	गुरु	21/04/2100
शुक्र	15/03/2092	सूर्य	24/01/2094	मंगल	31/01/2096	गुरु	03/04/2098	शनि	01/08/2100

शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल		सूर्य - गुरु	
01/08/2100		25/01/2103		15/09/2105		01/10/2106		20/11/2107	
25/01/2103		15/09/2105		01/10/2106		20/11/2107		13/02/2109	
चंद्र	04/12/2100	बुध	15/06/2103	सूर्य	21/10/2105	मंगल	13/11/2106	गुरु	10/01/2108
बुध	16/04/2101	शुक्र	12/11/2103	मंगल	29/11/2105	गुरु	29/12/2106	शनि	04/03/2108
शुक्र	04/09/2101	सूर्य	11/02/2104	गुरु	11/01/2106	शनि	17/02/2107	केतु	01/05/2108
सूर्य	29/11/2101	मंगल	21/05/2104	शनि	26/02/2106	केतु	12/04/2107	चंद्र	02/07/2108
मंगल	03/03/2102	गुरु	06/09/2104	केतु	16/04/2106	चंद्र	09/06/2107	बुध	06/09/2108
गुरु	12/06/2102	शनि	31/12/2104	चंद्र	08/06/2106	बुध	08/08/2107	शुक्र	15/11/2108
शनि	30/09/2102	केतु	05/05/2105	बुध	03/08/2106	शुक्र	12/10/2107	सूर्य	28/12/2108
केतु	25/01/2103	चंद्र	15/09/2105	शुक्र	01/10/2106	सूर्य	20/11/2107	मंगल	13/02/2109

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 1 वर्ष 0 मास 22 दिन

राहु 12 वर्ष		गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष	
24/09/1999		16/10/2000		17/06/2011		15/02/2024		17/06/2035	
16/10/2000		17/06/2011		15/02/2024		17/06/2035		15/02/2040	
	00/00/0000	गुरु	19/03/2002	शनि	18/06/2013	बुध	24/09/2025	केतु	24/09/2035
	00/00/0000	शनि	26/11/2003	बुध	05/04/2015	केतु	23/05/2026	शुक्र	04/07/2036
	00/00/0000	बुध	31/05/2005	केतु	31/12/2015	शुक्र	12/04/2028	सूर्य	28/09/2036
	00/00/0000	केतु	13/01/2006	शुक्र	09/02/2018	सूर्य	05/11/2028	चंद्र	17/02/2037
	00/00/0000	शुक्र	25/10/2007	सूर्य	28/09/2018	चंद्र	16/10/2029	मंगल	27/05/2037
	00/00/0000	सूर्य	06/05/2008	चंद्र	19/10/2019	मंगल	15/06/2030	राहु	07/02/2038
	24/09/1999	चंद्र	27/03/2009	मंगल	14/07/2020	राहु	25/02/2032	गुरु	22/09/2038
चंद्र	03/02/2000	मंगल	09/11/2009	राहु	08/06/2022	गुरु	30/08/2033	शनि	19/06/2039
मंगल	16/10/2000	राहु	17/06/2011	गुरु	15/02/2024	शनि	17/06/2035	बुध	15/02/2040

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
15/02/2040		16/06/2053		16/06/2057		15/02/2064		16/10/2068	
16/06/2053		16/06/2057		15/02/2064		16/10/2068		00/00/0000	
शुक्र	07/05/2042	सूर्य	28/08/2053	चंद्र	05/01/2058	मंगल	25/05/2064	राहु	04/08/2070
सूर्य	05/01/2043	चंद्र	28/12/2053	मंगल	27/05/2058	राहु	04/02/2065	गुरु	11/03/2072
चंद्र	15/02/2044	मंगल	23/03/2054	राहु	27/05/2059	गुरु	20/09/2065	शनि	03/02/2074
मंगल	25/11/2044	राहु	28/10/2054	गुरु	16/04/2060	शनि	17/06/2066	बुध	17/10/2075
राहु	26/11/2046	गुरु	11/05/2055	शनि	07/05/2061	बुध	13/02/2067	केतु	28/06/2076
गुरु	05/09/2048	शनि	29/12/2055	बुध	17/04/2062	केतु	23/05/2067	शुक्र	29/06/2078
शनि	16/10/2050	बुध	23/07/2056	केतु	06/09/2062	शुक्र	03/03/2068	सूर्य	03/02/2079
बुध	05/09/2052	केतु	16/10/2056	शुक्र	17/10/2063	सूर्य	27/05/2068	चंद्र	24/09/2079
केतु	16/06/2053	शुक्र	16/06/2057	सूर्य	15/02/2064	चंद्र	16/10/2068		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध	
24/09/1999		03/02/2000		16/10/2000		19/03/2002		26/11/2003	
03/02/2000		16/10/2000		19/03/2002		26/11/2003		31/05/2005	
	00/00/0000	मंगल	18/02/2000	गुरु	24/12/2000	शनि	25/06/2002	बुध	12/02/2004
	00/00/0000	राहु	27/03/2000	शनि	16/03/2001	बुध	20/09/2002	केतु	16/03/2004
	00/00/0000	गुरु	30/04/2000	बुध	29/05/2001	केतु	26/10/2002	शुक्र	15/06/2004
	00/00/0000	शनि	10/06/2000	केतु	28/06/2001	शुक्र	06/02/2003	सूर्य	13/07/2004
	24/09/1999	बुध	16/07/2000	शुक्र	23/09/2001	सूर्य	09/03/2003	चंद्र	28/08/2004
बुध	26/10/1999	केतु	31/07/2000	सूर्य	19/10/2001	चंद्र	29/04/2003	मंगल	29/09/2004
केतु	16/11/1999	शुक्र	12/09/2000	चंद्र	01/12/2001	मंगल	04/06/2003	राहु	21/12/2004
शुक्र	16/01/2000	सूर्य	24/09/2000	मंगल	31/12/2001	राहु	05/09/2003	गुरु	05/03/2005
सूर्य	03/02/2000	चंद्र	16/10/2000	राहु	19/03/2002	गुरु	26/11/2003	शनि	31/05/2005

गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल	
31/05/2005		13/01/2006		25/10/2007		06/05/2008		27/03/2009	
13/01/2006		25/10/2007		06/05/2008		27/03/2009		09/11/2009	
केतु	13/06/2005	शुक्र	02/05/2006	सूर्य	03/11/2007	चंद्र	03/06/2008	मंगल	09/04/2009
शुक्र	21/07/2005	सूर्य	03/06/2006	चंद्र	20/11/2007	मंगल	21/06/2008	राहु	13/05/2009
सूर्य	02/08/2005	चंद्र	27/07/2006	मंगल	01/12/2007	राहु	09/08/2008	गुरु	13/06/2009
चंद्र	20/08/2005	मंगल	03/09/2006	राहु	30/12/2007	गुरु	21/09/2008	शनि	19/07/2009
मंगल	03/09/2005	राहु	09/12/2006	गुरु	25/01/2008	शनि	12/11/2008	बुध	20/08/2009
राहु	07/10/2005	गुरु	06/03/2007	शनि	25/02/2008	बुध	28/12/2008	केतु	02/09/2009
गुरु	06/11/2005	शनि	17/06/2007	बुध	24/03/2008	केतु	16/01/2009	शुक्र	10/10/2009
शनि	12/12/2005	बुध	17/09/2007	केतु	04/04/2008	शुक्र	11/03/2009	सूर्य	21/10/2009
बुध	13/01/2006	केतु	25/10/2007	शुक्र	06/05/2008	सूर्य	27/03/2009	चंद्र	09/11/2009

गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र	
09/11/2009		17/06/2011		18/06/2013		05/04/2015		31/12/2015	
17/06/2011		18/06/2013		05/04/2015		31/12/2015		09/02/2018	
राहु	05/02/2010	शनि	11/10/2011	बुध	19/09/2013	केतु	20/04/2015	शुक्र	07/05/2016
गुरु	24/04/2010	बुध	23/01/2012	केतु	27/10/2013	शुक्र	04/06/2015	सूर्य	15/06/2016
शनि	25/07/2010	केतु	05/03/2012	शुक्र	14/02/2014	सूर्य	18/06/2015	चंद्र	18/08/2016
बुध	16/10/2010	शुक्र	05/07/2012	सूर्य	18/03/2014	चंद्र	10/07/2015	मंगल	02/10/2016
केतु	19/11/2010	सूर्य	11/08/2012	चंद्र	12/05/2014	मंगल	26/07/2015	राहु	26/01/2017
शुक्र	25/02/2011	चंद्र	11/10/2012	मंगल	19/06/2014	राहु	05/09/2015	गुरु	08/05/2017
सूर्य	26/03/2011	मंगल	23/11/2012	राहु	26/09/2014	गुरु	11/10/2015	शनि	07/09/2017
चंद्र	14/05/2011	राहु	13/03/2013	गुरु	22/12/2014	शनि	22/11/2015	बुध	26/12/2017
मंगल	17/06/2011	गुरु	18/06/2013	शनि	05/04/2015	बुध	31/12/2015	केतु	09/02/2018

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु		शनि - गुरु	
09/02/2018		28/09/2018		19/10/2019		14/07/2020		08/06/2022	
28/09/2018		19/10/2019		14/07/2020		08/06/2022		15/02/2024	
सूर्य	20/02/2018	चंद्र	30/10/2018	मंगल	03/11/2019	राहु	27/10/2020	गुरु	30/08/2022
चंद्र	12/03/2018	मंगल	22/11/2018	राहु	14/12/2019	गुरु	27/01/2021	शनि	05/12/2022
मंगल	25/03/2018	राहु	18/01/2019	गुरु	19/01/2020	शनि	17/05/2021	बुध	03/03/2023
राहु	29/04/2018	गुरु	11/03/2019	शनि	02/03/2020	बुध	23/08/2021	केतु	08/04/2023
गुरु	30/05/2018	शनि	11/05/2019	बुध	09/04/2020	केतु	03/10/2021	शुक्र	20/07/2023
शनि	05/07/2018	बुध	05/07/2019	केतु	24/04/2020	शुक्र	26/01/2022	सूर्य	19/08/2023
बुध	07/08/2018	केतु	27/07/2019	शुक्र	08/06/2020	सूर्य	02/03/2022	चंद्र	10/10/2023
केतु	20/08/2018	शुक्र	29/09/2019	सूर्य	22/06/2020	चंद्र	29/04/2022	मंगल	15/11/2023
शुक्र	28/09/2018	सूर्य	19/10/2019	चंद्र	14/07/2020	मंगल	08/06/2022	राहु	15/02/2024

बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र	
15/02/2024		24/09/2025		23/05/2026		12/04/2028		05/11/2028	
24/09/2025		23/05/2026		12/04/2028		05/11/2028		16/10/2029	
बुध	08/05/2024	केतु	08/10/2025	शुक्र	15/09/2026	सूर्य	22/04/2028	चंद्र	04/12/2028
केतु	12/06/2024	शुक्र	17/11/2025	सूर्य	20/10/2026	चंद्र	10/05/2028	मंगल	24/12/2028
शुक्र	17/09/2024	सूर्य	29/11/2025	चंद्र	16/12/2026	मंगल	22/05/2028	राहु	14/02/2029
सूर्य	17/10/2024	चंद्र	19/12/2025	मंगल	25/01/2027	राहु	22/06/2028	गुरु	01/04/2029
चंद्र	05/12/2024	मंगल	02/01/2026	राहु	09/05/2027	गुरु	19/07/2028	शनि	25/05/2029
मंगल	08/01/2025	राहु	08/02/2026	गुरु	09/08/2027	शनि	21/08/2028	बुध	13/07/2029
राहु	06/04/2025	गुरु	12/03/2026	शनि	26/11/2027	बुध	20/09/2028	केतु	02/08/2029
गुरु	23/06/2025	शनि	19/04/2026	बुध	03/03/2028	केतु	02/10/2028	शुक्र	29/09/2029
शनि	24/09/2025	बुध	23/05/2026	केतु	12/04/2028	शुक्र	05/11/2028	सूर्य	16/10/2029

बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि		केतु - केतु	
16/10/2029		15/06/2030		25/02/2032		30/08/2033		17/06/2035	
15/06/2030		25/02/2032		30/08/2033		17/06/2035		24/09/2035	
मंगल	30/10/2029	राहु	16/09/2030	गुरु	09/05/2032	शनि	12/12/2033	केतु	23/06/2035
राहु	05/12/2029	गुरु	07/12/2030	शनि	04/08/2032	बुध	15/03/2034	शुक्र	09/07/2035
गुरु	07/01/2030	शनि	16/03/2031	बुध	22/10/2032	केतु	22/04/2034	सूर्य	14/07/2035
शनि	14/02/2030	बुध	12/06/2031	केतु	23/11/2032	शुक्र	09/08/2034	चंद्र	22/07/2035
बुध	20/03/2030	केतु	18/07/2031	शुक्र	23/02/2033	सूर्य	11/09/2034	मंगल	28/07/2035
केतु	03/04/2030	शुक्र	29/10/2031	सूर्य	22/03/2033	चंद्र	05/11/2034	राहु	12/08/2035
शुक्र	13/05/2030	सूर्य	29/11/2031	चंद्र	07/05/2033	मंगल	13/12/2034	गुरु	25/08/2035
सूर्य	25/05/2030	चंद्र	20/01/2032	मंगल	09/06/2033	राहु	21/03/2035	शनि	10/09/2035
चंद्र	15/06/2030	मंगल	25/02/2032	राहु	30/08/2033	गुरु	17/06/2035	बुध	24/09/2035

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल		केतु - राहु	
24/09/2035		04/07/2036		28/09/2036		17/02/2037		27/05/2037	
04/07/2036		28/09/2036		17/02/2037		27/05/2037		07/02/2038	
शुक्र	11/11/2035	सूर्य	09/07/2036	चंद्र	09/10/2036	मंगल	22/02/2037	राहु	04/07/2037
सूर्य	25/11/2035	चंद्र	16/07/2036	मंगल	18/10/2036	राहु	09/03/2037	गुरु	07/08/2037
चंद्र	18/12/2035	मंगल	21/07/2036	राहु	08/11/2036	गुरु	23/03/2037	शनि	17/09/2037
मंगल	04/01/2036	राहु	02/08/2036	गुरु	27/11/2036	शनि	07/04/2037	बुध	23/10/2037
राहु	16/02/2036	गुरु	14/08/2036	शनि	19/12/2036	बुध	21/04/2037	केतु	07/11/2037
गुरु	25/03/2036	शनि	27/08/2036	बुध	09/01/2037	केतु	27/04/2037	शुक्र	20/12/2037
शनि	08/05/2036	बुध	08/09/2036	केतु	17/01/2037	शुक्र	14/05/2037	सूर्य	01/01/2038
बुध	18/06/2036	केतु	13/09/2036	शुक्र	09/02/2037	सूर्य	19/05/2037	चंद्र	23/01/2038
केतु	04/07/2036	शुक्र	28/09/2036	सूर्य	17/02/2037	चंद्र	27/05/2037	मंगल	07/02/2038

केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य	
07/02/2038		22/09/2038		19/06/2039		15/02/2040		07/05/2042	
22/09/2038		19/06/2039		15/02/2040		07/05/2042		05/01/2043	
गुरु	09/03/2038	शनि	04/11/2038	बुध	23/07/2039	शुक्र	30/06/2040	सूर्य	19/05/2042
शनि	14/04/2038	बुध	12/12/2038	केतु	06/08/2039	सूर्य	09/08/2040	चंद्र	08/06/2042
बुध	16/05/2038	केतु	28/12/2038	शुक्र	15/09/2039	चंद्र	16/10/2040	मंगल	23/06/2042
केतु	29/05/2038	शुक्र	11/02/2039	सूर्य	27/09/2039	मंगल	02/12/2040	राहु	29/07/2042
शुक्र	06/07/2038	सूर्य	24/02/2039	चंद्र	18/10/2039	राहु	03/04/2041	गुरु	31/08/2042
सूर्य	18/07/2038	चंद्र	19/03/2039	मंगल	01/11/2039	गुरु	20/07/2041	शनि	08/10/2042
चंद्र	06/08/2038	मंगल	03/04/2039	राहु	07/12/2039	शनि	26/11/2041	बुध	12/11/2042
मंगल	19/08/2038	राहु	14/05/2039	गुरु	08/01/2040	बुध	21/03/2042	केतु	26/11/2042
राहु	22/09/2038	गुरु	19/06/2039	शनि	15/02/2040	केतु	07/05/2042	शुक्र	05/01/2043

शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
05/01/2043		15/02/2044		25/11/2044		26/11/2046		05/09/2048	
15/02/2044		25/11/2044		26/11/2046		05/09/2048		16/10/2050	
चंद्र	08/02/2043	मंगल	03/03/2044	राहु	15/03/2045	गुरु	20/02/2047	शनि	05/01/2049
मंगल	04/03/2043	राहु	14/04/2044	गुरु	20/06/2045	शनि	03/06/2047	बुध	25/04/2049
राहु	04/05/2043	गुरु	22/05/2044	शनि	14/10/2045	बुध	03/09/2047	केतु	09/06/2049
गुरु	27/06/2043	शनि	06/07/2044	बुध	25/01/2046	केतु	11/10/2047	शुक्र	15/10/2049
शनि	30/08/2043	बुध	16/08/2044	केतु	09/03/2046	शुक्र	27/01/2048	सूर्य	23/11/2049
बुध	27/10/2043	केतु	01/09/2044	शुक्र	09/07/2046	सूर्य	29/02/2048	चंद्र	26/01/2050
केतु	19/11/2043	शुक्र	18/10/2044	सूर्य	14/08/2046	चंद्र	23/04/2048	मंगल	12/03/2050
शुक्र	26/01/2044	सूर्य	02/11/2044	चंद्र	14/10/2046	मंगल	31/05/2048	राहु	05/07/2050
सूर्य	15/02/2044	चंद्र	25/11/2044	मंगल	26/11/2046	राहु	05/09/2048	गुरु	16/10/2050

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल	
16/10/2050		05/09/2052		16/06/2053		28/08/2053		28/12/2053	
05/09/2052		16/06/2053		28/08/2053		28/12/2053		23/03/2054	
बुध	22/01/2051	केतु	22/09/2052	सूर्य	20/06/2053	चंद्र	07/09/2053	मंगल	02/01/2054
केतु	03/03/2051	शुक्र	08/11/2052	चंद्र	26/06/2053	मंगल	15/09/2053	राहु	15/01/2054
शुक्र	26/06/2051	सूर्य	22/11/2052	मंगल	30/06/2053	राहु	03/10/2053	गुरु	26/01/2054
सूर्य	31/07/2051	चंद्र	16/12/2052	राहु	11/07/2053	गुरु	19/10/2053	शनि	09/02/2054
चंद्र	26/09/2051	मंगल	02/01/2053	गुरु	21/07/2053	शनि	07/11/2053	बुध	21/02/2054
मंगल	05/11/2051	राहु	13/02/2053	शनि	02/08/2053	बुध	25/11/2053	केतु	26/02/2054
राहु	17/02/2052	गुरु	23/03/2053	बुध	12/08/2053	केतु	02/12/2053	शुक्र	12/03/2054
गुरु	19/05/2052	शनि	07/05/2053	केतु	16/08/2053	शुक्र	22/12/2053	सूर्य	16/03/2054
शनि	05/09/2052	बुध	16/06/2053	शुक्र	28/08/2053	सूर्य	28/12/2053	चंद्र	23/03/2054

सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध		सूर्य - केतु	
23/03/2054		28/10/2054		11/05/2055		29/12/2055		23/07/2056	
28/10/2054		11/05/2055		29/12/2055		23/07/2056		16/10/2056	
राहु	25/04/2054	गुरु	23/11/2054	शनि	17/06/2055	बुध	27/01/2056	केतु	28/07/2056
गुरु	24/05/2054	शनि	24/12/2054	बुध	20/07/2055	केतु	08/02/2056	शुक्र	11/08/2056
शनि	28/06/2054	बुध	21/01/2055	केतु	02/08/2055	शुक्र	13/03/2056	सूर्य	15/08/2056
बुध	29/07/2054	केतु	01/02/2055	शुक्र	10/09/2055	सूर्य	24/03/2056	चंद्र	22/08/2056
केतु	11/08/2054	शुक्र	06/03/2055	सूर्य	21/09/2055	चंद्र	10/04/2056	मंगल	27/08/2056
शुक्र	16/09/2054	सूर्य	15/03/2055	चंद्र	11/10/2055	मंगल	22/04/2056	राहु	09/09/2056
सूर्य	27/09/2054	चंद्र	01/04/2055	मंगल	24/10/2055	राहु	23/05/2056	गुरु	20/09/2056
चंद्र	16/10/2054	मंगल	12/04/2055	राहु	28/11/2055	गुरु	20/06/2056	शनि	04/10/2056
मंगल	28/10/2054	राहु	11/05/2055	गुरु	29/12/2055	शनि	23/07/2056	बुध	16/10/2056

सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
16/10/2056		16/06/2057		05/01/2058		27/05/2058		27/05/2059	
16/06/2057		05/01/2058		27/05/2058		27/05/2059		16/04/2060	
शुक्र	25/11/2056	चंद्र	03/07/2057	मंगल	13/01/2058	राहु	21/07/2058	गुरु	10/07/2059
सूर्य	08/12/2056	मंगल	15/07/2057	राहु	04/02/2058	गुरु	08/09/2058	शनि	30/08/2059
चंद्र	28/12/2056	राहु	14/08/2057	गुरु	23/02/2058	शनि	05/11/2058	बुध	15/10/2059
मंगल	11/01/2057	गुरु	11/09/2057	शनि	17/03/2058	बुध	26/12/2058	केतु	03/11/2059
राहु	17/02/2057	शनि	13/10/2057	बुध	06/04/2058	केतु	17/01/2059	शुक्र	27/12/2059
गुरु	21/03/2057	बुध	10/11/2057	केतु	15/04/2058	शुक्र	18/03/2059	सूर्य	12/01/2060
शनि	29/04/2057	केतु	22/11/2057	शुक्र	08/05/2058	सूर्य	06/04/2059	चंद्र	09/02/2060
बुध	02/06/2057	शुक्र	26/12/2057	सूर्य	15/05/2058	चंद्र	06/05/2059	मंगल	27/02/2060
केतु	16/06/2057	सूर्य	05/01/2058	चंद्र	27/05/2058	मंगल	27/05/2059	राहु	16/04/2060

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
16/04/2060		07/05/2061		17/04/2062		06/09/2062		17/10/2063	
07/05/2061		17/04/2062		06/09/2062		17/10/2063		15/02/2064	
शनि	16/06/2060	बुध	25/06/2061	केतु	25/04/2062	शुक्र	12/11/2062	सूर्य	23/10/2063
बुध	10/08/2060	केतु	15/07/2061	शुक्र	19/05/2062	सूर्य	03/12/2062	चंद्र	02/11/2063
केतु	01/09/2060	शुक्र	10/09/2061	सूर्य	26/05/2062	चंद्र	05/01/2063	मंगल	09/11/2063
शुक्र	05/11/2060	सूर्य	27/09/2061	चंद्र	07/06/2062	मंगल	29/01/2063	राहु	27/11/2063
सूर्य	24/11/2060	चंद्र	26/10/2061	मंगल	15/06/2062	राहु	31/03/2063	गुरु	13/12/2063
चंद्र	26/12/2060	मंगल	15/11/2061	राहु	06/07/2062	गुरु	24/05/2063	शनि	02/01/2064
मंगल	17/01/2061	राहु	06/01/2062	गुरु	25/07/2062	शनि	27/07/2063	बुध	19/01/2064
राहु	16/03/2061	गुरु	21/02/2062	शनि	17/08/2062	बुध	23/09/2063	केतु	26/01/2064
गुरु	07/05/2061	शनि	17/04/2062	बुध	06/09/2062	केतु	17/10/2063	शुक्र	15/02/2064

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध	
15/02/2064		25/05/2064		04/02/2065		20/09/2065		17/06/2066	
25/05/2064		04/02/2065		20/09/2065		17/06/2066		13/02/2067	
मंगल	21/02/2064	राहु	02/07/2064	गुरु	07/03/2065	शनि	01/11/2065	बुध	21/07/2066
राहु	07/03/2064	गुरु	05/08/2064	शनि	12/04/2065	बुध	10/12/2065	केतु	04/08/2066
गुरु	20/03/2064	शनि	15/09/2064	बुध	14/05/2065	केतु	25/12/2065	शुक्र	13/09/2066
शनि	05/04/2064	बुध	21/10/2064	केतु	27/05/2065	शुक्र	08/02/2066	सूर्य	25/09/2066
बुध	19/04/2064	केतु	05/11/2064	शुक्र	04/07/2065	सूर्य	22/02/2066	चंद्र	15/10/2066
केतु	25/04/2064	शुक्र	17/12/2064	सूर्य	15/07/2065	चंद्र	16/03/2066	मंगल	29/10/2066
शुक्र	11/05/2064	सूर्य	30/12/2064	चंद्र	03/08/2065	मंगल	01/04/2066	राहु	05/12/2066
सूर्य	16/05/2064	चंद्र	20/01/2065	मंगल	17/08/2065	राहु	12/05/2066	गुरु	06/01/2067
चंद्र	25/05/2064	मंगल	04/02/2065	राहु	20/09/2065	गुरु	17/06/2066	शनि	13/02/2067

मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु	
13/02/2067		23/05/2067		03/03/2068		27/05/2068		16/10/2068	
23/05/2067		03/03/2068		27/05/2068		16/10/2068		04/08/2070	
केतु	19/02/2067	शुक्र	10/07/2067	सूर्य	07/03/2068	चंद्र	08/06/2068	राहु	22/01/2069
शुक्र	07/03/2067	सूर्य	24/07/2067	चंद्र	14/03/2068	मंगल	16/06/2068	गुरु	20/04/2069
सूर्य	12/03/2067	चंद्र	17/08/2067	मंगल	19/03/2068	राहु	07/07/2068	शनि	02/08/2069
चंद्र	21/03/2067	मंगल	02/09/2067	राहु	01/04/2068	गुरु	26/07/2068	बुध	03/11/2069
मंगल	26/03/2067	राहु	15/10/2067	गुरु	12/04/2068	शनि	18/08/2068	केतु	12/12/2069
राहु	10/04/2067	गुरु	22/11/2067	शनि	25/04/2068	बुध	07/09/2068	शुक्र	31/03/2070
गुरु	24/04/2067	शनि	06/01/2068	बुध	08/05/2068	केतु	15/09/2068	सूर्य	03/05/2070
शनि	09/05/2067	बुध	15/02/2068	केतु	13/05/2068	शुक्र	09/10/2068	चंद्र	27/06/2070
बुध	23/05/2067	केतु	03/03/2068	शुक्र	27/05/2068	सूर्य	16/10/2068	मंगल	04/08/2070

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 6 वर्ष 10 मास 22 दिन

गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष	
24/09/1999		16/08/2006		16/08/2018		16/08/2039		16/08/2045	
16/08/2006		16/08/2018		16/08/2039		16/08/2045		15/08/2060	
	00/00/0000	राहु	16/12/2007	शुक्र	15/09/2022	सूर्य	16/12/2039	चंद्र	16/09/2047
	00/00/0000	शुक्र	16/04/2010	सूर्य	15/11/2023	चंद्र	15/10/2040	मंगल	25/10/2048
	00/00/0000	सूर्य	16/12/2010	चंद्र	16/10/2026	मंगल	27/03/2041	बुध	07/03/2051
	24/09/1999	चंद्र	15/08/2012	मंगल	06/05/2028	बुध	06/03/2042	शनि	26/07/2052
चंद्र	19/06/2000	मंगल	06/07/2013	बुध	26/08/2031	शनि	25/09/2042	गुरु	17/03/2055
मंगल	15/11/2001	बुध	27/05/2015	शनि	05/08/2033	गुरु	16/10/2043	राहु	15/11/2056
बुध	11/11/2004	शनि	06/07/2016	गुरु	16/04/2037	राहु	15/06/2044	शुक्र	16/10/2059
शनि	16/08/2006	गुरु	16/08/2018	राहु	16/08/2039	शुक्र	16/08/2045	सूर्य	15/08/2060

मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष		शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष	
15/08/2060		15/08/2068		16/08/2085		16/08/2095	
15/08/2068		16/08/2085		16/08/2095		00/00/0000	
मंगल	20/03/2061	बुध	20/04/2071	शनि	20/07/2086	गुरु	19/12/2098
बुध	23/06/2062	शनि	15/11/2072	गुरु	22/04/2088	राहु	29/01/2101
शनि	20/03/2063	गुरु	12/11/2075	राहु	02/06/2089	शुक्र	09/10/2104
गुरु	15/08/2064	राहु	02/10/2077	शुक्र	13/05/2091	सूर्य	30/10/2105
राहु	06/07/2065	शुक्र	21/01/2081	सूर्य	02/12/2091	चंद्र	25/09/2107
शुक्र	25/01/2067	सूर्य	01/01/2082	चंद्र	23/04/2093		00/00/0000
सूर्य	06/07/2067	चंद्र	13/05/2084	मंगल	18/01/2094		00/00/0000
चंद्र	15/08/2068	मंगल	16/08/2085	बुध	16/08/2095		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - बुध		गुरु - शनि		राहु - राहु	
24/09/1999		19/06/2000		15/11/2001		11/11/2004		16/08/2006	
19/06/2000		15/11/2001		11/11/2004		16/08/2006		16/12/2007	
	00/00/0000	मंगल	27/07/2000	बुध	06/05/2002	शनि	10/01/2005	राहु	09/10/2006
	00/00/0000	बुध	16/10/2000	शनि	15/08/2002	गुरु	03/05/2005	शुक्र	12/01/2007
	00/00/0000	शनि	02/12/2000	गुरु	23/02/2003	राहु	13/07/2005	सूर्य	08/02/2007
	00/00/0000	गुरु	03/03/2001	राहु	25/06/2003	शुक्र	15/11/2005	चंद्र	16/04/2007
	24/09/1999	राहु	29/04/2001	शुक्र	23/01/2004	सूर्य	21/12/2005	मंगल	22/05/2007
राहु	22/10/1999	शुक्र	07/08/2001	सूर्य	24/03/2004	चंद्र	20/03/2006	बुध	07/08/2007
शुक्र	26/04/2000	सूर्य	04/09/2001	चंद्र	22/08/2004	मंगल	07/05/2006	शनि	21/09/2007
सूर्य	19/06/2000	चंद्र	15/11/2001	मंगल	11/11/2004	बुध	16/08/2006	गुरु	16/12/2007

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		राहु - बुध	
16/12/2007		16/04/2010		16/12/2010		15/08/2012		06/07/2013	
16/04/2010		16/12/2010		15/08/2012		06/07/2013		27/05/2015	
शुक्र	30/05/2008	सूर्य	30/04/2010	चंद्र	10/03/2011	मंगल	08/09/2012	बुध	23/10/2013
सूर्य	16/07/2008	चंद्र	02/06/2010	मंगल	24/04/2011	बुध	29/10/2012	शनि	25/12/2013
चंद्र	11/11/2008	मंगल	20/06/2010	बुध	29/07/2011	शनि	29/11/2012	गुरु	26/04/2014
मंगल	13/01/2009	बुध	29/07/2010	शनि	23/09/2011	गुरु	25/01/2013	राहु	11/07/2014
बुध	28/05/2009	शनि	20/08/2010	गुरु	08/01/2012	राहु	02/03/2013	शुक्र	23/11/2014
शनि	14/08/2009	गुरु	02/10/2010	राहु	16/03/2012	शुक्र	04/05/2013	सूर्य	31/12/2014
गुरु	11/01/2010	राहु	29/10/2010	शुक्र	12/07/2012	सूर्य	22/05/2013	चंद्र	06/04/2015
राहु	16/04/2010	शुक्र	16/12/2010	सूर्य	15/08/2012	चंद्र	06/07/2013	मंगल	27/05/2015

राहु - शनि		राहु - गुरु		शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र	
27/05/2015		06/07/2016		16/08/2018		15/09/2022		15/11/2023	
06/07/2016		16/08/2018		15/09/2022		15/11/2023		16/10/2026	
शनि	03/07/2015	गुरु	18/11/2016	शुक्र	02/06/2019	सूर्य	09/10/2022	चंद्र	11/04/2024
गुरु	13/09/2015	राहु	12/02/2017	सूर्य	24/08/2019	चंद्र	07/12/2022	मंगल	29/06/2024
राहु	28/10/2015	शुक्र	12/07/2017	चंद्र	18/03/2020	मंगल	08/01/2023	बुध	14/12/2024
शुक्र	15/01/2016	सूर्य	24/08/2017	मंगल	06/07/2020	बुध	16/03/2023	शनि	23/03/2025
सूर्य	06/02/2016	चंद्र	09/12/2017	बुध	26/02/2021	शनि	24/04/2023	गुरु	26/09/2025
चंद्र	03/04/2016	मंगल	04/02/2018	शनि	14/07/2021	गुरु	08/07/2023	राहु	22/01/2026
मंगल	03/05/2016	बुध	05/06/2018	गुरु	03/04/2022	राहु	25/08/2023	शुक्र	18/08/2026
बुध	06/07/2016	शनि	16/08/2018	राहु	15/09/2022	शुक्र	15/11/2023	सूर्य	16/10/2026

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध		शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु	
16/10/2026		06/05/2028		26/08/2031		05/08/2033		16/04/2037	
06/05/2028		26/08/2031		05/08/2033		16/04/2037		16/08/2039	
मंगल	27/11/2026	बुध	12/11/2028	शनि	31/10/2031	गुरु	31/03/2034	राहु	20/07/2037
बुध	24/02/2027	शनि	04/03/2029	गुरु	04/03/2032	राहु	28/08/2034	शुक्र	01/01/2038
शनि	18/04/2027	गुरु	02/10/2029	राहु	22/05/2032	शुक्र	17/05/2035	सूर्य	18/02/2038
गुरु	27/07/2027	राहु	13/02/2030	शुक्र	07/10/2032	सूर्य	31/07/2035	चंद्र	16/06/2038
राहु	28/09/2027	शुक्र	06/10/2030	सूर्य	15/11/2032	चंद्र	04/02/2036	मंगल	18/08/2038
शुक्र	16/01/2028	सूर्य	12/12/2030	चंद्र	22/02/2033	मंगल	13/05/2036	बुध	30/12/2038
सूर्य	17/02/2028	चंद्र	29/05/2031	मंगल	16/04/2033	बुध	12/12/2036	शनि	19/03/2039
चंद्र	06/05/2028	मंगल	26/08/2031	बुध	05/08/2033	शनि	16/04/2037	गुरु	16/08/2039

सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि	
16/08/2039		16/12/2039		15/10/2040		27/03/2041		06/03/2042	
16/12/2039		15/10/2040		27/03/2041		06/03/2042		25/09/2042	
सूर्य	23/08/2039	चंद्र	27/01/2040	मंगल	27/10/2040	बुध	20/05/2041	शनि	25/03/2042
चंद्र	09/09/2039	मंगल	19/02/2040	बुध	22/11/2040	शनि	21/06/2041	गुरु	30/04/2042
मंगल	18/09/2039	बुध	07/04/2040	शनि	07/12/2040	गुरु	20/08/2041	राहु	23/05/2042
बुध	07/10/2039	शनि	05/05/2040	गुरु	04/01/2041	राहु	28/09/2041	शुक्र	01/07/2042
शनि	18/10/2039	गुरु	27/06/2040	राहु	22/01/2041	शुक्र	04/12/2041	सूर्य	12/07/2042
गुरु	09/11/2039	राहु	31/07/2040	शुक्र	23/02/2041	सूर्य	23/12/2041	चंद्र	09/08/2042
राहु	22/11/2039	शुक्र	28/09/2040	सूर्य	04/03/2041	चंद्र	09/02/2042	मंगल	24/08/2042
शुक्र	16/12/2039	सूर्य	15/10/2040	चंद्र	27/03/2041	मंगल	06/03/2042	बुध	25/09/2042

सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल	
25/09/2042		16/10/2043		15/06/2044		16/08/2045		16/09/2047	
16/10/2043		15/06/2044		16/08/2045		16/09/2047		25/10/2048	
गुरु	02/12/2042	राहु	12/11/2043	शुक्र	06/09/2044	चंद्र	29/11/2045	मंगल	16/10/2047
राहु	14/01/2043	शुक्र	29/12/2043	सूर्य	30/09/2044	मंगल	25/01/2046	बुध	18/12/2047
शुक्र	30/03/2043	सूर्य	12/01/2044	चंद्र	28/11/2044	बुध	24/05/2046	शनि	25/01/2048
सूर्य	20/04/2043	चंद्र	15/02/2044	मंगल	30/12/2044	शनि	03/08/2046	गुरु	05/04/2048
चंद्र	13/06/2043	मंगल	04/03/2044	बुध	07/03/2045	गुरु	15/12/2046	राहु	21/05/2048
मंगल	12/07/2043	बुध	11/04/2044	शनि	15/04/2045	राहु	09/03/2047	शुक्र	07/08/2048
बुध	10/09/2043	शनि	04/05/2044	गुरु	29/06/2045	शुक्र	04/08/2047	सूर्य	30/08/2048
शनि	16/10/2043	गुरु	15/06/2044	राहु	16/08/2045	सूर्य	16/09/2047	चंद्र	25/10/2048

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - बुध		चंद्र - शनि		चंद्र - गुरु		चंद्र - राहु		चंद्र - शुक्र	
25/10/2048		07/03/2051		26/07/2052		17/03/2055		15/11/2056	
07/03/2051		26/07/2052		17/03/2055		15/11/2056		16/10/2059	
बुध	10/03/2049	शनि	23/04/2051	गुरु	12/01/2053	राहु	24/05/2055	शुक्र	10/06/2057
शनि	29/05/2049	गुरु	21/07/2051	राहु	29/04/2053	शुक्र	19/09/2055	सूर्य	08/08/2057
गुरु	28/10/2049	राहु	15/09/2051	शुक्र	02/11/2053	सूर्य	23/10/2055	चंद्र	03/01/2058
राहु	31/01/2050	शुक्र	23/12/2051	सूर्य	26/12/2053	चंद्र	15/01/2056	मंगल	23/03/2058
शुक्र	18/07/2050	सूर्य	20/01/2052	चंद्र	09/05/2054	मंगल	29/02/2056	बुध	07/09/2058
सूर्य	04/09/2050	चंद्र	31/03/2052	मंगल	19/07/2054	बुध	04/06/2056	शनि	14/12/2058
चंद्र	02/01/2051	मंगल	07/05/2052	बुध	18/12/2054	शनि	31/07/2056	गुरु	20/06/2059
मंगल	07/03/2051	बुध	26/07/2052	शनि	17/03/2055	गुरु	15/11/2056	राहु	16/10/2059

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - बुध		मंगल - शनि		मंगल - गुरु	
16/10/2059		15/08/2060		20/03/2061		23/06/2062		20/03/2063	
15/08/2060		20/03/2061		23/06/2062		20/03/2063		15/08/2064	
सूर्य	02/11/2059	मंगल	31/08/2060	बुध	31/05/2061	शनि	18/07/2062	गुरु	19/06/2063
चंद्र	14/12/2059	बुध	04/10/2060	शनि	13/07/2061	गुरु	03/09/2062	राहु	15/08/2063
मंगल	06/01/2060	शनि	24/10/2060	गुरु	02/10/2061	राहु	03/10/2062	शुक्र	23/11/2063
बुध	23/02/2060	गुरु	02/12/2060	राहु	22/11/2061	शुक्र	25/11/2062	सूर्य	21/12/2063
शनि	22/03/2060	राहु	26/12/2060	शुक्र	19/02/2062	सूर्य	10/12/2062	चंद्र	02/03/2064
गुरु	14/05/2060	शुक्र	06/02/2061	सूर्य	17/03/2062	चंद्र	17/01/2063	मंगल	09/04/2064
राहु	17/06/2060	सूर्य	18/02/2061	चंद्र	20/05/2062	मंगल	06/02/2063	बुध	29/06/2064
शुक्र	15/08/2060	चंद्र	20/03/2061	मंगल	23/06/2062	बुध	20/03/2063	शनि	15/08/2064

मंगल - राहु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		बुध - बुध	
15/08/2064		06/07/2065		25/01/2067		06/07/2067		15/08/2068	
06/07/2065		25/01/2067		06/07/2067		15/08/2068		20/04/2071	
राहु	20/09/2064	शुक्र	24/10/2065	सूर्य	03/02/2067	चंद्र	01/09/2067	बुध	16/01/2069
शुक्र	23/11/2064	सूर्य	25/11/2065	चंद्र	26/02/2067	मंगल	01/10/2067	शनि	17/04/2069
सूर्य	11/12/2064	चंद्र	12/02/2066	मंगल	10/03/2067	बुध	04/12/2067	गुरु	06/10/2069
चंद्र	25/01/2065	मंगल	26/03/2066	बुध	04/04/2067	शनि	10/01/2068	राहु	22/01/2070
मंगल	18/02/2065	बुध	23/06/2066	शनि	19/04/2067	गुरु	22/03/2068	शुक्र	31/07/2070
बुध	10/04/2065	शनि	15/08/2066	गुरु	18/05/2067	राहु	06/05/2068	सूर्य	24/09/2070
शनि	10/05/2065	गुरु	23/11/2066	राहु	05/06/2067	शुक्र	24/07/2068	चंद्र	06/02/2071
गुरु	06/07/2065	राहु	25/01/2067	शुक्र	06/07/2067	सूर्य	15/08/2068	मंगल	20/04/2071

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि		बुध - गुरु		बुध - राहु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
20/04/2071		15/11/2072		12/11/2075		02/10/2077		21/01/2081	
15/11/2072		12/11/2075		02/10/2077		21/01/2081		01/01/2082	
शनि	12/06/2071	गुरु	26/05/2073	राहु	28/01/2076	शुक्र	25/05/2078	सूर्य	09/02/2081
गुरु	21/09/2071	राहु	24/09/2073	शुक्र	10/06/2076	सूर्य	31/07/2078	चंद्र	29/03/2081
राहु	24/11/2071	शुक्र	25/04/2074	सूर्य	18/07/2076	चंद्र	14/01/2079	मंगल	24/04/2081
शुक्र	15/03/2072	सूर्य	24/06/2074	चंद्र	22/10/2076	मंगल	14/04/2079	बुध	17/06/2081
सूर्य	16/04/2072	चंद्र	23/11/2074	मंगल	12/12/2076	बुध	21/10/2079	शनि	19/07/2081
चंद्र	05/07/2072	मंगल	12/02/2075	बुध	31/03/2077	शनि	10/02/2080	गुरु	18/09/2081
मंगल	16/08/2072	बुध	03/08/2075	शनि	03/06/2077	गुरु	09/09/2080	राहु	26/10/2081
बुध	15/11/2072	शनि	12/11/2075	गुरु	02/10/2077	राहु	21/01/2081	शुक्र	01/01/2082

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		शनि - शनि		शनि - गुरु		शनि - राहु	
01/01/2082		13/05/2084		16/08/2085		20/07/2086		22/04/2088	
13/05/2084		16/08/2085		20/07/2086		22/04/2088		02/06/2089	
चंद्र	01/05/2082	मंगल	16/06/2084	शनि	16/09/2085	गुरु	10/11/2086	राहु	06/06/2088
मंगल	04/07/2082	बुध	27/08/2084	गुरु	14/11/2085	राहु	20/01/2087	शुक्र	24/08/2088
बुध	17/11/2082	शनि	09/10/2084	राहु	22/12/2085	शुक्र	25/05/2087	सूर्य	16/09/2088
शनि	04/02/2083	गुरु	29/12/2084	शुक्र	26/02/2086	सूर्य	30/06/2087	चंद्र	11/11/2088
गुरु	06/07/2083	राहु	18/02/2085	सूर्य	17/03/2086	चंद्र	27/09/2087	मंगल	11/12/2088
राहु	10/10/2083	शुक्र	18/05/2085	चंद्र	02/05/2086	मंगल	14/11/2087	बुध	13/02/2089
शुक्र	26/03/2084	सूर्य	13/06/2085	मंगल	28/05/2086	बुध	23/02/2088	शनि	23/03/2089
सूर्य	13/05/2084	चंद्र	16/08/2085	बुध	20/07/2086	शनि	22/04/2088	गुरु	02/06/2089

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - बुध	
02/06/2089		13/05/2091		02/12/2091		23/04/2093		18/01/2094	
13/05/2091		02/12/2091		23/04/2093		18/01/2094		16/08/2095	
शुक्र	18/10/2089	सूर्य	25/05/2091	चंद्र	11/02/2092	मंगल	13/05/2093	बुध	19/04/2094
सूर्य	27/11/2089	चंद्र	22/06/2091	मंगल	19/03/2092	बुध	24/06/2093	शनि	11/06/2094
चंद्र	05/03/2090	मंगल	07/07/2091	बुध	07/06/2092	शनि	19/07/2093	गुरु	20/09/2094
मंगल	27/04/2090	बुध	08/08/2091	शनि	24/07/2092	गुरु	05/09/2093	राहु	23/11/2094
बुध	17/08/2090	शनि	27/08/2091	गुरु	21/10/2092	राहु	05/10/2093	शुक्र	15/03/2095
शनि	22/10/2090	गुरु	01/10/2091	राहु	17/12/2092	शुक्र	27/11/2093	सूर्य	16/04/2095
गुरु	23/02/2091	राहु	24/10/2091	शुक्र	25/03/2093	सूर्य	12/12/2093	चंद्र	04/07/2095
राहु	13/05/2091	शुक्र	02/12/2091	सूर्य	23/04/2093	चंद्र	18/01/2094	मंगल	16/08/2095

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : धान्या 0 वर्ष 3 मास 5 दिन

धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
24/09/1999	30/12/1999	30/12/2003	29/12/2008	30/12/2014
30/12/1999	30/12/2003	29/12/2008	30/12/2014	29/12/2021
00/00/0000	भ्राम 09/06/2000	भद्रि 08/09/2004	उल्क 29/12/2009	सिद्ध 10/05/2016
00/00/0000	भद्रि 29/12/2000	उल्क 10/07/2005	सिद्ध 28/02/2011	संक 29/11/2017
00/00/0000	उल्क 30/08/2001	सिद्ध 30/06/2006	संक 29/06/2012	मंग 08/02/2018
00/00/0000	सिद्ध 10/06/2002	संक 10/08/2007	मंग 29/08/2012	पिंग 30/06/2018
24/09/1999	संक 30/04/2003	मंग 29/09/2007	पिंग 29/12/2012	धांय 29/01/2019
संक 29/09/1999	मंग 10/06/2003	पिंग 09/01/2008	धांय 30/06/2013	भ्राम 09/11/2019
मंग 30/10/1999	पिंग 30/08/2003	धांय 09/06/2008	भ्राम 28/02/2014	भद्रि 29/10/2020
पिंग 30/12/1999	धांय 30/12/2003	भ्राम 29/12/2008	भद्रि 30/12/2014	उल्क 29/12/2021

संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भ्रामरी 4 वर्ष
29/12/2021	29/12/2029	30/12/2030	29/12/2032	30/12/2035
29/12/2029	30/12/2030	29/12/2032	30/12/2035	30/12/2039
संक 10/10/2023	मंग 08/01/2030	पिंग 08/02/2031	धांय 30/03/2033	भ्राम 09/06/2036
मंग 30/12/2023	पिंग 29/01/2030	धांय 10/04/2031	भ्राम 30/07/2033	भद्रि 29/12/2036
पिंग 09/06/2024	धांय 28/02/2030	भ्राम 30/06/2031	भद्रि 29/12/2033	उल्क 30/08/2037
धांय 08/02/2025	भ्राम 10/04/2030	भद्रि 10/10/2031	उल्क 30/06/2034	सिद्ध 10/06/2038
भ्राम 29/12/2025	भद्रि 30/05/2030	उल्क 08/02/2032	सिद्ध 29/01/2035	संक 30/04/2039
भद्रि 08/02/2027	उल्क 30/07/2030	सिद्ध 29/06/2032	संक 29/09/2035	मंग 10/06/2039
उल्क 09/06/2028	सिद्ध 09/10/2030	संक 09/12/2032	मंग 30/10/2035	पिंग 30/08/2039
सिद्ध 29/12/2029	संक 30/12/2030	मंग 29/12/2032	पिंग 30/12/2035	धांय 30/12/2039

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
30/12/2039		29/12/2044		30/12/2050		29/12/2057		29/12/2065	
29/12/2044		30/12/2050		29/12/2057		29/12/2065		30/12/2066	
भद्रि	08/09/2040	उल्क	29/12/2045	सिद्ध	10/05/2052	संक	10/10/2059	मंग	08/01/2066
उल्क	10/07/2041	सिद्ध	28/02/2047	संक	29/11/2053	मंग	30/12/2059	पिंग	29/01/2066
सिद्ध	30/06/2042	संक	29/06/2048	मंग	08/02/2054	पिंग	09/06/2060	धांय	28/02/2066
संक	10/08/2043	मंग	29/08/2048	पिंग	30/06/2054	धांय	08/02/2061	भ्राम	10/04/2066
मंग	29/09/2043	पिंग	29/12/2048	धांय	29/01/2055	भ्राम	29/12/2061	भद्रि	30/05/2066
पिंग	09/01/2044	धांय	30/06/2049	भ्राम	09/11/2055	भद्रि	08/02/2063	उल्क	30/07/2066
धांय	09/06/2044	भ्राम	28/02/2050	भद्रि	29/10/2056	उल्क	09/06/2064	सिद्ध	09/10/2066
भ्राम	29/12/2044	भद्रि	30/12/2050	उल्क	29/12/2057	सिद्ध	29/12/2065	संक	30/12/2066

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
30/12/2066		29/12/2068		30/12/2071		30/12/2075		29/12/2080	
29/12/2068		30/12/2071		30/12/2075		29/12/2080		30/12/2086	
पिंग	08/02/2067	धांय	30/03/2069	भ्राम	09/06/2072	भद्रि	08/09/2076	उल्क	29/12/2081
धांय	10/04/2067	भ्राम	30/07/2069	भद्रि	29/12/2072	उल्क	10/07/2077	सिद्ध	28/02/2083
भ्राम	30/06/2067	भद्रि	29/12/2069	उल्क	30/08/2073	सिद्ध	30/06/2078	संक	29/06/2084
भद्रि	10/10/2067	उल्क	30/06/2070	सिद्ध	10/06/2074	संक	10/08/2079	मंग	29/08/2084
उल्क	08/02/2068	सिद्ध	29/01/2071	संक	30/04/2075	मंग	29/09/2079	पिंग	29/12/2084
सिद्ध	29/06/2068	संक	29/09/2071	मंग	10/06/2075	पिंग	09/01/2080	धांय	30/06/2085
संक	09/12/2068	मंग	30/10/2071	पिंग	30/08/2075	धांय	09/06/2080	भ्राम	28/02/2086
मंग	29/12/2068	पिंग	30/12/2071	धांय	30/12/2075	भ्राम	29/12/2080	भद्रि	30/12/2086

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
30/12/2086		29/12/2093		30/12/2101		31/12/2102		30/12/2104	
29/12/2093		30/12/2101		31/12/2102		30/12/2104		00/00/0000	
सिद्ध	10/05/2088	संक	10/10/2095	मंग	09/01/2102	पिंग	09/02/2103	धांय	31/03/2105
संक	29/11/2089	मंग	30/12/2095	पिंग	30/01/2102	धांय	11/04/2103	भ्राम	31/07/2105
मंग	08/02/2090	पिंग	09/06/2096	धांय	01/03/2102	भ्राम	01/07/2103	भद्रि	30/12/2105
पिंग	30/06/2090	धांय	08/02/2097	भ्राम	11/04/2102	भद्रि	11/10/2103	उल्क	01/07/2106
धांय	29/01/2091	भ्राम	29/12/2097	भद्रि	31/05/2102	उल्क	09/02/2104	सिद्ध	30/01/2107
भ्राम	09/11/2091	भद्रि	08/02/2099	उल्क	31/07/2102	सिद्ध	30/06/2104	संक	25/09/2107
भद्रि	29/10/2092	उल्क	10/06/2100	सिद्ध	10/10/2102	संक	10/12/2104		00/00/0000
उल्क	29/12/2093	सिद्ध	30/12/2101	संक	31/12/2102	मंग	30/12/2104		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

संक - भद्रि		संक - उल्क		संक - सिद्ध		मंग - मंग		मंग - पिंग	
29/12/2025		08/02/2027		09/06/2028		29/12/2029		08/01/2030	
08/02/2027		09/06/2028		29/12/2029		08/01/2030		29/01/2030	
भद्रि	24/02/2026	उल्क	30/04/2027	सिद्ध	28/09/2028	मंग	30/12/2029	पिंग	10/01/2030
उल्क	02/05/2026	सिद्ध	03/08/2027	संक	01/02/2029	पिंग	30/12/2029	धांय	11/01/2030
सिद्ध	20/07/2026	संक	19/11/2027	मंग	17/02/2029	धांय	31/12/2029	भ्राम	14/01/2030
संक	18/10/2026	मंग	03/12/2027	पिंग	20/03/2029	भ्राम	01/01/2030	भद्रि	16/01/2030
मंग	30/10/2026	पिंग	30/12/2027	धांय	07/05/2029	भद्रि	03/01/2030	उल्क	20/01/2030
पिंग	21/11/2026	धांय	08/02/2028	भ्राम	09/07/2029	उल्क	04/01/2030	सिद्ध	24/01/2030
धांय	25/12/2026	भ्राम	02/04/2028	भद्रि	26/09/2029	सिद्ध	06/01/2030	संक	28/01/2030
भ्राम	08/02/2027	भद्रि	09/06/2028	उल्क	29/12/2029	संक	08/01/2030	मंग	29/01/2030

मंग - धांय		मंग - भ्राम		मंग - भद्रि		मंग - उल्क		मंग - सिद्ध	
29/01/2030		28/02/2030		10/04/2030		30/05/2030		30/07/2030	
28/02/2030		10/04/2030		30/05/2030		30/07/2030		09/10/2030	
धांय	31/01/2030	भ्राम	05/03/2030	भद्रि	17/04/2030	उल्क	10/06/2030	सिद्ध	13/08/2030
भ्राम	04/02/2030	भद्रि	10/03/2030	उल्क	25/04/2030	सिद्ध	21/06/2030	संक	29/08/2030
भद्रि	08/02/2030	उल्क	17/03/2030	सिद्ध	05/05/2030	संक	05/07/2030	मंग	31/08/2030
उल्क	13/02/2030	सिद्ध	25/03/2030	संक	16/05/2030	मंग	07/07/2030	पिंग	04/09/2030
सिद्ध	19/02/2030	संक	03/04/2030	मंग	18/05/2030	पिंग	10/07/2030	धांय	10/09/2030
संक	26/02/2030	मंग	04/04/2030	पिंग	21/05/2030	धांय	15/07/2030	भ्राम	18/09/2030
मंग	26/02/2030	पिंग	06/04/2030	धांय	25/05/2030	भ्राम	22/07/2030	भद्रि	28/09/2030
पिंग	28/02/2030	धांय	10/04/2030	भ्राम	30/05/2030	भद्रि	30/07/2030	उल्क	09/10/2030

मंग - संक		पिंग - पिंग		पिंग - धांय		पिंग - भ्राम		पिंग - भद्रि	
09/10/2030		30/12/2030		08/02/2031		10/04/2031		30/06/2031	
30/12/2030		08/02/2031		10/04/2031		30/06/2031		10/10/2031	
संक	27/10/2030	पिंग	01/01/2031	धांय	13/02/2031	भ्राम	19/04/2031	भद्रि	14/07/2031
मंग	30/10/2030	धांय	04/01/2031	भ्राम	20/02/2031	भद्रि	30/04/2031	उल्क	31/07/2031
पिंग	03/11/2030	भ्राम	09/01/2031	भद्रि	28/02/2031	उल्क	14/05/2031	सिद्ध	20/08/2031
धांय	10/11/2030	भद्रि	14/01/2031	उल्क	11/03/2031	सिद्ध	30/05/2031	संक	11/09/2031
भ्राम	19/11/2030	उल्क	21/01/2031	सिद्ध	22/03/2031	संक	17/06/2031	मंग	14/09/2031
भद्रि	30/11/2030	सिद्ध	29/01/2031	संक	05/04/2031	मंग	19/06/2031	पिंग	20/09/2031
उल्क	14/12/2030	संक	07/02/2031	मंग	07/04/2031	पिंग	23/06/2031	धांय	28/09/2031
सिद्ध	30/12/2030	मंग	08/02/2031	पिंग	10/04/2031	धांय	30/06/2031	भ्राम	10/10/2031

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

पिंग - उल्क		पिंग - सिद्ध		पिंग - संक		पिंग - मंग		धांय - धांय	
10/10/2031		08/02/2032		29/06/2032		09/12/2032		29/12/2032	
08/02/2032		29/06/2032		09/12/2032		29/12/2032		30/03/2033	
उल्क	30/10/2031	सिद्ध	07/03/2032	संक	04/08/2032	मंग	09/12/2032	धांय	06/01/2033
सिद्ध	23/11/2031	संक	08/04/2032	मंग	09/08/2032	पिंग	10/12/2032	भ्राम	16/01/2033
संक	20/12/2031	मंग	12/04/2032	पिंग	18/08/2032	धांय	12/12/2032	भद्रि	28/01/2033
मंग	23/12/2031	पिंग	19/04/2032	धांय	01/09/2032	भ्राम	14/12/2032	उल्क	13/02/2033
पिंग	30/12/2031	धांय	01/05/2032	भ्राम	19/09/2032	भद्रि	17/12/2032	सिद्ध	02/03/2033
धांय	09/01/2032	भ्राम	17/05/2032	भद्रि	11/10/2032	उल्क	21/12/2032	संक	23/03/2033
भ्राम	22/01/2032	भद्रि	06/06/2032	उल्क	07/11/2032	सिद्ध	25/12/2032	मंग	25/03/2033
भद्रि	08/02/2032	उल्क	29/06/2032	सिद्ध	09/12/2032	संक	29/12/2032	पिंग	30/03/2033

धांय - भ्राम		धांय - भद्रि		धांय - उल्क		धांय - सिद्ध		धांय - संक	
30/03/2033		30/07/2033		29/12/2033		30/06/2034		29/01/2035	
30/07/2033		29/12/2033		30/06/2034		29/01/2035		29/09/2035	
भ्राम	13/04/2033	भद्रि	20/08/2033	उल्क	29/01/2034	सिद्ध	10/08/2034	संक	24/03/2035
भद्रि	30/04/2033	उल्क	15/09/2033	सिद्ध	05/03/2034	संक	27/09/2034	मंग	31/03/2035
उल्क	20/05/2033	सिद्ध	14/10/2033	संक	15/04/2034	मंग	03/10/2034	पिंग	13/04/2035
सिद्ध	13/06/2033	संक	17/11/2033	मंग	20/04/2034	पिंग	14/10/2034	धांय	04/05/2035
संक	10/07/2033	मंग	21/11/2033	पिंग	30/04/2034	धांय	01/11/2034	भ्राम	31/05/2035
मंग	13/07/2033	पिंग	30/11/2033	धांय	15/05/2034	भ्राम	25/11/2034	भद्रि	04/07/2035
पिंग	20/07/2033	धांय	12/12/2033	भ्राम	05/06/2034	भद्रि	24/12/2034	उल्क	13/08/2035
धांय	30/07/2033	भ्राम	29/12/2033	भद्रि	30/06/2034	उल्क	29/01/2035	सिद्ध	29/09/2035

धांय - मंग		धांय - पिंग		भ्राम - भ्राम		भ्राम - भद्रि		भ्राम - उल्क	
29/09/2035		30/10/2035		30/12/2035		09/06/2036		29/12/2036	
30/10/2035		30/12/2035		09/06/2036		29/12/2036		30/08/2037	
मंग	30/09/2035	पिंग	02/11/2035	भ्राम	17/01/2036	भद्रि	07/07/2036	उल्क	08/02/2037
पिंग	02/10/2035	धांय	07/11/2035	भद्रि	08/02/2036	उल्क	10/08/2036	सिद्ध	27/03/2037
धांय	05/10/2035	भ्राम	14/11/2035	उल्क	06/03/2036	सिद्ध	19/09/2036	संक	20/05/2037
भ्राम	08/10/2035	भद्रि	23/11/2035	सिद्ध	07/04/2036	संक	03/11/2036	मंग	27/05/2037
भद्रि	12/10/2035	उल्क	03/12/2035	संक	13/05/2036	मंग	08/11/2036	पिंग	09/06/2037
उल्क	17/10/2035	सिद्ध	15/12/2035	मंग	18/05/2036	पिंग	20/11/2036	धांय	30/06/2037
सिद्ध	23/10/2035	संक	28/12/2035	पिंग	27/05/2036	धांय	06/12/2036	भ्राम	27/07/2037
संक	30/10/2035	मंग	30/12/2035	धांय	09/06/2036	भ्राम	29/12/2036	भद्रि	30/08/2037

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कर्क 3 वर्ष 4 मास 27 दिन
कुल दशाकाल : 100 वर्ष
तिथि : शतभिषा - 4 अपसव्य
देह : वृश्चिक जीव : मीन

कर्क 21 वर्ष		मिथुन 9 वर्ष		वृष 16 वर्ष		मेष 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष	
24/09/1999		20/02/2003		20/02/2012		20/02/2028		20/02/2035	
20/02/2003		20/02/2012		20/02/2028		20/02/2035		19/02/2045	
	00/00/0000	मिथु	13/12/2003	वृष	12/09/2014	मेष	17/08/2028	धनु	20/02/2036
	00/00/0000	वृष	22/05/2005	मेष	26/10/2015	धनु	30/04/2029	वृश्चि	02/11/2036
	00/00/0000	मेष	07/01/2006	धनु	02/06/2017	वृश्चि	26/10/2029	तुला	09/06/2038
	00/00/0000	धनु	02/12/2006	वृश्चि	16/07/2018	तुला	09/12/2030	कन्या	04/05/2039
	00/00/0000	वृश्चि	20/07/2007	तुला	05/02/2021	कन्या	27/07/2031	सिंह	03/11/2039
	24/09/1999	तुला	27/12/2008	कन्या	16/07/2022	सिंह	02/12/2031	कर्क	09/12/2041
तुला	13/03/2000	कन्या	19/10/2009	सिंह	04/05/2023	कर्क	22/05/2033	मिथु	02/11/2042
कन्या	01/02/2002	सिंह	01/04/2010	कर्क	12/09/2026	मिथु	07/01/2034	वृष	09/06/2044
सिंह	20/02/2003	कर्क	20/02/2012	मिथु	20/02/2028	वृष	20/02/2035	मेष	19/02/2045

वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष		सिंह 5 वर्ष		कर्क 21 वर्ष	
19/02/2045		20/02/2052		20/02/2068		19/02/2077		20/02/2082	
20/02/2052		20/02/2068		19/02/2077		20/02/2082		00/00/0000	
वृश्चि	17/08/2045	तुला	12/09/2054	कन्या	12/12/2068	सिंह	22/05/2077	कर्क	19/07/2086
तुला	01/10/2046	कन्या	20/02/2056	सिंह	25/05/2069	कर्क	09/06/2078	मिथु	09/06/2088
कन्या	19/05/2047	सिंह	08/12/2056	कर्क	16/04/2071	मिथु	21/11/2078	वृष	19/10/2091
सिंह	23/09/2047	कर्क	19/04/2060	मिथु	06/02/2072	वृष	09/09/2079	मेष	08/04/2093
कर्क	13/03/2049	मिथु	27/09/2061	वृष	16/07/2073	मेष	15/01/2080	धनु	15/05/2095
मिथु	29/10/2049	वृष	19/04/2064	मेष	03/03/2074	धनु	15/07/2080	वृश्चि	02/11/2096
वृष	13/12/2050	मेष	02/06/2065	धनु	25/01/2075	वृश्चि	20/11/2080	तुला	24/09/2099
मेष	10/06/2051	धनु	07/01/2067	वृश्चि	13/09/2075	तुला	08/09/2081		00/00/0000
धनु	20/02/2052	वृश्चि	20/02/2068	तुला	19/02/2077	कन्या	20/02/2082		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - कर्क		वृष - मिथु		मेष - मेष		मेष - धनु		मेष - वृश्चि	
04/05/2023		12/09/2026		20/02/2028		17/08/2028		30/04/2029	
12/09/2026		20/02/2028		17/08/2028		30/04/2029		26/10/2029	
कर्क	17/01/2024	मिथु	30/10/2026	मेष	04/03/2028	धनु	12/09/2028	वृश्चि	12/05/2029
मिथु	06/05/2024	वृष	22/01/2027	धनु	22/03/2028	वृश्चि	30/09/2028	तुला	10/06/2029
वृष	19/11/2024	मेष	28/02/2027	वृश्चि	03/04/2028	तुला	10/11/2028	कन्या	26/06/2029
मेष	12/02/2025	धनु	21/04/2027	तुला	02/05/2028	कन्या	03/12/2028	सिंह	05/07/2029
धनु	15/06/2025	वृश्चि	28/05/2027	कन्या	18/05/2028	सिंह	15/12/2028	कर्क	12/08/2029
वृश्चि	09/09/2025	तुला	20/08/2027	सिंह	27/05/2028	कर्क	07/02/2029	मिथु	28/08/2029
तुला	24/03/2026	कन्या	06/10/2027	कर्क	03/07/2028	मिथु	02/03/2029	वृष	25/09/2029
कन्या	13/07/2026	सिंह	02/11/2027	मिथु	20/07/2028	वृष	12/04/2029	मेष	08/10/2029
सिंह	12/09/2026	कर्क	20/02/2028	वृष	17/08/2028	मेष	30/04/2029	धनु	26/10/2029

मेष - तुला		मेष - कन्या		मेष - सिंह		मेष - कर्क		मेष - मिथु	
26/10/2029		09/12/2030		27/07/2031		02/12/2031		22/05/2033	
09/12/2030		27/07/2031		02/12/2031		22/05/2033		07/01/2034	
तुला	30/12/2029	कन्या	30/12/2030	सिंह	02/08/2031	कर्क	24/03/2032	मिथु	11/06/2033
कन्या	05/02/2030	सिंह	10/01/2031	कर्क	29/08/2031	मिथु	11/05/2032	वृष	18/07/2033
सिंह	26/02/2030	कर्क	27/02/2031	मिथु	10/09/2031	वृष	05/08/2032	मेष	03/08/2033
कर्क	22/05/2030	मिथु	20/03/2031	वृष	30/09/2031	मेष	11/09/2032	धनु	26/08/2033
मिथु	28/06/2030	वृष	26/04/2031	मेष	09/10/2031	धनु	04/11/2032	वृश्चि	12/09/2033
वृष	02/09/2030	मेष	12/05/2031	धनु	22/10/2031	वृश्चि	12/12/2032	तुला	18/10/2033
मेष	30/09/2030	धनु	04/06/2031	वृश्चि	31/10/2031	तुला	08/03/2033	कन्या	08/11/2033
धनु	10/11/2030	वृश्चि	20/06/2031	तुला	20/11/2031	कन्या	25/04/2033	सिंह	20/11/2033
वृश्चि	09/12/2030	तुला	27/07/2031	कन्या	02/12/2031	सिंह	22/05/2033	कर्क	07/01/2034

मेष - वृष		धनु - धनु		धनु - वृश्चि		धनु - तुला		धनु - कन्या	
07/01/2034		20/02/2035		20/02/2036		02/11/2036		09/06/2038	
20/02/2035		20/02/2036		02/11/2036		09/06/2038		04/05/2039	
वृष	13/03/2034	धनु	29/03/2035	वृश्चि	09/03/2036	तुला	03/02/2037	कन्या	09/07/2038
मेष	11/04/2034	वृश्चि	23/04/2035	तुला	19/04/2036	कन्या	28/03/2037	सिंह	25/07/2038
धनु	22/05/2034	तुला	21/06/2035	कन्या	12/05/2036	सिंह	26/04/2037	कर्क	02/10/2038
वृश्चि	20/06/2034	कन्या	23/07/2035	सिंह	25/05/2036	कर्क	27/08/2037	मिथु	01/11/2038
तुला	24/08/2034	सिंह	11/08/2035	कर्क	18/07/2036	मिथु	19/10/2037	वृष	24/12/2038
कन्या	30/09/2034	कर्क	26/10/2035	मिथु	10/08/2036	वृष	20/01/2038	मेष	16/01/2039
सिंह	20/10/2034	मिथु	28/11/2035	वृष	19/09/2036	मेष	02/03/2038	धनु	17/02/2039
कर्क	14/01/2035	वृष	26/01/2036	मेष	07/10/2036	धनु	29/04/2038	वृश्चि	12/03/2039
मिथु	20/02/2035	मेष	20/02/2036	धनु	02/11/2036	वृश्चि	09/06/2038	तुला	04/05/2039

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - सिंह		धनु - कर्क		धनु - मिथु		धनु - वृष		धनु - मेष	
04/05/2039		03/11/2039		09/12/2041		02/11/2042		09/06/2044	
03/11/2039		09/12/2041		02/11/2042		09/06/2044		19/02/2045	
सिंह	13/05/2039	कर्क	12/04/2040	मिथु	07/01/2042	वृष	04/02/2043	मेष	27/06/2044
कर्क	21/06/2039	मिथु	20/06/2040	वृष	01/03/2042	मेष	17/03/2043	धनु	22/07/2044
मिथु	07/07/2039	वृष	20/10/2040	मेष	24/03/2042	धनु	14/05/2043	वृश्चि	09/08/2044
वृष	05/08/2039	मेष	13/12/2040	धनु	26/04/2042	वृश्चि	24/06/2043	तुला	19/09/2044
मेष	18/08/2039	धनु	28/02/2041	वृश्चि	19/05/2042	तुला	26/09/2043	कन्या	12/10/2044
धनु	05/09/2039	वृश्चि	23/04/2041	तुला	10/07/2042	कन्या	17/11/2043	सिंह	25/10/2044
वृश्चि	18/09/2039	तुला	23/08/2041	कन्या	09/08/2042	सिंह	16/12/2043	कर्क	18/12/2044
तुला	17/10/2039	कन्या	31/10/2041	सिंह	25/08/2042	कर्क	17/04/2044	मिथु	10/01/2045
कन्या	03/11/2039	सिंह	09/12/2041	कर्क	02/11/2042	मिथु	09/06/2044	वृष	19/02/2045

वृश्चि - वृश्चि		वृश्चि - तुला		वृश्चि - कन्या		वृश्चि - सिंह		वृश्चि - कर्क	
19/02/2045		17/08/2045		01/10/2046		19/05/2047		23/09/2047	
17/08/2045		01/10/2046		19/05/2047		23/09/2047		13/03/2049	
वृश्चि	04/03/2045	तुला	22/10/2045	कन्या	21/10/2046	सिंह	25/05/2047	कर्क	14/01/2048
तुला	02/04/2045	कन्या	28/11/2045	सिंह	02/11/2046	कर्क	21/06/2047	मिथु	03/03/2048
कन्या	18/04/2045	सिंह	18/12/2045	कर्क	20/12/2046	मिथु	02/07/2047	वृष	27/05/2048
सिंह	27/04/2045	कर्क	14/03/2046	मिथु	10/01/2047	वृष	23/07/2047	मेष	04/07/2048
कर्क	03/06/2045	मिथु	20/04/2046	वृष	16/02/2047	मेष	01/08/2047	धनु	27/08/2048
मिथु	19/06/2045	वृष	24/06/2046	मेष	04/03/2047	धनु	14/08/2047	वृश्चि	03/10/2048
वृष	18/07/2045	मेष	23/07/2046	धनु	27/03/2047	वृश्चि	23/08/2047	तुला	28/12/2048
मेष	31/07/2045	धनु	02/09/2046	वृश्चि	12/04/2047	तुला	12/09/2047	कन्या	15/02/2049
धनु	17/08/2045	वृश्चि	01/10/2046	तुला	19/05/2047	कन्या	23/09/2047	सिंह	13/03/2049

वृश्चि - मिथु		वृश्चि - वृष		वृश्चि - मेष		वृश्चि - धनु		तुला - तुला	
13/03/2049		29/10/2049		13/12/2050		10/06/2051		20/02/2052	
29/10/2049		13/12/2050		10/06/2051		20/02/2052		12/09/2054	
मिथु	03/04/2049	वृष	03/01/2050	मेष	25/12/2050	धनु	05/07/2051	तुला	19/07/2052
वृष	10/05/2049	मेष	01/02/2050	धनु	12/01/2051	वृश्चि	23/07/2051	कन्या	11/10/2052
मेष	26/05/2049	धनु	13/03/2050	वृश्चि	25/01/2051	तुला	02/09/2051	सिंह	27/11/2052
धनु	18/06/2049	वृश्चि	11/04/2050	तुला	22/02/2051	कन्या	25/09/2051	कर्क	11/06/2053
वृश्चि	04/07/2049	तुला	16/06/2050	कन्या	10/03/2051	सिंह	08/10/2051	मिथु	03/09/2053
तुला	10/08/2049	कन्या	22/07/2050	सिंह	19/03/2051	कर्क	30/11/2051	वृष	31/01/2054
कन्या	31/08/2049	सिंह	12/08/2050	कर्क	26/04/2051	मिथु	23/12/2051	मेष	06/04/2054
सिंह	11/09/2049	कर्क	06/11/2050	मिथु	12/05/2051	वृष	02/02/2052	धनु	09/07/2054
कर्क	29/10/2049	मिथु	13/12/2050	वृष	10/06/2051	मेष	20/02/2052	वृश्चि	12/09/2054

चर दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 12 वर्ष 0 मास 0 दिन

कन्या 12 वर्ष	
24/09/1999	
24/09/2011	
तुला	23/09/2000
वृश्चि	23/09/2001
धनु	24/09/2002
मक	24/09/2003
कुंभ	23/09/2004
मीन	23/09/2005
मेष	24/09/2006
वृष	24/09/2007
मिथु	23/09/2008
कर्क	23/09/2009
सिंह	24/09/2010
कन्या	24/09/2011

तुला 9 वर्ष	
24/09/2011	
23/09/2020	
वृश्चि	24/06/2012
धनु	25/03/2013
मक	24/12/2013
कुंभ	24/09/2014
मीन	24/06/2015
मेष	24/03/2016
वृष	23/12/2016
मिथु	23/09/2017
कर्क	24/06/2018
सिंह	25/03/2019
कन्या	24/12/2019
तुला	23/09/2020

वृश्चिक 2 वर्ष	
23/09/2020	
24/09/2022	
तुला	23/11/2020
कन्या	23/01/2021
सिंह	25/03/2021
कर्क	25/05/2021
मिथु	24/07/2021
वृष	23/09/2021
मेष	23/11/2021
मीन	23/01/2022
कुंभ	25/03/2022
मक	25/05/2022
धनु	25/07/2022
वृश्चि	24/09/2022

धनु 4 वर्ष	
24/09/2022	
24/09/2026	
वृश्चि	23/01/2023
तुला	25/05/2023
कन्या	24/09/2023
सिंह	24/01/2024
कर्क	24/05/2024
मिथु	23/09/2024
वृष	23/01/2025
मेष	25/05/2025
मीन	23/09/2025
कुंभ	23/01/2026
मक	25/05/2026
धनु	24/09/2026

मकर 9 वर्ष	
24/09/2026	
24/09/2035	
धनु	24/06/2027
वृश्चि	24/03/2028
तुला	23/12/2028
कन्या	23/09/2029
सिंह	24/06/2030
कर्क	25/03/2031
मिथु	24/12/2031
वृष	23/09/2032
मेष	24/06/2033
मीन	25/03/2034
कुंभ	24/12/2034
मक	24/09/2035

कुम्भ 10 वर्ष	
24/09/2035	
23/09/2045	
मीन	24/07/2036
मेष	25/05/2037
वृष	25/03/2038
मिथु	23/01/2039
कर्क	24/11/2039
सिंह	23/09/2040
कन्या	24/07/2041
तुला	25/05/2042
वृश्चि	25/03/2043
धनु	24/01/2044
मक	23/11/2044
कुंभ	23/09/2045

मीन 11 वर्ष	
23/09/2045	
23/09/2056	
मेष	24/08/2046
वृष	25/07/2047
मिथु	24/06/2048
कर्क	25/05/2049
सिंह	24/04/2050
कन्या	25/03/2051
तुला	23/02/2052
वृश्चि	23/01/2053
धनु	24/12/2053
मक	23/11/2054
कुंभ	24/10/2055
मीन	23/09/2056

मेष 7 वर्ष	
23/09/2056	
24/09/2063	
वृष	24/04/2057
मिथु	23/11/2057
कर्क	24/06/2058
सिंह	23/01/2059
कन्या	24/08/2059
तुला	24/03/2060
वृश्चि	23/10/2060
धनु	25/05/2061
मक	24/12/2061
कुंभ	25/07/2062
मीन	23/02/2063
मेष	24/09/2063

वृष 2 वर्ष	
24/09/2063	
23/09/2065	
मेष	24/11/2063
मीन	24/01/2064
कुंभ	24/03/2064
मक	24/05/2064
धनु	24/07/2064
वृश्चि	23/09/2064
तुला	23/11/2064
कन्या	23/01/2065
सिंह	25/03/2065
कर्क	25/05/2065
मिथु	24/07/2065
वृष	23/09/2065

मिथुन 3 वर्ष	
23/09/2065	
23/09/2068	
वृष	24/12/2065
मेष	25/03/2066
मीन	24/06/2066
कुंभ	24/09/2066
मक	24/12/2066
धनु	25/03/2067
वृश्चि	24/06/2067
तुला	24/09/2067
कन्या	24/12/2067
सिंह	24/03/2068
कर्क	24/06/2068
मिथु	23/09/2068

कर्क 5 वर्ष	
23/09/2068	
23/09/2073	
मिथु	22/02/2069
वृष	24/07/2069
मेष	24/12/2069
मीन	25/05/2070
कुंभ	24/10/2070
मक	25/03/2071
धनु	24/08/2071
वृश्चि	24/01/2072
तुला	24/06/2072
कन्या	23/11/2072
सिंह	24/04/2073
कर्क	23/09/2073

सिंह 11 वर्ष	
23/09/2073	
23/09/2084	
कन्या	24/08/2074
तुला	25/07/2075
वृश्चि	24/06/2076
धनु	25/05/2077
मक	24/04/2078
कुंभ	25/03/2079
मीन	23/02/2080
मेष	23/01/2081
वृष	24/12/2081
मिथु	23/11/2082
कर्क	24/10/2083
सिंह	23/09/2084

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

धनु - कुंभ		धनु - मक		धनु - धनु		मक - धनु		मक - वृश्चि	
23/09/2025		23/01/2026		25/05/2026		24/09/2026		24/06/2027	
23/01/2026		25/05/2026		24/09/2026		24/06/2027		24/03/2028	
मीन	03/10/2025	धनु	02/02/2026	वृश्चि	04/06/2026	वृश्चि	16/10/2026	तुला	17/07/2027
मेष	14/10/2025	वृश्चि	12/02/2026	तुला	14/06/2026	तुला	08/11/2026	कन्या	09/08/2027
वृष	24/10/2025	तुला	22/02/2026	कन्या	24/06/2026	कन्या	01/12/2026	सिंह	01/09/2027
मिथु	03/11/2025	कन्या	05/03/2026	सिंह	04/07/2026	सिंह	24/12/2026	कर्क	24/09/2027
कर्क	13/11/2025	सिंह	15/03/2026	कर्क	15/07/2026	कर्क	16/01/2027	मिथु	17/10/2027
सिंह	23/11/2025	कर्क	25/03/2026	मिथु	25/07/2026	मिथु	08/02/2027	वृष	08/11/2027
कन्या	03/12/2025	मिथु	04/04/2026	वृष	04/08/2026	वृष	02/03/2027	मेष	01/12/2027
तुला	13/12/2025	वृष	14/04/2026	मेष	14/08/2026	मेष	25/03/2027	मीन	24/12/2027
वृश्चि	24/12/2025	मेष	24/04/2026	मीन	24/08/2026	मीन	17/04/2027	कुंभ	16/01/2028
धनु	03/01/2026	मीन	05/05/2026	कुंभ	03/09/2026	कुंभ	10/05/2027	मक	08/02/2028
मक	13/01/2026	कुंभ	15/05/2026	मक	13/09/2026	मक	02/06/2027	धनु	02/03/2028
कुंभ	23/01/2026	मक	25/05/2026	धनु	24/09/2026	धनु	24/06/2027	वृश्चि	24/03/2028

मक - तुला		मक - कन्या		मक - सिंह		मक - कर्क		मक - मिथु	
24/03/2028		23/12/2028		23/09/2029		24/06/2030		25/03/2031	
23/12/2028		23/09/2029		24/06/2030		25/03/2031		24/12/2031	
वृश्चि	16/04/2028	तुला	15/01/2029	कन्या	16/10/2029	मिथु	17/07/2030	वृष	17/04/2031
धनु	09/05/2028	वृश्चि	07/02/2029	तुला	08/11/2029	वृष	09/08/2030	मेष	10/05/2031
मक	01/06/2028	धनु	02/03/2029	वृश्चि	01/12/2029	मेष	01/09/2030	मीन	02/06/2031
कुंभ	24/06/2028	मक	25/03/2029	धनु	24/12/2029	मीन	24/09/2030	कुंभ	24/06/2031
मीन	17/07/2028	कुंभ	16/04/2029	मक	15/01/2030	कुंभ	16/10/2030	मक	17/07/2031
मेष	08/08/2028	मीन	09/05/2029	कुंभ	07/02/2030	मक	08/11/2030	धनु	09/08/2031
वृष	31/08/2028	मेष	01/06/2029	मीन	02/03/2030	धनु	01/12/2030	वृश्चि	01/09/2031
मिथु	23/09/2028	वृष	24/06/2029	मेष	25/03/2030	वृश्चि	24/12/2030	तुला	24/09/2031
कर्क	16/10/2028	मिथु	17/07/2029	वृष	17/04/2030	तुला	16/01/2031	कन्या	17/10/2031
सिंह	08/11/2028	कर्क	09/08/2029	मिथु	10/05/2030	कन्या	08/02/2031	सिंह	08/11/2031
कन्या	01/12/2028	सिंह	31/08/2029	कर्क	01/06/2030	सिंह	02/03/2031	कर्क	01/12/2031
तुला	23/12/2028	कन्या	23/09/2029	सिंह	24/06/2030	कर्क	25/03/2031	मिथु	24/12/2031

मक - वृष		मक - मेष		मक - मीन		मक - कुंभ		मक - मक	
24/12/2031		23/09/2032		24/06/2033		25/03/2034		24/12/2034	
23/09/2032		24/06/2033		25/03/2034		24/12/2034		24/09/2035	
मेष	16/01/2032	वृष	16/10/2032	मेष	17/07/2033	मीन	17/04/2034	धनु	16/01/2035
मीन	08/02/2032	मिथु	08/11/2032	वृष	09/08/2033	मेष	10/05/2034	वृश्चि	08/02/2035
कुंभ	02/03/2032	कर्क	01/12/2032	मिथु	31/08/2033	वृष	01/06/2034	तुला	02/03/2035
मक	24/03/2032	सिंह	23/12/2032	कर्क	23/09/2033	मिथु	24/06/2034	कन्या	25/03/2035
धनु	16/04/2032	कन्या	15/01/2033	सिंह	16/10/2033	कर्क	17/07/2034	सिंह	17/04/2035
वृश्चि	09/05/2032	तुला	07/02/2033	कन्या	08/11/2033	सिंह	09/08/2034	कर्क	10/05/2035
तुला	01/06/2032	वृश्चि	02/03/2033	तुला	01/12/2033	कन्या	01/09/2034	मिथु	02/06/2035
कन्या	24/06/2032	धनु	25/03/2033	वृश्चि	24/12/2033	तुला	24/09/2034	वृष	24/06/2035
सिंह	17/07/2032	मक	16/04/2033	धनु	15/01/2034	वृश्चि	16/10/2034	मेष	17/07/2035
कर्क	08/08/2032	कुंभ	09/05/2033	मक	07/02/2034	धनु	08/11/2034	मीन	09/08/2035
मिथु	31/08/2032	मीन	01/06/2033	कुंभ	02/03/2034	मक	01/12/2034	कुंभ	01/09/2035
वृष	23/09/2032	मेष	24/06/2033	मीन	25/03/2034	कुंभ	24/12/2034	मक	24/09/2035

चर दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - मीन		कुंभ - मेष		कुंभ - वृष		कुंभ - मिथु		कुंभ - कर्क	
24/09/2035		24/07/2036		25/05/2037		25/03/2038		23/01/2039	
24/07/2036		25/05/2037		25/03/2038		23/01/2039		24/11/2039	
मेष	19/10/2035	वृष	19/08/2036	मेष	19/06/2037	वृष	19/04/2038	मिथु	18/02/2039
वृष	14/11/2035	मिथु	13/09/2036	मीन	14/07/2037	मेष	15/05/2038	वृष	15/03/2039
मिथु	09/12/2035	कर्क	08/10/2036	कुंभ	09/08/2037	मीन	09/06/2038	मेष	09/04/2039
कर्क	03/01/2036	सिंह	03/11/2036	मक	03/09/2037	कुंभ	04/07/2038	मीन	05/05/2039
सिंह	29/01/2036	कन्या	28/11/2036	धनु	28/09/2037	मक	30/07/2038	कुंभ	30/05/2039
कन्या	23/02/2036	तुला	23/12/2036	वृश्चि	24/10/2037	धनु	24/08/2038	मक	24/06/2039
तुला	19/03/2036	वृश्चि	18/01/2037	तुला	18/11/2037	वृश्चि	18/09/2038	धनु	20/07/2039
वृश्चि	14/04/2036	धनु	12/02/2037	कन्या	13/12/2037	तुला	14/10/2038	वृश्चि	14/08/2039
धनु	09/05/2036	मक	09/03/2037	सिंह	08/01/2038	कन्या	08/11/2038	तुला	09/09/2039
मक	03/06/2036	कुंभ	04/04/2037	कर्क	02/02/2038	सिंह	04/12/2038	कन्या	04/10/2039
कुंभ	29/06/2036	मीन	29/04/2037	मिथु	28/02/2038	कर्क	29/12/2038	सिंह	29/10/2039
मीन	24/07/2036	मेष	25/05/2037	वृष	25/03/2038	मिथु	23/01/2039	कर्क	24/11/2039

कुंभ - सिंह		कुंभ - कन्या		कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि		कुंभ - धनु	
24/11/2039		23/09/2040		24/07/2041		25/05/2042		25/03/2043	
23/09/2040		24/07/2041		25/05/2042		25/03/2043		24/01/2044	
कन्या	19/12/2039	तुला	18/10/2040	वृश्चि	19/08/2041	तुला	19/06/2042	वृश्चि	20/04/2043
तुला	13/01/2040	वृश्चि	13/11/2040	धनु	13/09/2041	कन्या	15/07/2042	तुला	15/05/2043
वृश्चि	08/02/2040	धनु	08/12/2040	मक	09/10/2041	सिंह	09/08/2042	कन्या	09/06/2043
धनु	04/03/2040	मक	03/01/2041	कुंभ	03/11/2041	कर्क	03/09/2042	सिंह	05/07/2043
मक	29/03/2040	कुंभ	28/01/2041	मीन	28/11/2041	मिथु	29/09/2042	कर्क	30/07/2043
कुंभ	24/04/2040	मीन	22/02/2041	मेष	24/12/2041	वृष	24/10/2042	मिथु	24/08/2043
मीन	19/05/2040	मेष	20/03/2041	वृष	18/01/2042	मेष	18/11/2042	वृष	19/09/2043
मेष	14/06/2040	वृष	14/04/2041	मिथु	12/02/2042	मीन	14/12/2042	मेष	14/10/2043
वृष	09/07/2040	मिथु	09/05/2041	कर्क	10/03/2042	कुंभ	08/01/2043	मीन	08/11/2043
मिथु	03/08/2040	कर्क	04/06/2041	सिंह	04/04/2042	मक	02/02/2043	कुंभ	04/12/2043
कर्क	29/08/2040	सिंह	29/06/2041	कन्या	29/04/2042	धनु	28/02/2043	मक	29/12/2043
सिंह	23/09/2040	कन्या	24/07/2041	तुला	25/05/2042	वृश्चि	25/03/2043	धनु	24/01/2044

कुंभ - मक		कुंभ - कुंभ		मीन - मेष		मीन - वृष		मीन - मिथु	
24/01/2044		23/11/2044		23/09/2045		24/08/2046		25/07/2047	
23/11/2044		23/09/2045		24/08/2046		25/07/2047		24/06/2048	
धनु	18/02/2044	मीन	18/12/2044	वृष	21/10/2045	मेष	21/09/2046	वृष	22/08/2047
वृश्चि	14/03/2044	मेष	13/01/2045	मिथु	18/11/2045	मीन	19/10/2046	मेष	19/09/2047
तुला	09/04/2044	वृष	07/02/2045	कर्क	16/12/2045	कुंभ	16/11/2046	मीन	17/10/2047
कन्या	04/05/2044	मिथु	04/03/2045	सिंह	13/01/2046	मक	14/12/2046	कुंभ	14/11/2047
सिंह	29/05/2044	कर्क	30/03/2045	कन्या	10/02/2046	धनु	11/01/2047	मक	11/12/2047
कर्क	24/06/2044	सिंह	24/04/2045	तुला	10/03/2046	वृश्चि	08/02/2047	धनु	08/01/2048
मिथु	19/07/2044	कन्या	19/05/2045	वृश्चि	07/04/2046	तुला	07/03/2047	वृश्चि	05/02/2048
वृष	13/08/2044	तुला	14/06/2045	धनु	05/05/2046	कन्या	04/04/2047	तुला	04/03/2048
मेष	08/09/2044	वृश्चि	09/07/2045	मक	01/06/2046	सिंह	02/05/2047	कन्या	01/04/2048
मीन	03/10/2044	धनु	04/08/2045	कुंभ	29/06/2046	कर्क	30/05/2047	सिंह	29/04/2048
कुंभ	29/10/2044	मक	29/08/2045	मीन	27/07/2046	मिथु	27/06/2047	कर्क	27/05/2048
मक	23/11/2044	कुंभ	23/09/2045	मेष	24/08/2046	वृष	25/07/2047	मिथु	24/06/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 7
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	91%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
लहसुनिया	केतु	41%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना
मोती	चंद्र	38%	शत्रु व रोग, हानि
गोमेद	राहु	38%	हानि, शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	31%	रोग, व्यय
नीलम	शनि	25%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट, शत्रु व रोग
पुखराज	गुरु	9%	दुर्घटना, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
मूंगा	मंगल	0%	पराक्रम हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

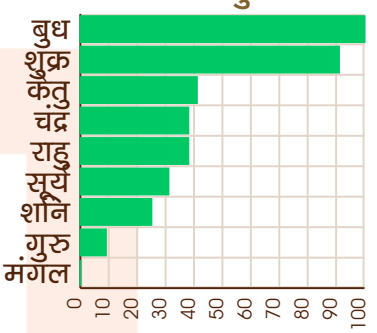

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	28/04/2001	6%	12%	0%	100%	9%	97%	38%	56%	16%
गुरु	28/04/2017	44%	50%	9%	100%	34%	78%	25%	38%	41%
शनि	28/04/2036	6%	12%	0%	100%	9%	97%	50%	50%	16%
बुध	28/04/2053	44%	12%	0%	100%	9%	97%	25%	38%	41%
केतु	28/04/2060	6%	12%	9%	100%	9%	97%	0%	12%	58%
शुक्र	28/04/2080	6%	12%	0%	100%	9%	100%	38%	50%	52%
सूर्य	28/04/2086	53%	50%	9%	100%	22%	78%	0%	12%	16%
चंद्र	28/04/2096	44%	56%	0%	100%	9%	91%	25%	12%	16%
मंगल	29/04/2103	44%	50%	21%	100%	22%	91%	25%	12%	52%

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

लहसुनिया, मोती, गोमेद, माणिक्य व नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पुखराज व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। बुध रत्न पन्ना आपकी बौद्धिक योग्यता, ज्ञान क्षमता एवं शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को जागृत करेगा। तथा पन्ना रत्न लेखन एवं कला का विकास करेगा। यह रत्न भाई-बहनों का स्नेह देगा एवं आप शत्रुओं को चातुर्य से परास्त कर सकेंगे। यह रत्न व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं लाभ प्राप्ति के सुअवसर देकर व्यापार में आपको अच्छी सफलता देगा। पन्ना रत्न मित्रों से संबंध मजबूत करेगा। संचार क्षेत्रों से आय मार्ग शुभफलकारी होंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है।

शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपमें नकारात्मक विचारों का बाहुल्य हो सकता है। गलत निर्णयों के लिए आपको पश्चाताप करना पड सकता है। रत्न प्रभाव से भ्रमात्मक ज्ञान और गलती के कारण शारीरिक कष्ट मिल सकते है। सगे भाइयों से विवाद हो सकता है। तंत्र-मंत्र के माध्यम से कष्ट मिल सकता है। लहसुनिया रत्न संतान सुख में कमी कर सकता है। उदर भाग में चोट लगने के कारण या अन्य कारणों से कष्ट मिल सकते है। लहसुनिया रत्न धारण से आप सफलता के लिए छल कपट का सहारा ले सकते है। यह रत्न आपमें साहस भाव की कमी का कारण बन सकता है।

केतु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि आठवें भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपकी आयु में कमी होगी। आप असाध्य रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। बुरे मित्रों से आपके संबंध हो सकते हैं। यह रत्न आपमें साहस की कमी करेगा तथा आपमें उतावलापन देगा। धन संचय करना आपके लिए बेहद कठिन होगा। इस रत्न से आपके मान-सम्मान में कमी हो सकती है। यह रत्न आपकी वृद्धावस्था में कष्ट का कारण बन सकता है। रत्न प्रतिकूलता आपकी भाषा में अशिष्टता का भाव देगी। इस रत्न को पहनकर आप दुरूसाधनों से धन संचय का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको अवैध धन कमाने की ओर अग्रसर करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्रमा का मोती रत्न धारण करने पर किसी विशेष मामले में

आपको अपमानित होना पड सकता है। आपके अपने मामा-मौसी से संबंध प्रतिकूल हो सकते है। अपने शत्रुओं की पहचान करना आपके लिए सरल नहीं होगा। यह रत्न आपको कफ रोगी, नेत्र रोगी, अल्पायु, आसक्त, व्ययी बना सकता है। इसके प्रभाव से आप अस्वस्थ्यता का अनुभव करेंगें। बढ़ते कर्ज आपको मानसिक चिंताएं दे सकते है। कर्ज का भुगदान ज्यादा आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्यो को शीघ्रता से करने की प्रवृर्ति कार्यो में गुणवत्ता का अभाव ला सकती है। मोती रत्न आपमें असंतोष का भाव ला सकता है। आपको आंखों और पेट से संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः राहू रत्न गोमेद धारण करने पर आपमें पारिश्रामिक क्षमता की कमी हो सकती है। यह रत्न स्वास्थ्य में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपको विलासी और भावुक स्वभाव अधिक दे सकता है। यह रत्न आपको वाचाल बना सकता है। आप समाज में योग्यतानुसार स्थान प्राप्त नहीं कर पाएंगे। आपके द्वारा धन लाभ कुछ अनैतिक तरीकों से हो सकते है। धन-लाभ प्राप्ति के लिए आप बुद्धि और चातुर्य का प्रयोग अधिक कर सकते है। आगे बढ़ने के लिए आप आंशिक रूप से स्वाथी भी हो सकते है। यह रत्न दूर स्थानों से आपकी लाभ प्राप्तियों को बाधित कर सकता है। आप कुछ हद तक अभिमानी हो सकते है। आय क्षेत्र के बढ़ते विवाद आपकी ऊर्जा और समय शक्ति का ह्रास कर सकते है।

राहु कर्क राशि में स्थित है व इसका स्वामी चन्द्र छठे भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः इस ग्रह का रत्न धारण करने से आपकी तेजस्विता में

कमी आ सकती है। माणिक्य रत्न आपको कठोर, क्रोधी एवं आक्रामक बना सकता है। रत्न की अशुभता आपको विवेक हीन, आलस्य युक्त और क्षमाहीन बना सकता है। तथा माणिक्य रत्न आपमें अहंकार भाव दे सकता है। आपको अत्यधिक महत्वाकांक्षी बना सकता है। इसके कारण आप कभी कभी स्वार्थी भी हो सकते है। रत्न धारण से सिर दर्द की समस्या आपके स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। यह रत्न आपको योग्यतानुसार पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति न होने दें। माणिक्य रत्न प्रभाव से बाल गिरने की समस्या तथा आंखों की समस्या आपको पीड़ित कर सकती है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। षष्ठेश शनि का रत्न नीलम आपके रोगों को प्रभावी कर सकता है। नीलम रत्न आपके रोग, ऋण और सेवा भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। स्वास्थ्य की अनियमितता भी यह रत्न आपको दे सकता है। शत्रु वृद्धि के कारण आप अपनी ऊर्जा शक्ति सकारात्मक कार्यो में नहीं लगा पाएंगे। छठे भाव का रत्न आपको जीवन में अर्थ की कमी दे सकता है। रत्न प्रभाव से आप नौकरी क्षेत्र में लगाए रखेगा। इसके कारण आपको व्यापार आदि कार्यो से दूर रहना पड़ सकता है। नीलम रत्न आपमें सदभाव और स्नेह की कमी कर सकता है। अधिक मेहनत के कार्यो में आपको रुचि की कमी हो सकती है। नीलम रत्न आपमें आलस्य भाव भी दे सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से

लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते है। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे है। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का ह्रास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते है। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यो में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

मूंगा

आपकी कुंड़ली में मंगल तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर रेल यात्राओं के दौरान आपका कर्मचारियों से लड़ाई झगड़ा हो सकता है। यह रत्न आपको असंतोष एवं तनाव दे सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपके पिता का स्वभाव क्रोधी एवं रुखा हो सकता है। आपको धनहानि और अलगाव का सामना करना पड़ सकता है। आपके पिता को मुकद्दमेबाजी और शत्रुओं से हानि के योग बन सकते है। यह रत्न आपके भाग्य में कुछ कमी कर सकता है। मूंगा रत्न आपको कानों या बाजुओं से संबंधित तकलीफें दे सकता है। अत्यधिक क्रोध के चलते आपके अपने मित्रों से संबंध खराब हो सकते है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शनि
(28/04/2017 - 28/04/2036)

शनि की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, मोती, पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(28/04/2036 - 28/04/2053)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, लहसुनिया, गोमेद व नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती, पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(28/04/2053 - 28/04/2060)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, गोमेद, मूंगा, पुखराज, माणिक्य व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(28/04/2060 - 28/04/2080)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और मोती, पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

सूर्य
(28/04/2080 - 28/04/2086)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया, गोमेद, मूंगा व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(28/04/2086 - 28/04/2096)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, गोमेद, पुखराज व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(28/04/2096 - 29/04/2103)

मंगल की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य व नीलम रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

राहु - 28/04/2001

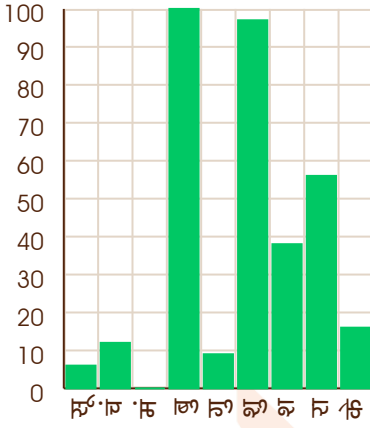

गुरु - 28/04/2017

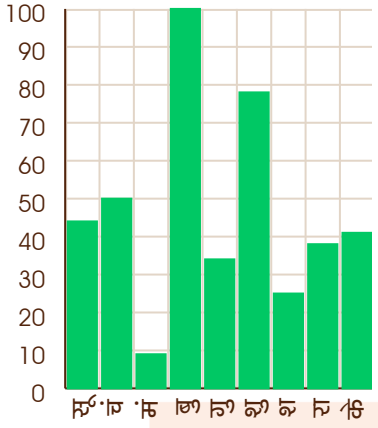

शनि - 28/04/2036

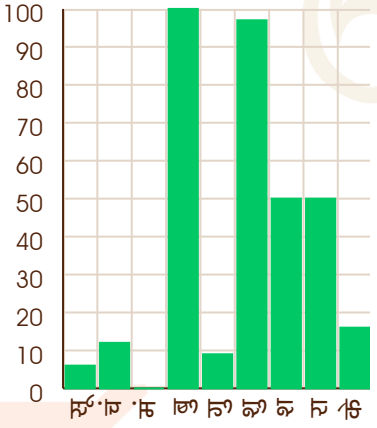

बुध - 28/04/2053

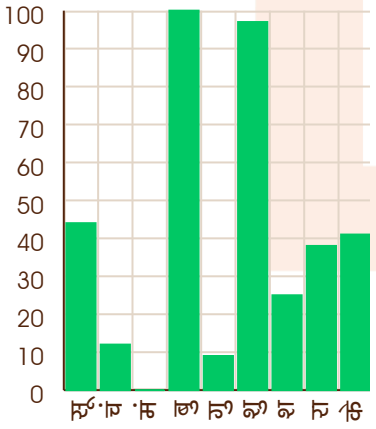

केतु - 28/04/2060

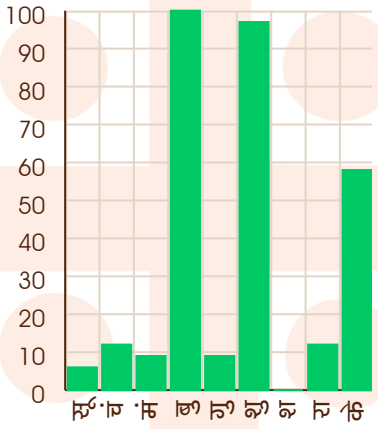

शुक्र - 28/04/2080

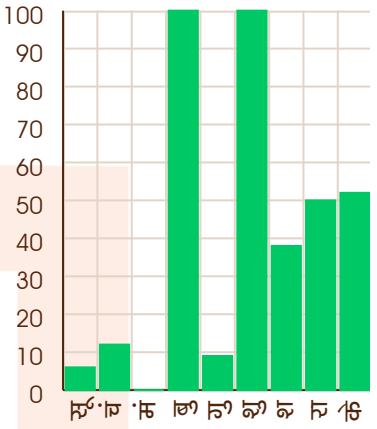

सूर्य - 28/04/2086

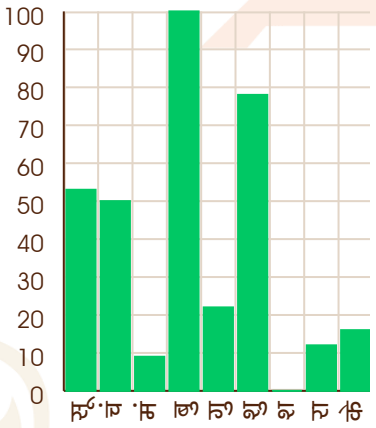

चन्द्र - 28/04/2096

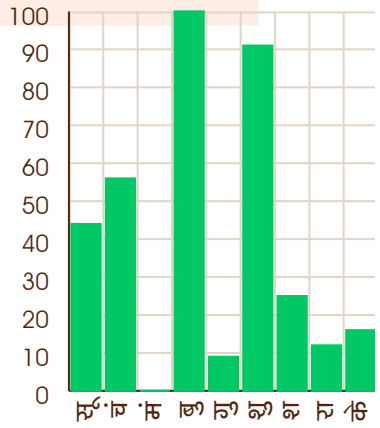

मंगल - 29/04/2103

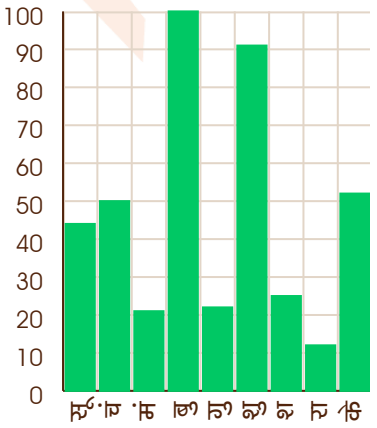

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

आपकी कुंडली में चन्द्र षष्ठ भाव में स्थित हैं। इसके परिणाम से शत्रुओं से कष्टों का सामना करना पड़ सकता हैं। आप रोग पीड़ित, चिंताग्रस्त, व्याधिक्य करने की प्रवृति से ग्रस्त हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त चन्द्र की अशुभता से आपके ऋण लेन-देन में बाधाएं आ सकती हैं।

गुरु का अष्टम भाव में स्थित होने से पैतृक संपति का नाश हो सकता है। बुद्धि विवेक से धनार्जन करने में सफल, माता के सहयोग से भाग्योन्नति, उन्नति में विलम्ब, कारावास संभव। आपका भाग्योदय विलम्ब से होगा। संघर्षो के उपरान्त आपको कार्यो में सफलता, धन और यश की प्राप्ति होगी। व्यय शुभ कार्यो पर होंगे। धन, कुटुंब और विद्या से सुख की प्राप्ति होगी। माता, घर, जमीन -जायदाद और वाहन सुख दे रहे हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते है, यह योग मानसिक सुखो में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती

हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
साढेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081	03/08/2081-07/01/2082	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती प्रथम ढैया	शुभ	सन्तति सुख
साढेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग मुक्ति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दम्पति

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है जिससे तृतीय भाव में मंगल की स्थिति प्रायः शुभ मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्य कलापों को निर्भय होकर सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको समय समय पर उचित सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आपको आवश्यक सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करेंगी।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी। इसके प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी। परन्तु पित गर्मी या रक्त विकार आदि से आप यदा कदा शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं। नवम भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कर्म करने पर अधिक विश्वास करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगी। पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सभी लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ

ही पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा। जिससे उत्साह पूर्वक आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम् भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर अष्टम् भाव में स्थित है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में शुक्र, शनि और केतु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें।

बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं। रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें। नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें। ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक 24 है। दो तथा चार के जोड़ से 6 आपका मूलांक होता है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र ग्रह है। अंक दो का चन्द्र तथा अंक चार का स्वामी भारतीय मत से राहु तथा पाश्चात्य मत से हर्षल ग्रह होता है। इन तीनों ही ग्रहों का संयुक्त प्रभाव आपके ऊपर आयेगा।

मूलांक 6 के प्रभाव से आप एक आकर्षण व्यक्तित्व की धनी होंगी। दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट करने की विशेष शक्ति आपके अन्दर रहेगी। सौन्दर्य बोध आपमें काफी रहेगा एवं विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण रहेगा। आप सुन्दर स्त्री-पुरूषों के मध्य अधिक समय बिताना पसन्द करेंगी तथा स्थायी संबंध बनाना आपको रास आयेगा। ललित कलाओं में आपकी रुचि रहेगी एवं एकाधकला आपकी स्थायी हॉबी के रूप में आ जायेगी।

आपको सुन्दर सुसज्जित घर, चाहे छोटा ही हो पर करीने से सजावट के साथ हा, ऐसी आपकी पसन्द रहेगी। आप अतिथि सत्कार में कभी भी कोई कमी अपनी समझ में नहीं करेंगी। आपके स्वभाव में थोड़ी हठधर्मिता रहेगी। इस कारण आपको कभी-कभी हानि उठानी पड़ेगी। अतः कोई भी निर्णय सोच-विचारकर सलाह, मशवरा के उपरांत प्रारम्भ करना आपके हित में रहेगा। प्रतिस्पर्धा से आप में ईर्ष्या जाग्रत होगी और आप अधिक उन्नति प्राप्त करने के लिए अधिक श्रम करेंगी, जिससे प्रतिस्पर्धा में विजय प्राप्त करेंगी।

प्रतिद्वन्दिता सहन न कर सकने के कारण कभी-कभी हानि उठानी पड़ेगी। चन्द्र एवं हर्षल के प्रभाववश आपकी दिनचर्या में परिवर्तन होते रहेंगे। आपकी सामाजिक स्थिति भी घटती बढ़ती रहेगी। कभी आप बहुत सुखानुभूति करेंगी तो कई ऐसे अवसर भी आयेंगे जब मायूसी छा जायेगी। अधिक कल्पनाशीलता तथा विध्वंसक कार्यों से दूर रहना आपके लिए हितकर रहेगा।

भाग्यांक सात का स्वामी भारतीय मत से केतु तथा पाश्चात्य मत से नेपच्यून ग्रह को माना गया है। यह कल्पना शक्ति, विचार शक्ति, अच्छी देता है। भाग्योदय रुकावटों के साथ करता है। आर्थिक क्षेत्र में प्रायः कमी करता है। धन संग्रह बड़ी- कठिनाई से होता है, अन्यथा ज्यादातर धन की कमी बनी रहती है। कला एवं दर्शन के क्षेत्र में आपका रुझान रहेगा। इन क्षेत्रों को आप कर्म-क्षेत्र बना सकती हैं। इनमें आपकी उन्नति निहित होगी।

आपको ऐसा रोजगार पसन्द आयेगा जिसमें यात्रा के अवसर मिलते रहें। दूर-दूर की यात्रा करना, सैर सपाटा आपके लिए रुचिपूर्ण रहेगा। कई एक यात्राओं से आप व्यावसायिक उन्नति प्राप्त करेंगी। दूर के व्यक्तियों से आपके अच्छे संबंध बनेंगे जो रोजगार व्यापार में आपको लाभ प्रदान करेंगे। प्राचीन रीति-रिवाजों पर आपकी आस्था कम रहेगी तथा परिवर्तन करते रहना आपको सुहायेगा। आपका कार्यक्षेत्र यदा-कदा परिवर्तित होता रहेगा।

आपका मूलांक 6 है तथा आपका भाग्यांक 7 है। मूलांक 6 का स्वामी शुक्र है तथा भाग्यांक 7 का स्वामी नेपच्यून है। मूलांक 6 और भाग्यांक 7 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक एवं भाग्यांक के मिलेजुले फल प्राप्त होंगे। शुक्र एवं नेपच्यून के

प्रभाववश आप कला के किसी क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करेंगी। चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला में आपको निपुणता हासिल होगी अथवा स्थायी रुचि बनी रहेगी। आपका रुझान कलात्मक वस्तुओं, दार्शनिक स्थलों की ओर अधिक रहेगा। आप ऐसा ही रोजगार-व्यापार पसंद करेंगी, जिसमें कला के किसी क्षेत्र का सतत् योगदान बना रहे। रोजगार-व्यापार के सिलसिले में अक्सर आपकी यात्राएं होती रहेंगी। यात्राएं आप दूर-दूर देशों की करेंगी तथा कुछ एक यात्राओं से आपको अच्छे लाभ की प्राप्ति होगी। धन संग्रह में आपको काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। जब कि भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुऐं आसानी से प्राप्त हो जाएंगी। जीवन की मध्य अवस्था से आपका उच्च भाग्योदय प्रारंभ होगा एवं अतिम अवस्था तक आपकी आर्थिक स्थिति काफी सुदृढ़ बन जाएगी। प्रारंभ में तो आपका सामाजिक स्तर सामान्य रहेगा, लेकिन अंतिम अवस्था में आपको काफी सामाजिक प्रभाव प्राप्त होगा।

आपका भाग्योदय 25 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 34 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 43 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है तथा भाग्यांक 7 की मित्रता 2 एवं 6 से है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे। इनसे आपके जीवन में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा मे, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगी, तो पाएंगी कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक से भी मेल स्थापित करें तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 6 एवं भाग्यांक 7 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार साबित होंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

शुक्र दिनांक 21 अप्रैल से 21 मई तक तथा 24 सितंबर से 13 अक्तूबर तक सूर्य, पाश्चात्यमतानुसार, वृष तथा तुला राशि में रहता है, जो भारतीय मतानुसार 13 मई से 14 जून तथा 17 अक्तूबर से 13 नवंबर तक का समय होता है। यह शुक्र की स्वराशि है। 14 मार्च से 12 अप्रैल तक मीन राशि से शुक्र उच्च का होता है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक छह के लिए कोई भी नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

आपके लिए शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार के दिन शुभ रहेंगे और यदि आपकी शुभ तारीखों में शुक्रवार, मंगलवार एवं गुरुवार पड़ रहा हो तो ऐसी तारीखें एवं दिन आपके लिए विशेष फलदायी सिद्ध होंगे।

शुभ तारीखें

आपके लिए अंग्रेजी माह की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखें किसी भी प्रकार का पत्र व्यवहार या किसी उच्चाधिकारी से संबंध या कोई भी व्यवसाय संबंधी नया कार्य प्रारंभ करने हेतु अधिक उपयुक्त तथा विशेष फलदायक रहेंगी।

अशुभ तारीखें

आपके लिए कोई भी महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य, पत्र व्यवहार संबंधी कार्य प्रारंभ करने हेतु 1, 8, 10, 17, 19, 26 एवं 28 तारीखें में शुभ नहीं है। अतः आप इन दिवसो में कोई भी कार्य प्रारंभ करने की भूल न करें। यही आपके लिए उचित रहेगा।

मित्रता या साझेदारी

आप केवल उन्हीं व्यक्तियों से अधिक मित्रता रखें जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों में अथवा 13 मई से 14 जून 12 अक्तूबर से 13 नवंबर एवं 14 मार्च से 13 अप्रैल के बीच हुआ हो। ऐसे व्यक्ति सुख एवं दुख के समय में भी अपनी मित्रता का परिचय देंगे तथा आपके रोजगार-व्यापार में भी सहायक होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

जिन महिलाओं का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीख को हुआ हो तथा जिनका मूलांक 3, 6, 9 हो, ऐसी महिलाएं आपके लिए प्रेम संबंध या विवाह संबंध हेतु उचित रहेंगी तथा आपके रोजगार आदि में भी आपको सफलता के शिखर पर पहुंचाएंगी।

अनुकूल रंग

आपके लिए शुभ रंग हल्का नीला, आसमानी, गहरा नीला, हल्का गुलाबी होने चाहिए। नीला हल्का नीला होना चाहिए और हो सके तो घर की दीवारें, चादर आदि का चुनाव भी इन्हीं रंगों के अनुरूप ही करें और यदि स्वास्थ्य में अच्छा परिवर्तन लाना हो तो इन्हीं रंगों के वस्त्र पहनें और हो सके तो इन्हीं रंगों में से किसी एक रंग का रुमाल हर समय अपने पास रखें, जो आपके लिए विशेष फलदायी रहेगा।

वास्तु एवं निवास

यदि आप स्वयं का भवन निर्माण के इच्छुक हैं तो इसके लिए आवश्यक है कि आप सही दिशा का चयन करें। आपके लिए अग्नि कोण दिशा उत्तम रहेगी। मकान क्रमांक 3, 6, 9 हो तो श्रेष्ठ रहेगा। आप शहर के अग्नि कोण क्षेत्र या भवन के अग्नि कोण क्षेत्र में निवास करें। वह आपके लिए उत्तम रहेगा। अतः आप अपने रोजगार संबंधी कार्यों को करते समय भी इन्हीं दिशाओं का चुनाव करें जो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक रहेगा। भवन का रंग, फर्नीचर का रंग हल्का नीला, आसमानी रखना श्रेष्ठ रहेगा।

शुभ वाहन नं

यदि आप चाहते हैं कि आपकी यात्रा मंगलमय हो तो यात्रा के समय उन्हीं अंकों का चुनाव करें जो आपके मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करें। मूलांक 6 के मित्र अंक 3, 9 हैं। अतः आप यात्रा वाहन, रेलवे सीट में इन्हीं अंकों का चुनाव करें और रहने के लिए कमरे का चयन करते समय नंबर 105 = 6 आदि होना उचित है। अगर आप स्वयं का वाहन खरीदते हैं तो उसका पंजीकरण क्रमांक 3, 6 एवं 9 ही होने चाहिए। जैसे अंक 5235 = 6 इत्यादि। ऐसा वाहन आपको अच्छा फलेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी, आपको फेफड़ों से संबंधित रोग, धातु क्षीणता, स्नायु निर्बलता, सीने की कमजोरी, मूत्र रोग, कफ जनित रोग, कब्जियत तथा जुकाम जैसे रोग पीड़ा प्रदान करेंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट तथा विपत्ति के समय आपको कार्त्तवीर्यर्जुन की पूजा एवं उपासना करनी चाहिए। स्त्री जातकों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

व्यवसाय

रेस्टोरेंट, होटल, ढाबे, भोजनालय, शिल्पकार, डिजायनर, महाजनी कार्य, संगीतज्ञ, उपन्यासकार, नाट्यकार, कहानीकार, बागवानी, वस्त्र व्यवसायी, अभिनेता, इत्र, तेल और अन्य तेलीय पदार्थों के विक्रेता, पुष्प विक्रेता, वस्त्राभूषण व्यवसाय, रेशम, टेरीलीन, टेरीन, ऊनी वस्त्रादि के विक्रेता, मिष्ठान व्यवसाय, घड़ीसाजी, नृत्याभिनय और काव्य तथा साहित्योपार्जन, सार्वजनिक कार्य, समाज सेवा, दास वृत्ति, यातायात, मुद्रणालय, खाद्य विभाग संबंधी समस्त कार्य।

व्रतोपवास

शुक्रवार को शुक्र अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। इकतीस या इक्कीस शुक्रवारों को शुक्र का व्रत करें। सफेद वस्त्र धारण करें एवं सफेद वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति शुक्र मंत्र का स्फटिक माला पर जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप हीरा धारण करें। यदि आप हीरा नहीं खरीद सकते तो ओपल, सफेद पुखराज, झरकन धारण करें। 51 सेंट का हीरा आप शुक्ल पक्ष में, शुक्रवार के दिन लाभ के चौघड़िया मुहूर्त में, प्लेटिनम या चांदी की अंगुठी में, दायें हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप शुक्र ग्रह की उपासना करें, अथवा भगवती दुर्गा की आराधना करें भगवती दुर्गा के अष्टाक्षरी मंत्र 'ओम् ह्रीं दुं दुर्गायै नमः' का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा अष्टमी के दिन व्रत करें एवं दुर्गा सप्तशती का पाठ करेंगे तो आप विभिन्न रोगों और समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवती दुर्गा के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए शुक्र के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, शुक्र के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

शुक्र गायत्री मंत्र - ऊँ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप शुक्र का ध्यान करें, मन में शुक्र की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ शुक्र को अनुकूल बनाने हेतु शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान एक सौ साठ माला का हैं। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।। जप संख्या 16000।।

वनस्पति धारण

आप शुक्रवार के दिन, एक इंच लम्बी सरफोंखा की जड़ ला कर, सफेद धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या प्लेटिनम या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे शुक्र के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक शुक्रवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, आंवला, इलायची, केसर और मैनसील आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ शुक्र के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

शुक्र की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को शुक्र के पदार्थ चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंध द्रव्य, चीता, गौ, भूमि आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

शुक्र को अनुकूल बनाए रखने हेतु शुक्र यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शुक्रवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

आपका जन्म हस्त नक्षत्र के द्वितीय चरण में कन्या लग्न में हुआ था। जन्मकाल-मेदिनीय क्षितिज वृषभ राशि का नवमांश तथा मकर राशि का द्रेष्काण भी उदित था। इस जन्म के समायोजन की वास्तविकता तो यह दृष्टिगत हो रहा है कि आप अपना दीर्घायु योग से प्रभावित सुखमय जीवन-व्यतीत करेंगी।

आपका जीवन सतत उत्तेजनात्मक प्रवृति से युक्त रहेगा। यदि आप सुव्यवस्थित ढ़ंग से कठिन श्रम के प्रति समर्पित भावना से युक्त होकर तथा दुःसाहसिक प्रवृति को त्याग कर ठोस निर्णयानुसार कार्य सम्पादन करें तो आप सन्तोषजनक लाभ प्राप्त कर सकती हैं। आप प्रायः अपने निर्णय के प्रतिकूल आकस्मिक रूप से नयी नीति के प्रति अन्वेषनात्मक परिवर्त्तनीय आचरण अपना लेती हैं। अस्तु आपको इस प्रकार की स्पन्दित प्रवृति को त्यागना पड़ेगा।

आप उच्चकोटि की महत्वकांक्षी है तथा आप अत्यधिक धन संचय करना चाहती हैं। आपको अपने कार्य सम्पादन की नीति को अपनी आवश्यकता के अनुरूप फैलाना एक वास्तविक प्रक्रिया हो सकती है। आप निश्चयपूर्वक एक साहसी एवं उद्यमी हैं। आप अपनी योजना को पूर्ण रूपेण सफलीभूत करेंगी। अर्थात् आपको आरामदायक जीवन व्यतीत करने के लिए अच्छे लाभांश की प्राप्ति होगी।

आप स्वाभाविक रूप से एक वणिक प्रवृति की महिला हैं। आप व्यवसायिक वातावरण में अपना धन निवेश हेतु प्रवृत होंगे। परन्तु आप सतर्कता पूर्वक निवेश के लिए धन का लाभांश क्षीण या आंशिक रूप में प्राप्त न हो। यह विचार कर अपना कदम बढ़ाएंगी। इसलिए आपको लेखा कार्य अथवा लेखा परीक्षण कार्य जैसा पदभार ग्रहण करने के लिए प्रस्तुत होना चहिए। सर्वथा सम्पादन कारिता, अध्यापन कार्य, परीक्षक कार्य आदि से सम्बन्धित कार्य आपके लिए स्वाभाविक है।

आप लोगों के कार्यकलाप क्या ठीक करते है अथवा क्या गलत करते है की आलोचना करेंगी। आप पूर्ण शिक्षित एवं कुशाग्रबुद्धि की प्राणी हैं। आप उनकी त्रुटिपूर्ण आचरण के प्रति तर्कता पूर्वक स्थित रह कर उनकी दुर्बलता का ध्यान रखेंगी।

आप नकारात्मक विशेषताओं का शुद्धिकरण करेंगी। परिणाम-स्वरूप आपके कुछ मित्रों में से अधिकांश व्यक्ति आपके शत्रु बन जाएंगे तथा आपके व्यवहार से असन्तुष्ट होकर, आपको जन सामान्य की दृष्टि में बेनकाब कर न्यायालय तक ले जा सकते है। अतः आप अन्य लोगों की अति आलोचना नहीं करे। अर्थात् दूसरों के लिए दुष्कर वातावरण का निर्माण नहीं करे। आप सर्वथा अपने मित्रों एवं अधिनस्थ कर्मचारियों का उपयुक्त चयन किया करें ताकि वे आपके लिए हितकर हों।

आप धार्मिक-ग्रन्थों का अध्ययन कर जीवन का यथेष्ठ अनुभव प्राप्त करेंगी। परन्तु आप अपनी शिक्षा का अभ्यास असंभावित रूप से नहीं कर सकेंगी। आप अनेकों वासनात्मक मित्रों के साथ संगठित होकर आनन्द प्राप्त करना चाहेंगी। आप इस प्रकार के अध्यवसाय से

प्रतिकूल आचरण करें अन्यथा आपका मधुर पारिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त हों सकता है। आपका अच्छे व्यवहार तथा स्नेह प्रदान करने वाले पति एवं अच्छी सन्तान होंगी जो अच्छी प्रकार से आपका जीवन व्यतीत करेंगी।

आपके जीवन का महत्वपूर्ण अंश आपका हृष्ट पुष्ट शरीर एवं प्रसन्नतम जीवन होगा। आपको अपनी स्वास्थ्य सम्बन्धी यथा पाचन क्रिया एवं नसों की दिक्कतों से संबंधित रोगों के प्रति भली प्रकार सावधानी बरतनी चाहिए। क्योंकि ये अति संवेदनशील बाते हैं। अन्यथा आप दस्त सम्बंधी रोग, टायफाईड अथवा स्नायविक घबराहट जैसे रोग के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अस्तु आपकों चिकित्सक की राय ग्रहण करना चाहिए तथा दूषित खाद्य पदार्थो को त्यागकर शाकाहार को प्राथमिकता देनी चाहिए।

आपके लिए साप्ताहिक वारों में भाग्यशाली दिन बुधवार तथा शुक्रवार है। परन्तु आपको रविवार, गुरूवार, मंगलवार एवं सोमवार के दिनों का परित्याग करना चाहिए क्योंकि ये चारों दिन आपके लिए अनुकूल नही है। शनिवार आप के लिए मध्य फलदायक है।

आपके लिए अंकों में अंक 2, 3, 5, 6 एवं 7 अंक अनुकूल एवं अंक 1 एवं 8 अंक प्रतिकूल हैं।

आपके लिए रंगों में उत्कृष्ट एवं अनुकूल रंग सफेद, पीला, हरा एवं सूआपंखी रंग है। इसके अतिरिक्त रंग लाल, काला, एवं नीला रंग आपके लिए सर्वथा त्याज्य है।

ग्रह फल

सूर्य

लग्न (प्रथम) में सूर्य हो तो जातक स्वाभिमानी, चंचल, कृशदेही, प्रवासी उन्नत नासिका, विशाल ललाटवाला, पित्त-वातरोगी, शूरवीर, अस्थिर सम्पत्तिवाला एवं अल्पकेशी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको

जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

बुध

लग्न (प्रथम) में बुध हो तो जातक आस्तिक, गणितज्ञ, दीर्घायु, उदार-विनोदी, वैद्य, विद्वान, स्त्रीप्रिय, मितव्ययी एवं मधुरभाषी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मेष राशि में गुरु हो तो जातक ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, वकील, वादी, प्रसिद्ध, कीर्तिमान, विजयी, उस्वभाव, धनी, विद्वान, प्रचुर सन्तान, उदार, नम्रभाषी परन्तु अपने आपको दूसरों से उच्च समझने वाला, सुखी विवाहित जीवन एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, क्रूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रूचि रहती है। सदगुणों से वे युक्त रहते हैं एवं भाग्यशाली भी होते हैं। उनके सांसारिक महत्व के कार्य अल्प परिश्रम के द्वारा ही भाग्यबल से सम्पन्न हो जाते हैं फलतः कार्यक्षेत्र में वे उन्नतिशील रहते हैं। उनकी बुद्धि भी तीक्ष्ण होती है तथा कठिन से कठिन विषय को समझने तथा समाधान करने में वे समर्थ रहते हैं। राजनीति में यद्यपि उनकी रूचि अल्प होती है तथापि राजकार्यों में सलाहकार या सचिव अथवा प्रशासनिक क्षेत्र में वे अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त बुद्धि द्वारा संचालित होते हैं तथा भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगी तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगी। अध्ययन के प्रति आपके रूचि रहेगी तथा कला लेखन मनोविज्ञान या आलोचना आदि के क्षेत्र में आपको इच्छित सफलता प्राप्त होगी। अपनी योग्यता एवं स्वभाव से जीवन में आपको सुखैश्वर्य एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति होगी। आपके बुद्धि भी तीव्र होगी एवं गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगी। यदि आप नौकरी या कोई कार्य नहीं करती है तो उपरोक्त योग आपके पति पर घटित होंगे।

लग्न में बुध की स्थिति के प्रभाव से आपका स्वरूप सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगी। आपकी वाणी मधुर एवं ओजस्वी होगी तथा आदर्श वक्ता के रूप में आप जानी जाएंगी। व्यावहारिक रूप से आप अत्यंत ही कुशलता का प्रदर्शन करेंगी जिससे लोग आपसे प्रभावित रहेंगी। कला एवं साहित्य के प्रति आपके विशेष रूचि होगी तथा लेखन सम्पादन आदि में भी सफलता अर्जित करेंगी। शारीरिक बल की आप में प्रचुरता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से जीवन में इच्छित धनवैभव एवं भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में सफल होंगी। साथ ही समाज एवं कार्य क्षेत्र में आप प्रतिष्ठित तथा यशस्वी महिला होंगी।

स्वभाव से आप शांत एवं उदार रहेंगी तथा समय पर अन्य जनों के उपकार करने में भी तत्पर होंगी श्रेष्ठ कार्यों को करने में आपकी हमेशा रूचि रहेगी। आप एक बुद्धिमान महिला होंगी तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करेंगी एवं गूढ़ से गूढ़ विषय को भी आत्मसात करने में सफल होंगी।

धर्म के प्रति आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा समय समय पर श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगी। अपने इन कार्यों से आपको आत्मिक शांति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगी तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग समय समय पर मिलता रहेगा। इस प्रकार आप अपनी बुद्धिमता योग्यता एवं पराक्रम से अपने महत्वपूर्ण कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगी तथा उनमें इच्छित सफलता अर्जित

करके शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगी।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में तुला राशि उदित हुई है जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मधुर एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी तथा अपने वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सिद्ध करने में भी सम्पन्न रहेंगी। इसके साथ ही प्रौढ़ावस्था में आप अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट की भी अनुभूति कर सकती हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा धार्मिक तथा शुभ एवं मांगलिक कार्यो को समय समय पर सम्पन्न करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य उत्सवों की भी प्रिय होंगी तथा ऐसे उत्सवों के आयोजन भी समय समय पर होते रहेंगे। जीवन में आपको पैतृक सम्पति भी अर्जित होगी। साथ ही अपने परिश्रम पराक्रम एवं सौभाग्य से भी वांछित मात्रा में धनऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में सफल रहेंगी। परिवार को सुख सुविधा तथा प्रसन्नता प्रदान करना आपका मूल उददे्श्य रहेगा। समाज में आप एक आदरणीया महिला होंगी तथा सौभाग्य से अपना जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगी। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृश्चिक राशि उदित हुई है जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति प्रबल रहेगी तथा किसी भी वस्तु को आप चिर काल तक नहीं भूलेंगे। आप एक आत्म विश्वासी, साहसी तथा पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने इन्हीं गुणों से सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको इच्छित सफलता भी प्राप्त होगी। मंगल के प्रभाव से आपकी निर्णय लेने की शक्ति दृढ़ रहेगी तथा मस्तिष्क भी हमेशा सक्रिय एवं सजग रहेगा।

जीवन में भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही आप भी उनका पूरा ध्यान रखेंगी एवं सुख दुख में उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके प्रति वे हमेशा आज्ञाकारी, विश्वसनीय तथा कर्तव्य परायण रहेंगे। अतः पारिवारिक शान्ति तथा समृद्धि के लिए उनकी गलतियों को भी क्षमा कर देंगी। साथ ही जमीन जायदाद आदि से भी युक्त रहेंगी एवं इससे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होगा। आप परेशानी, क्रोधावस्था तथा अनावश्यक वादविवाद आदि में अप्रिय स्थिति से बचने में समर्थ रहेंगी। अपनी नेतृत्व प्रतिभा तथा अन्य गुणों से समाज में आप एक गणमान्य महिला होंगी। आधुनिक संचार संबंधी महत्वपूर्ण उपकरण यथा टेलीफोन, टेलीविजन तथा वाहन आदि से आप युक्त रहेंगी तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगी । यदा कदा संगीत के प्रति भी आप रुचिशीलता का प्रदर्शन करेंगी । दूर समीप की यात्राओं से भी आपको लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप पराक्रमी कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा अन्य जनों से यदा कदा विवाद भी होगा अतः सतर्क रहें।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगी। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप एक वैभवशाली महिला होंगी तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगी।

आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगी। आपको चल सम्पत्ति से शीध्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूंजी निवेश कर सकती हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगी तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगी। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगी एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगी तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगी।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील महिला होंगी तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगी। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंको से ससम्मान उतीर्ण करेंगी। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकती हैं।

यद्यपि आप जीवन में सामान्यतया स्वस्थ ही होंगी परंतु वृद्धावस्था में यदा कदा रक्त चाप आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः यदि खान-पान का उचित पथ्य रखें तो ऐसी समस्याओं से आप सुरक्षित हो सकती हैं तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत

करेंगी।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा केतु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र एवं उग्र बुद्धि के स्वामिनी होंगी तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की अवश्य छाप होगी। इससे अन्य सामाजिक लोग आपसे प्रभावित होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्म ग्रंथो में आपकी रूचि अल्प मात्रा में ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान एवं साहित्य में पूर्ण रूचि होगी तथा यत्न पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में नित्य अध्ययनशील होंगी तथा परिश्रम पूर्वक उनमें विशिष्ट शोध कार्य या सिद्धांतों का प्रति-पादन भी कर सकती हैं। इस सबसे आप एक विदुषी के रूप में समाज के समक्ष स्वयं को स्थापित करेंगी जिससे वांछित सम्मान प्राप्त होगा।

केतु की स्थिति शनि की राशि में होने के कारण प्रेम प्रसंगों में भी आपकी रूचि होगी। ऐसे सम्बन्ध आप मनोरंजन एवं दिलबहलाव के लिए स्थापित करेंगी। आपके प्रेम प्रसंगो में भावनात्मक आकर्षण की अपेक्षा भौतिक आकर्षण होगा जिससे यदा-कदा आप नैतिकता या मर्यादा का भी अतिक्रमण कर सकती हैं। लेकिन यदि आप ऐसा करेंगी तो आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा सामाजिक सम्मान भी प्रभावित होगा। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

सन्तति भाव में केतु की स्थिति के प्रभाव से सन्तति प्राप्ति में आपको विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु सन्तति अवश्य होगी। आपकी सन्तति तेजस्वी पराक्रमी एवं उग्र स्वभाव से युक्त होगी परन्तु जीवन में स्वपराक्रम से वे उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। माता-पिता के प्रति आंतरिक रूप से उनके मन में पूर्ण मान-सम्मान का भाव होगा परन्तु प्रत्यक्ष रूप से वे आज्ञापालन कम ही करेंगे तथा अपनी इच्छा के कार्य अधिक करेंगे। वे महत्वपूर्ण शुभ एवं सांसारिक कार्यो को भी अपनी ही इच्छा से सम्पन्न करेंगे तथा माता-पिता से सलाह कम ही लेंगे। लेकिन इसको आप बुरा नहीं मानें तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य को सम्पन्न करने दें। इसी से दोंनो पक्षों का कल्याण होगा तथा आपस में विश्वास तथा सद्भाव बना रहेगा। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में अपने लिए यथोचित धन संग्रह करके रखना चाहिए तथा किसी भी प्रकार से बच्चों की ओर से सेवाभाव की अपेक्षा न करें।

अध्ययन की दृष्टि से आपकी सन्तति सामान्य उन्नतिशील होगी तथा परिश्रम से ही वे शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। हालांकि आप भी उनके लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगी लेकिन वे पराक्रमी एवं व्यावहारिक होंगी। अतः कम शिक्षा से भी वे जीवन में यथोचित मात्रा में जीविकार्जन में पूर्णरूपेण समर्थ होंगे। अतः आपको उनकी ओर से विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उनका अन्य जनों से विवाद होता रहेगा जिससे अपने सद्व्यवहार से संभालने की कोशिश करेंगी लेकिन मानसिक तनाव की अनुभूति करेंगी।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा आयु भी दीर्घ होगी। आप एक दयालु प्रवृत्ति की महिला होंगी परन्तु यदा वार्तालाप में कठोर शब्दों का प्रयोग कर सकती है इससे कई लोग आपसे विरोध की भावना रखेंगे। साथ ही लोग आपके वैभव एवं खुशाहली से ईर्ष्या के कारण भी आपसे शत्रुता का भाव रखेंगे। यद्यपि आप एक सम्मानीया महिला होंगी तथापि आपका विरोधी पक्ष भी प्रबल रहेगा। आप अपने पारिवारिक सदस्यों पर अत्यधिक व्यय करेंगी। अतः इसी परिपेक्ष्य में आपको ऋण आदि भी लेना पड़ सकता है। इसके भुगतान में विलम्ब के कारण ऋणदाता द्वारा आपके सम्मान में हानि की संभावना हो सकती है लेकिन अपनी प्रतिभा तथा अधिकार के बल पर आप इन समस्याओं का सामना एवं समाधान करने में समर्थ रहेंगी।

आपका सेवक वर्ग आज्ञाकारी रहेगा तथा पूर्ण ईमानदारी से आपकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। अपने कार्य से वे आपको सन्तुष्ट रखेंगे लेकिन यदा कदा इनसे मान हानि की भी संभावना रहेगी अतः इनसे व्यक्तिगत कलह तथा कीमती वस्तुओं को हमेशा दूर रखना चाहिए। मुकद्दमे आदि कार्यो के प्रति आप लापरवाह रहेंगी परन्तु आपको ऐसे मामलों का सावधानी एवं सतर्कता पूर्वक अवलोकन करना चाहिए तथा अपने व्यापारिक तथा अन्य हिसाब को सही रखना चाहिए। यदि आप इस प्रकार से नियमानुसार कार्य सम्पन्न करती रहें तो आपको किसी भी क्षेत्र में कोई विशेष परेशानी नहीं होगी। साथ ही फौजदारी मुकद्दमे में आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

मामा मामियों से आपके संबंध विशेष अच्छे नहीं रहेंगे। प्रत्यक्ष रूप से तो आपके प्रति वे सदभावना का प्रदर्शन करेंगे परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आपके सहयोग आदि में कोई भी रूचि नहीं रहेगी। अतः संबंधों में मधुरता रखने के लिए बुद्धिमता का प्रयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में आप गुर्दे तथा उदर संबन्धी परेशानी की अनुभूति कर सकती है। अतः युवावस्था में खान पान संबंधी परहेज अवश्य रखें।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील वात कफ प्रकृति वाला आस्तिक एवं धनवान होता है साथ ही स्वभाव से वह शांत, कर्तव्यपरायण एवं सांसारिक कार्यो में दक्ष होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपके पति सुशील एवं शांत स्वभाव के होंगे। सांसारिक कार्यो को सम्पन्न करने में वह बुद्धिमता का प्रर्दशन करेंगे। जिससे शीर्घ ही कार्य में सफलता प्राप्त होगी। बुध के प्रभाव से उनमें कर्तव्य परायणता का भाव भी रहेगा।

आपके पति का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा साथ ही शारीरिक संरचना उनकी आकर्षक होगी तथा शरीर में पुष्टता बनी रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व एवं सौन्दर्य के आकर्षण में वृद्धि होगी। कला एवं संगीत में उनकी रूचि होगी तथा इस पर अपना समय भी व्यतीत करेंगे इसके अतिरिक्त भौतिक एवं संदर वस्तुओं के प्रति भी उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा।

आपका विवाह विज्ञापन के द्वारा सम्पन्न होगा। आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी सम्पन्न कर सकती हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी होगा एवं एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं सम्मान की भावना रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को एक दूसरे की सलाह तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे आपके पति के स्वभाव में सौम्यता रहेगी। जिससे संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में सम्पन्न होगा तथा विवाह में मायके से आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी बहुमूल्य उपकरण तथा वस्तुएं उपहार में मिलेंगी। सास ससुर के साथ आपके औपचारिक संबंध बने रहेंगे।

सास ससुर के प्रति आपके पति का सेवा भाव रहेगा। तथा वह सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगे। साले एवं सालियों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने में समर्थ रहेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रश्क्त होंगे।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपकी आध्यत्म ज्यौतिष या तंत्र मंत्र के प्रति विशेष रूचि नहीं रहेगी। इसका मुख्य कारण यह होगा कि आप अपने कार्य क्षेत्र में पूर्ण व्यस्त रहेंगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने कार्यो को सम्पन्न करेंगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर ही अधिक विश्वास करेंगी। इस प्रकार व्यस्तता तथा तत्परता के कारण आपके पास समय का अभाव रहेगा। यदि आपके पास समय बचे तो आप अन्यत्र उसका सदुपयोग करना पसन्द करेंगी लेकिन आध्यात्म संबन्धी प्रवचनों का आप यदा कदा श्रवण कर सकती हैं। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी तथा विस्तृत जमीन जायदाद की स्वामिनी बनेंगी। यदि आप इसका विक्रय भी करेंगी तो इससे आपको वांछित कीमत मिलेगी। इसकी कीमतों में निरन्तर वृद्धि के कारण इसे इच्छित कीमत पर बेचकर वांछित धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा ससुराल में किसी प्रकार की कमी नहीं होगी तथा सर्वप्रकार के सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगे। बीमा आदि करने से भी आपको इच्छित लाभ होगा। अतः समय समय पर आप अपना तथा महत्वपूर्ण वस्तुओं का मकान या अन्य का बीमा करवाती रहें। आपकी कुंडली में घर में चोरी आदि की समस्याएं अल्प रहेंगी तथापि सुरक्षा वश आपको बहुमूल्य वस्तुओं को सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए लेकिन दुर्घटना आदि के प्रति आपको पूर्ण रूप से सचेत रहना चाहिए अन्यथा न्यूनाधिक रूप से ऐसी घटना जीवन में घट सकती है लेकिन उससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा सामान्यतया अपना सांसारिक जीवन सुख पूर्वक ही व्यतीत करेंगी।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा यह गुण आपको पैतृक एवं पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त होगा। धार्मिक कार्य कलापों को आप श्रद्धा पूर्वक सम्पन्न करेंगी तथा दैनिक पूजा या पाठ आदि में भी तत्पर रहेंगी। यद्यपि युवावस्था में दैनिक पूजा या ध्यान करने में असमर्थ सी रहेंगी परन्तु ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था विद्यमान रहेगी। साथ ही आध्यात्मिक तथा ध्यान योग के प्रति भी रूचिशील रहेंगी तथा उपरोक्त विषयों के ग्रंथों का रूचि पूर्वक अध्ययन करेंगी। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी तथा ज्यौतिष आदि शास्त्रों के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा इनका न्यूनाधिक ज्ञानार्जन में भी रूचिशील रहेंगी इसके अतिरिक्त आपके पूर्वाभास तथा भविष्य वाणियां भी सत्य सिद्ध होंगी।

उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगी तथा इसके द्वारा समाज में इच्छित मान सम्मान तथा प्रसिद्धि प्राप्त होगी। साथ ही तीर्थ स्थानों की भी आप यात्रा करेंगी जिससे आपको ज्ञान तथा लाभ अर्जित होगा। वैदिक साहित्य में भी आपकी रूचि रहेगी तथा वृद्धावस्था में अपना अधिकांश समय भगवत भजन में व्यतीत करेंगी आप अपने परिश्रम एवं सौभाग्य से वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में भी समर्थ रहेंगी।

पौत्रों के द्वारा आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। साथ ही अपने पूर्व जन्म के पुण्यों के द्वारा इस जीवन में सुख एवं वैभव अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दीनों की सहायता करने वाली, दानी, सर्व अलंकरों से युक्त तथा अतिथि सेवा में तत्पर रहकर धार्मिक प्रवृति का अनुपालन करती हुई अपने जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत करेंगी।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने की इच्छुक होंगी तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगी जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्याख्याता, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासानिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते है तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा या ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगी। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहती हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगी। समाज में आप एक प्रभावशाली महिला होंगी तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगी। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप अपने परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में समर्थ रहेंगी तथा अन्य क्षेत्रों में भी सौभाग्यशाली रहेंगी। माता के द्वारा आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित मात्रा में धन लाभ प्राप्त करेंगी या वे किसी उद्यम आदि में आपको किसी प्रकार का सहयोग प्रदान कर सकती है। साथ ही आप जल से उत्पन्न पदार्थो के द्वारा यथा रत्न या वस्त्र आदि के व्यापार अथवा कार्य से धनार्जन करेंगी। यदि आप कार्यरत नहीं है तो उपरोक्त आय स्रोतों से आपके पति लाभ अर्जित करेंगे। इस प्रकार स्वपरिश्रम एवं सौभाग्य से अपनी आकाक्षांओं तथा इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ होंगी।

आपकी कुंडली के अनुसार ज्येष्ठ भाइयों की अपेक्षा बहिनों से आपको इच्छित सहयोग लाभ एवं स्नेह की प्राप्ति होगी साथ ही माताजी से भी आप वांछित स्नेह एवं सुख की प्राप्ति होगी। आपकी मित्रता का क्षेत्र विस्तृत रहेगा तथा मित्र मंडली में आदरणीया रहेंगी। आपके सभी मित्र गुणवान शिक्षित तथा बुद्धिमान होंगे। अवस्था के साथ साथ सभी सामाजिक जनों एवं मित्रों के प्रति आपके मन स्नेह एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होगी तथा उन सबकी सेवा एवं सहायता के लिए तत्पर रहेंगी। परिवार के प्रति आपके मन में पूर्ण आकर्षण रहेगा तथा अपने अधिकाशं समय को पारिवारिक जनों के मध्य ही व्यतीत करेंगी। साथ ही अपने क्षेत्र एवं समाज में आपकी प्रसिद्धि रहेगी। जीवन में आपको कोई विशिष्ट सामाजिक सम्मान भी प्राप्त होगा। इस प्रकार आपका सामान्य जीवन सपरिवार सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आपकी कार्य क्षेत्र की उन्नति में सुदृढ़ता रहेगी तथा भूमि से उत्पन्न उत्पादों के द्वारा आपको वांछित लाभ होगा। आप शीघ्रातिशीघ्र धनवान होने की कामना करेंगी। अतः इस उददेश्य की पूर्ति के लिए आप अथक परिश्रम करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में आप अत्यंत ही सतर्कता का परिचय देंगी तथा पैसा कहां से आकर कहां जा रहा है इसका आपको पूर्ण ध्यान रहेगा। साथ ही अत्यधिक सोच विचारकर आप व्यय करेंगी इस प्रवृति से आप पूंजी निवेश में अधिक धन लगाएंगी जिससे अनुकूल बचत भी बनी रहेगी। आप मध्यमवस्था तक समाज के समक्ष अपने आपको एक धनवान महिला के रूप में स्थापित करने में समर्थ रहेंगी।

आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं बैंक में आपका स्थान सम्मानीय रहेगा। आपके पास सामान्यतया कोई व्यसन नहीं होंगे तथा शौक भी विशेष नहीं रहेगा। अतः आपका व्यय उचित एवं अनुकूल मात्रा में होगा जिससे आर्थिक बचत बनी रहेगी। परिवार के प्रति आप अपनी पूर्ण जिम्मेवारी निभाएंगी तथा उनकी सुख सुविधाओं के लिए समय समय पर आवश्यक व्यय करती रहेगी साथ ही बच्चों के रहन सहन, खान पान तथा अन्य स्तर में भी वृद्धि करने में तत्पर रहेंगी।

आपको यात्रा करना रूचिकर लगेगा वैसे आपकी प्रवृति भ्रमण प्रिय रहेगी आपकी यात्राएं व्यवसाय या कार्य क्षेत्र से संबंधित रहेगी। साथ ही यदा कदा भ्रमण या दर्शनीय स्थानों की सैर के लिए भी यात्रा करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में एक बार आपकी अवश्य ही विदेश यात्रा होगी जिसके प्रभाव से आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी तथा सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

नक्षत्रफल

आप शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कुम्भ तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी आद्य, वर्ण शूद्र, गण राक्षस, वर्ग मेष तथा योनि अश्व होगी। नक्षत्र के चतुर्थ चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "सु" या "सू" अक्षर से होगा यथा- सुषमा आदि।

आप ठंड से अत्याधिक व्याकुलता प्राप्त करेंगी एवं उसे सहन करने में स्वयं को असमर्थ समझेंगी। आप एक साहसी महिला होंगी एवं साहसिक कार्यों को करने के लिए सर्वदा उद्यत रहेंगी आपके साहस को देखकर अन्य व्यक्ति भी आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक व्यवहार कुशल महिला होंगी तथा अत्यन्त ही चतुराई के साथ अपने कार्यों को सिद्ध करेंगी। इसके अतिरिक्त आपके शत्रु आपसे हमेशा भयभीत तथा पराजित रहेंगे एवं आपका विरोध करने में सर्वथा असमर्थ रहेंगे।

शीतभीरूरतिसाहसी सदानिष्ठुरो हि चतुरो नरो भवेत्।
वैरिणामतिशयेन दारूणो वारूणोडनि यस्य स सम्भवं।।
जातकाभरणम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक शीत से डरने वाला, अत्यन्त साहसी, कठोर, चतुर तथा शत्रुओं का नाश करने में सफल होता है।

ज्योतिष शास्त्र में आपकी नैसर्गिक श्रद्धा तथा रूचि रहेगी एवं इस शास्त्र का आपको अच्छा ज्ञान भी रहेगा। आप एक शान्त स्वभाव की महिला होंगी एवं अपने अधिकांश कार्यों को शान्ति से ही सम्पन्न करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। आप में अनावश्यक उग्रता तथा हिंसक भावों का भी अभाव रहेगा। साथ ही अल्प मात्रा में भोजन करना आपको अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा।

कालज्ञः शततारकोद्भवनरः शान्तो ळल्पभुक् साहसी।।
जातक परिजातः

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य समय का ज्ञाता अर्थात् ज्योतिषी, शान्त स्वभाव युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला तथा पूर्ण रूप से साहसी होता है।

आप अतुल धन की स्वामिनी होंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित होगी। लेकिन आप स्वभाव से कृपण भी होंगी अतः धन को अत्यन्त ही सोच विचार कर खर्च करेंगी एवं धन संचय में ही अधिकांशतः तत्पर रहेंगी। पुरूष वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे एवं अवसरानुकूल उनकी सेवाकार्य के लिए भी आप उद्यत रहेंगी। अतः इनसे आपको पूर्ण सम्मान तथा आदर प्राप्त होगा। आप घर से बाहर विदेश में भी यात्रा करती रहेंगी।

कृपणो धनपूर्णेः स्यात्परदारोपसेवकः।
जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत।।
मानसागरी

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र का जातक कृपण, धन से पूर्ण, परस्त्री सेवी, विदेश में भ्रमण करने वाला तथा काम चेष्टा वाला होता है।

आप हमेशा स्पष्ट बोलने वाली होंगी तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से सबके समक्ष अपने विचार रखेंगी। आपकी इस प्रवृति से कई लोग आपसे प्रसन्न होंगे तो कई लोग अप्रसन्न भी रहेंगे। आप विभिन्न प्रकार के व्यसनों में भी अनुरक्त रहेंगी तथा उनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त आप दुराग्रह प्रवृति से भी युक्त रहेंगी एवं अन्य जनों से अपनी ही बात को मनवाने की अनावश्यक चेष्टा करेंगी।

स्पुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिक शतभिषजि दुर्ग्राह्यः।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् शतभिषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्ट वक्ता, व्यसन प्रेमी, शत्रुओं को जीतने वाला, अविचार के कार्यों में प्रवृत तथा स्वतंत्र होता है।

कुम्भ राशि में पैदा होने के कारण आपकी नाक ऊंची रहेगी तथा मुख एवं मस्तक में भी विस्तृतता रहेगी। साथ ही आपके हाथ, पैर एवं कमर भी स्थूलता से युक्त रहेंगे। आपके शरीर में कोमलता की अल्पता रहेगी तथापि इसमें सुन्दरता एवं आकर्षण पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेगा। आपकी प्रकृति विद्रोही भी रहेगी तथा समय समय पर आप इस भाव का प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप में आलसपन तथा क्रोध की भी अधिकता रहेगी। साथ ही धर्म में भी आपकी आस्था रहेगी। चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि तथा लगन रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं से भी व्याकुलता की अनुभूति करेंगी।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में

शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

कुम्भ राशि में पैदा होने के कारण आपकी नाक ऊंची रहेगी तथा मुख एवं मस्तक में भी विस्तृतता रहेगी। साथ ही आपके हाथ, पैर एवं कमर भी स्थूलता से युक्त रहेंगे। आपके शरीर में कोमलता की अल्पता रहेगी तथापि इसमें सुन्दरता एवं आकर्षण पूर्ण रूपेण विद्यमान रहेगा। आपकी प्रकृति विद्रोही भी रहेगी तथा समय समय पर आप इस भाव का प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप में आलसपन तथा क्रोध की भी अधिकता रहेगी। साथ ही धर्म में भी आपकी आस्था रहेगी। चित्रकारी के प्रति आपकी विशेष रूचि तथा लगन रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता एवं ख्याति भी अर्जित कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं से भी व्याकुलता की अनुभूति करेंगी।

उद्धोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

विभिन्न प्रकार के शास्त्रों का आप परिश्रमपूर्वक ज्ञानार्जन करेंगी तथा इसमें प्रवीण भी रहेंगी अतः समाज में एक विदुषी के रूप में आपकी प्रतिष्ठा रहेगी। साथ ही कई कार्यों को करने में भी आप तत्पर रहेंगी एवं इसमें निपुणता का परिचय देंगी। इसके अतिरिक्त आपके दुश्मन आपसे पराजित तथा भयभीत रहेंगे।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से क्रूर कर्मों को भी सम्पन्न करेंगी या अप्रत्यक्ष रूप से इनको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। यात्रा करने तथा घूमने फिरने में भी आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा अपने अधिकांश समय को इन पर व्यतीत करेंगी। आप हमेशा दूसरे के धन को प्राप्त करने के लिए लालायित रहेंगी तथा जीवन में इसके लिए पूर्ण रूप से यत्नशील भी रहेंगी। आपकी आर्थिक स्थिति विषमता को प्राप्त रहेगी तथा इसमें लगातार उतार चढ़ाव आते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुगन्धित द्रव्यों के अनुलेपन तथा पुष्पादि के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी एवं यत्न पूर्वक इसका आप उपभोग करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप श्रेष्ठ विदुषियों के गुणों से सुशोभित रहेंगी तथा समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगी परन्तु अन्य विद्वजनों को आप कभी भी यथोचित सम्मान प्रदान नहीं करेंगी। अतः अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में इच्छित सफलता तथा विजय प्राप्त होती रहेगी। साथ ही आप सदाचार से श्रेष्ठ रहेंगी एवं इसका अनुपालन करती रहेंगी। धन सम्पत्ति से भी आप सुसम्पन्न ही रहेंगी। गुरूजनों तथा अन्य सामाजिक लोगों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक आप इनकी सेवा करती रहेंगी एवं यथाशक्ति सहयोग प्रदान करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। पुरूषवर्ग में आपका पूर्ण सम्मान रहेगा। आप का परिवार विशाल होगा एवं जाति तथा बन्धुवर्ग में आप अत्यन्त सम्मानित रहेंगी। जाति या वर्ग के कल्याणकारी कार्यों को करने में आप सदैव तत्पर रहेंगी एवं यत्नपूर्वक उनको सफल बनाएंगी। इसके साथ ही आप सद्गुणों से भी सुसम्पन्न रहेंगी तथा इनका जीवन में पालन करके सुख की अनुभूति करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरूभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन की लम्बाई सामान्य से अधिक रहेगी तथा नसें भी शरीर से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। साथ ही वातजनक रोगों से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। समाज में अन्य पुरुषों से भी आपके मित्रता पूर्ण सम्बन्ध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर एवं सहयोग की प्राप्ति करेंगी। मित्रवर्ग से आपका विशेष स्नेह रहेगा एवं उनकी यथाशक्ति आप सहायता एवं सहयोग करती रहेंगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ळध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आपका स्वभाव दानशील होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्द लोगों को दान देकर अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी। साथ ही इससे आपको सामाजिक सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होगी। आप में कृतज्ञता का भाव विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा हृदय से आभार भी प्रकट करेंगी। आपकी आखें देखने में अत्यन्त ही सुन्दरता से युक्त रहेंगी तथा स्वभाव एवं बुद्धि सरल होगी। इसमें किसी भी प्रकार दिखावा या धोखा नहीं रहेगा। आप विविध प्रकार के वाहन साधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगी तथा जीवन में सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी। इस प्रकार अपने मधुर व्यवहार तथा स्नेह शील स्वभाव होने के कारण आप समाज में पूर्ण प्रतिठा तथा लोकप्रियता अर्जित करेंगी। साथ ही आप स्वभुजबल एवं बुद्धिबल से धनार्जन करेंगी एवं आनन्दपूर्वक जीवन यापन

करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी अधिक बोलने की रहेगी तथा हृदय में भी करूणा की भाव की नयूनता रहेगी। परन्तु आप एक साहसी महिला होंगी अतः आपके अधिकांश कार्य साहसपूर्वक ही सम्पन्न होंगे। साथ ही आप में क्रोध की भी प्रबलता रहेगी तथा कभी कभी अकारण ही छोटी छोटी बातों में इसका प्रदर्शन करेंगे। जनों से विवादादि के प्रति भी आपकी प्रवृति होगी एवं अन्य जनों से प्रायः आपका विवाद या चलता रहेगा। इसके अतिरिक्त आपमें शारीरिक शक्ति भी पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगी।

जीवन में यदा कदा उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकती हैं। आपका शारीरिक आकर्षण भी मध्यम ही रहेगा। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी कठोर शब्दों का उपयोग करेंगी जिससे श्रोता या अन्य जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

अश्व योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति स्वच्छन्दता से युक्त रहेगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को आप स्वच्छन्दतापूर्वक सम्पन्न करेंगी किसी अन्य का हस्तक्षेप या दबाव आपको अरूचिकर लगेगा। आप सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी तथा साहसी एवं निर्भयता की प्रकृति से भी युक्त रहेंगी। आप तेजस्वी महिला होंगी एवं आपके तेज से सभी लोग प्रभावित होंगे। इसके साथ ही वीणा आदि वाद्य यंत्रों को बजाने में भी आप दक्ष रहेंगी तथा इसमें विशेष योग्यता तथा ख्याति भी प्राप्त कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त आप एक विश्वसनीय महिला होंगी तथा अपने कार्य क्षेत्र में आप सर्वसम्माननीया तथा विश्वास पात्र रहेंगी।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी,

घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए चैत्रमास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्दा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिज

करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्यकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट कुबेर की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से शनिवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, पंचधातु, लोहा, तिल, तेल, कम्बल आदि पदार्थों का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए तथा शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप किसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी एवं शारीरिक स्वस्थ्ता रहेगी। इसके साथ ही समस्त अशुभ फलों का प्रभाव समाप्त होगा एवं शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।
मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक

के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध है (जैसे जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) सबसे बराबर-बराबर धन लेकर आपके शहर/गांव के चौक में बैठे कारीगर, हकीम/डाक्टर को उसका काम बढ़ाने के लिये वह धन दान स्वरूप दे दें।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है। सबसे बराबर-बराबर पीली कौडियां लेकर उसी दिन एक जगह इकटठी करके जला कर उनकी राख उसी समय जल में प्रवाहित कर देना।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पितृऋण से मुक्त है।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का

उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्त्री ऋण से मुक्त है।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर

काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, भाई का परिवार चाचा-ताया के परिवार के सदस्य, बेटी-बुआ आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर 100 कुत्तों को एक ही दिन में खाना खिलाना।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में सूर्य है। इसकी वजह से बाहर से मधुर स्वभाव परंतु अंदर से आग का शोला होगी। आपका चाल-चलन अच्छा होगा। आप तेजस्वी, प्रतापी, शत्रुहंता होंगी। आप में आत्मसिद्धि, मानसिक रूप से चिन्तित, मान-सम्मान से युक्त होंगी। सत्ता से लगाव, लेखा-जोखा के कार्य में संलग्न, सभी प्रकार की शिक्षा प्राप्त होंगी। आप विचारों की पक्की बुरे कार्यों से दूर रहने वाली, हर बात में पहल करने वाली, आक्रामक, मुंह तोड़ जवाब देने वाली तथा परिश्रमी होंगी। आप अपने पराक्रम से धन कमा कर धनी होंगी। आप दूसरों की सहायता करेंगी। आप ठोकरें खा-खाकर चमकेंगी। आपको सताने वाला नष्ट हो जाएगा। आपकी प्रसिद्धि बढ़ेगी। धार्मिक कार्य और परोपकार में धन लगाने से उन्नति और विद्या में वृद्धि होगी। 24 वर्ष की आयु में विवाह शुभ रहेगा, संतान एवं पति का सुख मिलेगा, अच्छे कार्य में अगुवा रहेंगी। गरीबों की मदद्गार एवं क्रोधी होंगी। आप किसी बात को सुन कर फिर देख कर विश्वास करेंगी। सिर गंज पड़े तो धनवान होने का समय आयेगा, आपके स्वतंत्र विचार रहेंगे और यात्रा से लाभ मिलेगा। सरकारी विभाग में उच्चाधिकारी या सरकारी अधिकारियों से अच्छे संबंध होंगे और उनसे लाभ पा सकती हैं। आप जनता के लाभार्थ कार्य करेंगी।

यदि आपने जनता से दुर्व्यवहार किया या परिवार-कल्याण के कामों में विघ्न पैदा किये या मकान के अंत में अंधेरा कमरा रोशनी में बदला तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से शरीर की हड्डी में रोग, दिल की धड़कन के संबंध में प्रतिकूल फल मिलते हैं। क्रोध करने और दुर्वचन बोलने से रक्तचाप का रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मांस-मदिरा का प्रयोग न करें।
2. दिन के समय संभोग न करें।

उपाय :

1. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।
2. मकान के अंत में अंधेरी कोठरी/कमरा बनायें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा छठे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से कन्या संतान अधिक होंगी। आप योजना बनाने में कुशल और बुद्धिमान होंगी। मुकद्दमे में आपको सफलता मिलेगी। मामा पक्ष के लोगों से सहयोग और लाभ की संभावना है। जैसी करनी वैसी भरनी की नसीहत को हर दम याद रखेंगी। आपकी बुआ-बहन-लड़की सुखी रहेगी। नौकरी-व्यापार में

बार-बार तबदीली का योग है, आप तड़पते हुए व्यक्ति के मुंह में पानी डालने वाली सबकी हमदर्द होंगी। आपको गरीबी का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। आप किसी गंभीर रोग की रोगी नहीं होंगी।

यदि आपने बहन-बेटी का धन प्रयोग किया, अपना भेद किसी को बताया, सूर्यास्त के बाद दूध पिया, छबील या प्याऊ लगाया या आम लोगों के लिए धर्मार्थ कुआं, हैंड पंप लगाया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से आपकी माता/सास के सुख में कमी आ सकती है या सौतेली मां के साथ जीवन बिताना पड़ सकता है। 24 वर्ष की आयु में यदि आम जनता के लिए कुआं या पानी का साधन लगवायेंगी तो उसका बुरा असर माता/सास और संतान पर पड़ेगा। आपके पति की आंख में कुछ खराबी होने की संभावना है। आपके ससुराल पक्ष के लोगों का नुकसान होने की उम्मीद है। शत्रु आप से भय खाएंगे। कोर्ट-कचहरी का झमेला आपको झेलना पड़ सकता है। आपको कभी-कभी गंभीर चिंता करनी पड़ सकती है। आप जब कभी बिना सोचे-समझे काम करेंगी तो सामने परेशानी आ सकती है। माता/सास को कष्ट रहेगा, मौत तक भारी समय आयेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. 24 वर्ष आयु में मुफ्त पानी दान का साधन कायम न करें।
2. किसी को अपना भेद न बताएं।
3. सूर्यास्त के बाद दूध न पियें।

उपाय :

1. शमशान-अस्पताल में पानी का साधन कायम करना शुभ है।
2. माता/सास को कष्ट के समय खरगोश पालें।
3. चन्द्र ग्रहण में 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में मंगल पड़ा है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार मंगल तीसरे खाने में हो तो महिला मांगलिक होती है। अतः आप मांगलिक महिला हैं। इस वजह से आप अपने लिए ख्याली पुलाव बनाएंगी और सब्ज बाग देखेंगी। दूसरों की सहायता करेंगी, नर्म स्वभाव रहेंगी। चक्रव्यूह भेदन की कला में चतुर होंगी। आपको पिता और ससुराल पक्ष से सहायता मिलेगी। आपको परिवार से अच्छा सहयोग प्राप्त होगा। आप अपनी शारीरिक और मानसिक योग्यता से जानी जायेंगी तथा आपको योग्यता प्रदर्शन करने का अच्छा मौका मिलेगा। आपको भाई-बहन का सुख मिलेगा। आपके दोस्त हमेशा मदद करेंगे। आपका विवाह अच्छे घर में होगा। माता-पिता/सास-ससुर का पूरा सुख मिलेगा।

यदि आपने परपुरुष से अनैतिक संबंध रखे, अकड़ा हुआ मिजाज रखा अधिक

गुस्सा करने की आदत रखी, मांस-मदिरा के सेवन करने की आदत हुई, अय्याशी की तरफ आपका झुकाव रहा तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आप अपने जीवन में चालबाजी और धोखेबाजी से काम निकालेंगी और आप बेकार की फोकी उम्मीदें भी रखेंगी। आपकी बर्बादी का कारण आपकी अय्याशी हो सकती है। आप पर कर्ज का बोझ भी चढ़ सकता है। आपके घर में अचानक किसी की मौत भी हो सकती है। आपकी संतान की हालत मंदी हो सकती है। आपको मृत बच्चा पैदा हो या गर्भपात भी हो सकता है। घर में चोरी और नुकसान से होशियार रहें। आपके चाचा या भाई, औलाद से दुःखी हो सकते हैं। आपके भाई-बन्धु, मित्र आपके विनाश का कारण बनेंगे। लड़ाई-झगड़े से दूर रहें। लड़ाई-झगड़ा आपकी मौत का कारण बन सकता है। आपकी नेकी कोई भी याद नहीं रखेगा। खून खराब या पेट में रोग हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हाथी दांत न रखें।
2. दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले घर में रिहाईश न करें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. चांदी की बेजोड़ चूड़ी पर लाल रंग लगाकर बायें हाथ में पहनें।

बुध

आपकी जन्म कुंडली के पहले खाने में बुध पड़ा है। इसकी वजह से आपको ज्योतिष विद्या से लगाव रहेगा और आप पूर्णरूपेण इस विषय की ज्ञाता भी होंगी। आपको लाभ विदेश यात्रा या विदेश व्यापार से रहेगा। शिल्पकला, दस्तकारी से भी लगाव रहेगा। आपकी बुद्धि भी तेज होगी। आप द्विस्वभावात्मक प्राणी हैं। आप पर दूसरों का असर तेजी से पड़ता है। दो शत्रुओं के मध्य रह कर भी सुरक्षित रहेंगी। फलस्वरूप आप अच्छे कार्य एवं अच्छी बुद्धि से प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेती हैं। आप सामर्थ्य और शक्तिशाली महिला की पक्षधर हो कर उसे शक्ति प्रदान करती हैं। भयातुर धीरे-धीरे चलने वाली, मधुरभाषिणी, आकर्षक व्यक्तित्व की, अनेक रूपों वाली हैं। आप बातचीत करना पसंद करती हैं। आप कल्पना जगत की प्राणी हैं। हर महिला को अपना बना लेने की कला विद्यमान है। आपकी ऊंची बातें भाग्य बनाने में सहायक हैं। आपके मुंह से निकली बुरी बात का असर पड़ता है। आप के अंदर आन्तरिक शक्ति है एवं काम कला में प्रवीण हैं। आप दूसरों की परवाह नहीं करती हैं, स्वार्थपरायण, अपनी प्रशंसा चाहने वाली हैं।

यदि आपने नेकी का रास्ता छोड़ बदी का रास्ता अपनाया, अण्डे खाये, राग गाने का शौक रखा, शराब पी और मांस-मछली खायी, अधर्म के काम किये या जादू-टोना वशीकरण आदि विद्या में रुचि रखी तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो

गया हो तो बुध के मंदे असर से आपकी कुछ आदतें बुरी हैं। धीरे-धीरे सोच-समझ कर बोलने की आदत से बुद्धिमानी का प्रतीक बनेंगी। आप चलते-चलते या काम करते-करते बातें करना पसंद करती हैं। अकारण कंजूसी बरतना प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है। संतान सुख में बाधा की आशंका है। चमड़ी का रोग या पेट में खराबी रहेगी। जादू-टोना विद्या में रुचि रखने से धन-परिवार की हानि होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अंडा या अंडे बनी चीजें न खावें।
2. शराब-मछली का सेवन न करें।

उपाय :

1. धर्म-कर्म करें।
2. घर आये मेहमानों की सेवा जरुर करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति आठवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दीर्घायु, धनवान रहेंगी। आपकी और आपके पिता/ससुर की लंबी आयु होगी। आप चरित्रवान, शील स्वभाव से अच्छी, विवेकी एवं पूरे परिवार की विपत्ति को अपने सिर पर लेने वाली होंगी। धन और आयु वृद्धि होती रहेगी। अधिक कठिनाई में ईश्वर आपकी मदद करेंगे। आप आध्यात्मिक एवं गुप्त विद्या की माहिर होंगी।

यदि आपने दूसरे के धन का उपभोग किया, भलाई करने वाले का बुरा किया, दीन-दुःखियों को सताया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपको अपने पिता/ससुर से हमेशा दूर रहना पड़ सकता है। आप पिता/ससुर से अलग रहे तो आपका समय खराब होगा। आप अफवाहों की शिकार बनेंगी। आप यदि साध्वी हो जाएं तो दुःखी रहेंगी। आपके परिवार में कई प्रकार की मुसीबतें पैदा हो सकती हैं। कभी-कभी आपके हौसले मंदे पड़ जाएंगे। आपको मूत्र रोग आदि बीमारी या मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। आपको बार-बार जन्म लेना पड़ सकता है। मोक्ष मिलने की उम्मीद कम है। आपके कामों में अड़चनें आएंगी। आपके शरीर में सुस्ती रहेगी या हर समय मन बुझा-बुझा सा रहेगा। कोई दुर्घटना या बड़ी मुसीबत का योग बन सकता है। आप अपने जीवन में कुछ ऐसे कार्य कर बैठेंगी जिससे आपको बहुत पछतावा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. आवारा साधू का साथ न रखें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :
1. शरीर पर सोना पहनें।
2. दही, आलू, घी धर्म स्थान में देवें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपके पति दिखने में भोले-भाले परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छे होंगे। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपके पति में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागती रहेंगी। आप भोले स्वभाव की महिला होंगी। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने की आदी हो जाएंगी। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगी। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहीं, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके आयुर्वेद दवाई लेना लाभदायक रहेगा)। आपके पति के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या पति द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड-जेल यात्रा का भय, चाल-चलन आपका शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगी। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. पति को घर का खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :
1. पति से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में आठवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आप नये अविष्कार या विषयों की खोज करेंगी। आप मनमौजी होंगी। आर्थिक हालात सामान्य रहेंगे। भागीदारी के काम से अधिक लाभ होगा। यदि आप सरकारी नौकरी करती हैं तो आपको

सरकारी विभाग में धीरे-धीरे तरक्की प्राप्त होगी। आप विदेश की यात्रा भी करेंगी, ऐसी पूरी संभावना है। वैसे आपको जल से, जलीय पदार्थ या समुद्री यात्रा से लाभ हो सकता है, परंतु आपकी विदेश यात्रा पूर्ण संभावित है। आपको एक जगह बैठ कर करने वाले स्थायी काम करना ही अच्छा है।

यदि आपने अपनी रिहाईश, गली की नुक्कड़ पर या आगे बंद गली के घर में रखी, मकान में दरारें हुई, घर से बिच्छू निकलते रहे, आप अपने नाम पर मकान बना लेवें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपको पिता/ससुर का सुख कम ही प्राप्त होगा। किसी भी दुर्घटना की आशंका है। आपके भाई आपसे शत्रुता कर सकते हैं। आपकी टांगों पर बुरा असर पड़ सकता है। भोजन में शराब-मांस, अंडे का सेवन आपको नीच बना देगा इसका सेवन नहीं करें। आपका बुढ़ापा गरीबी से गुजरे और बुढापे में आंखों की दृष्टि कमजोर हो, ऐसी आशंका है। आपका अभिमान के कारण नुकसान हो सकता है। कोई जवाबदेही पूर्ण कार्य से अथवा नीच कार्य से, बहुत बड़ा नुकसान और पछतावे का कारण बन सकता है। आपको सरकार से भय रहेगा। अपने नाम पर घर बना लेंगी तो असमय मौत को बुला सकती हैं। नौकरों द्वारा हानि का भय, संतान सुख में कमी हो सकती है। शराब-मांस, मछली का सेवन आपको हानि दे सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. अपने नाम से मकान न बनायें।
2. सांप न मारें।

उपाय :

1. चांदी का चौरस टुकड़ा पास रखें।
2. 8 किलो उड़द जल प्रवाह करें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका बचपन खुशहाली से बीतेगा। आपको उच्च शैक्षणिक संस्थान में विद्याध्ययन का मौका मिलेगा। आपको पिता/ससुर का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप बिना माता-पिता/सास-ससुर के सहयोग के भी आगे बढ़ती रहेंगी। आप ताकतवर और न्यायप्रिय होंगी। आप अपनी कमाई पर ही जीवन बसर करेंगी। माता-पिता/सास-ससुर से मधुर संबंध में कटुता की संभावना है। विदेशी यात्रा या कार्यों द्वारा धन भी प्राप्त होगा। दूसरों पर भरोसा रखने से विश्वासघात होगा ऐसी शंका है।

यदि आपने बंदूक-पिस्तौल रखी, नीलम या नीला नग पहना, बिजली का खराब सामान या बिजली की तारें पड़ी रहीं, दराज या कैश बॉक्स खाली रखे तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके पिता/ससुर को कष्ट होने की आशंका है। आपकी साढ़े दस-21-42 वर्ष आयु में पिता/ससुर की मृत्यु होगी।

पिता/ससुर की मृत्यु गोली, जहर, ब्रेन हैमरेज से संभाव्य है। पिता/ससुर की मौत के बाद बहुत क्षति होगी। आप ऐय्याश लोगों की संगति में रहेंगी, ऐसी आशंका है। अनुचित ढंग से धन कमाएंगी। आपकी परेशानी मासिक धर्म संबंधी रोगों से बढ़ सकती है। आपकी संतान कमजोर और अपाहिज हो सकती है। आपकी जवानी गरीबी में कटेगी। पिता और ससुर से नहीं पटेगी। आपके जन्म के पश्चात् आपके पिता/ससुर की आर्थिक दशा तंग होने की संभावना है। आपके काम में दक्ष और धूर्त लोग आपके साथ होंगे। फिजूल के झगड़े-फसाद होने की आशंका है। धन की हानि भी होती है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. नीलम या नीला नग न पहनें।
2. घर में बंदूक/पिस्तौल न रखें।
3. बिजली का सामान ठीक रखें।

उपाय :

1. सिर पर चोटी रखें या सिर ढांप कर रखें।
2. 4 किलो सिक्के का चौरस टुकड़ा 4 सूखे नारियल जल प्रवाह करें।
3. सिगरेट पीते हैं तो चांदी की पाइप में लगा कर पियें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली में केतु पांचवे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको आकस्मिक रूप से धन प्राप्ति होगी। आपको विलक्षण अतिद्रिय शक्ति प्राप्त होगी। आप गुरु भक्त रहेंगी। 24 वर्ष की उम्र के बाद आपके जीवन पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। जीवन में 34 वर्ष आयु में पुत्र द्वारा, उसके पश्चात पौत्र द्वारा सुख प्राप्त होगा। 48 वर्ष की उम्र तक माता/सास का सुख मिलेगा। पति के साथ अच्छा संबंध रहेगा। आपके धर्म-ईमान के अनुसार ही आपकी संतान होगी। आप अपना चाल-चलन ठीक रख कर सुखी रह सकती हैं। आपकी आर्थिक हालत ठीक रहेगी। इच्छित संख्या के अनुसार संतान होगी। पुत्र संतान उत्पत्ति के पश्चात् आपकी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार होगा। यदि आप धर्माचरण करती रहें तो जीवन के अशुभ फल दूर हो जाएंगे।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया, किसी के पुत्र को या अपने पुत्र को कष्ट दिया कुत्ते को मारा या मरवाया या कुत्ता आपके वाहन से टकराकर मर गया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 45 वर्ष की आयु का समय बेकार रहेगा। पुत्र से कोई खास सुख प्राप्त नहीं होगा। संतान को कष्ट रहेगा। आपको श्वास संबंधी या दमे के रोग की आशंका है। 48 वर्ष की आयु तक समय भी ठीक नहीं रहेगा। सुख में कमी और बाधा उत्पन्न हो सकती है। आयु बढ़ने के साथ बुरे लोगों की संगति में आप रहेंगी। गुप्त रोग, संतान को दमा रोग रहने की संभावना रहेगी। आपका पुत्र

आपकी माता/सास के लिए अशुभ रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. दुश्चरित्र लोगों की संगति न करें।
2. लोहे के संदूक ताला लगाकर बंद न रखें। उन्हें कभी-कभी खोलते रहें।

उपाय :

1. गुरु-पिता/ससुर की सेवा करें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को अर्घ्य देवें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुबिधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगो में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।02 जूनके बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने है। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहींरहेंगे। वर्ष के पुर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगीपरन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्य ार्थियो के लिए समय अच्छा है। तकनीकि शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएंहोती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यो के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्राद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया अशुभ फल ही प्राप्त करेंगी। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः शरीर में दुर्बलता रहेगी।साथ ही आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप चिन्तित तथा भयत्रस्त रहेंगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगी। इस समय आपके घर में किसी प्रकार की चोरी होने की भी संभावना रहेंगी अतः सतर्क रहना चाहिए। इस मास में आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में मन्दी रहेगी तथा अनावश्यक रूप से विघ्न बाधाएं उत्पन्न होंगी। इसके साथ ही आपके कार्य क्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है या कोई कार्य छूट भी सकता है। समाज में अन्य जनों के साथ आपका परस्पर विवाद एवं संघर्ष भी होता रहेगा जिससे सामाजिक सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त इस मास में धन हानि की भी संभावना रहेगी तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

इसके साथ ही इस मास में आप गर्मी से उत्पन्न रोगों के द्वारा शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः सावधानी एवं बुद्धिमतापूर्वक इस मास में अपना समय व्यतीत करें तथा शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आप अपनी बुद्धिमता से ही सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगी। इस मास में आपको विविध प्रकार के द्रव्यों की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति से पूर्ण सुख प्राप्त होगा। साथ ही ज्ञानार्जन में भी आपकी रूचि उत्पन्न होगी जिसमें आप सफलता प्राप्त करेंगी। इस समय आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को ससम्मान स्वीकार करेंगे।साथ ही आपके अधिकांश शुभ कार्य सिद्ध होंगे तथा कहीं से शुभ समाचार की भी आपको प्राप्ति होगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप विधिपूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगी। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगी तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी एवं मन से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी। इस समय अपनी बुद्धिमता के द्वारा आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी। इस प्रकार आपका यह मास अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेंगे। परन्तु अल्प मात्रा में शुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा शरीर में दुर्बलता भी रहेगी। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा एवं आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेगा जिससे आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है जिससे आपको सतर्क रहना चाहिए। आपको इस समय अपने उच्चाधिकारियों की आज्ञा का नम्रता पूर्वक पालन करना चाहिए अन्यथा उपेक्षा करने पर वे आपको दण्डित भी कर सकते है। आप के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में कम ही सफल होंगे तथा असफलता ही अधिक प्राप्त होगी। साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ सकता है। इस मास में बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के मध्य शुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप पति या पुरूष वर्ग से सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपनी बुद्धिमता के द्वारा आप धनार्जन करेंगी एवं मध्यम रूप से सुखार्जन करने में भी सफल रहेंगी। अतः सावधानी एवं शान्ति पूर्वक अपने इस मास को व्यतीत करें।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को अल्प तथा अशुभ फलों को अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति तथा पुरूष वर्ग से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी।साथ ही आपके शत्रु भी प्रबल रहेंगे तथा आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी। इसके साथ ही आपको अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी जिससे मानसिक रूप से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा तथा स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी फलतः समाज से भी आप उपेक्षा का सामना करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मनमुटाव रहेगा इसके साथ ही मित्र भी इस समय शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी वाद विवाद होता रहेगा। अतः संयमपूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। अतः आप पुरूष वर्ग से लाभ तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा परिश्रम से आप धन तथा सुख भी अर्जित करेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में भी आपकी रूचि रहेगी तथा समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करने में आप सफल रहेंगी।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अल्प तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय शत्रुओं से आप पराजित रहेंगी तथा उनसे आपको भय तथा चिन्ता रहेगी। साथ ही घर में भी किसी प्रकार की चोरी की संभावना बनी रहेगी।अतः सावधान रहने की आवश्यकता होगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः धनाभाव से भी आप कष्ट प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा।साथ ही आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी जिससे शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्रा भी कर सकती हैं। साथ ही आपके सांसारिक महत्व के कामों में व्यवधान उत्पन्न होते रहेंगे तथा इनमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। अतः मानसिक रूप से आप खिन्न तथा बैचेन रहेंगी। इसके साथ ही मुकद्दमे आदि में भी आप का धन व्यय होने की संभावना रहेगी। अतः बुद्धिमता एवं संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में समय समय पर शुभ फल भी मिलते रहेंगे। अतः आप उच्चाधिकारी वर्ग से लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगी एवं अपने महत्वपूर्ण कार्यो को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त किसी नवीन वस्त्र की प्राप्ति या द्रव्यार्जन करने में भी आप सफल हो सकेंगी।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप सौभाग्यशाली रहेंगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगी। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा उच्चाधिकारी वर्ग एवं सामाजिक जन आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप वांछित सहयोग भी प्राप्त करेंगी। इस मास में आप किसी धार्मिक उत्सव का आयोजन भी कर सकती है। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधि पूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी।संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगी एवं बुद्धि में भी निर्मलता के भाव में वृद्धि होगी जिससे आप के शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे।साथ ही भाग्योदय संबधी कार्य भी इसी समय पूर्ण होंगे। इस समय आपकी लाभदायक यात्रा का भी योग बनेगा। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होगी तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस प्रकार सर्वत्र आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा अपने बुद्धिबल से वांछित धन एवं सुख भी प्राप्त करेंगी। धर्म के प्रति भी श्रद्धालु रहेंगी तथा समाज में आप एक सम्माननीया महिला समझी जाएंगी।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्यक्षेत्र में मनोवांछित सफलता प्राप्त करेंगी साथ ही इसमें आपको लाभ तथा उन्नति भी मिलेगी। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न

तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपके शुभ एवं महत्पूर्ण कार्य अल्प समय में सिद्ध होते रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग से आप पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी एवं उनकी भलाई के कार्यो में भी तत्पर रहेंगी। आपके शुभ कार्य भी इस मास में सम्पन्न होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप श्रद्धा का भाव रखेंगी तथा विधिपूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करने में तत्पर रहेंगी। इस मास में समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप धन अर्जित करेंगी तथा आपकी अपूर्ण इच्छाएं भी इस समय पूर्ण होंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आप श्रद्धालु रहेंगी। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में अर्जित करेंगी परन्तु अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय पति तथा पुरूष वर्ग से आप पूर्ण सहयोग एवं लाभार्जित करने में सफल रहेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगी। आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में सम्पन्न होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा मन भी प्रसन्न एवं शान्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन के प्रति भी आपके मन में इच्छा उत्पन्न होगी एवं इसमें आप सफलता प्राप्त कर सकती है। बन्धुजनों एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में आप वांछित द्रव्य पदार्थ भी प्राप्त करेंगी एवं उनके उपभोग से प्रसन्न रहेंगी ।संतति पक्ष से भी आप निश्चिन्त रहेंगी तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप गर्मी तथा पित द्वारा उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार से भी पीड़ित हो सकती है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगी। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक दृष्टि से आप कमजोर रहेंगी। साथ ही आप दुष्ट जनों की संगति प्राप्त करेंगी जिससे आपको कष्ट होंगे। आपका स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। अतः शरीर में दुर्बलता विद्यमान रहेगी तथा मन से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगी। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम करने पर भी अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आप उपेक्षा का भाव रखेंगी। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि होने की संभावना बनी रहेगी। इस समय बन्धु एवं मित्रों

से आपके तनाव पूर्ण संबध रहेंगे। साथ ही जिस कार्य को इस मास में प्रारम्भ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही हाथ लगेगी। इस प्रकार यह समय आपके लिए सामान्यतया कष्टदायक ही रहेगा।

साथ ही इस मास में यदाकदा शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी। अतः आप पति एवं पुत्र से सुख प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा इनसे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी प्राप्त करने में सफल हो सकती हैं।

अक्तूबर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फल अधिक तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी फलतः आपके शत्रु आपसे पराजित तथा भयभीत रहेंगे तथा अन्य लोग भी आपका सम्मान करेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी अतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। साथ ही नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्यत्र भी लाभ मार्ग प्रशस्त होंगे। इस मास में आपके भाग्योदय संबधी कार्य सम्पन्न होंगे तथा कोई ऐसा महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा जिससे आप अत्यंत ही प्रसन्नता प्राप्त करेंगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे वांछित सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगी। आपके अधिकाशं सांसारिक कार्य इस समय सम्पन्न होंगे एवं उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। फलतः कार्य क्षेत्र में आपकी उन्नति होगी एवं लोगों से यथोचित सम्मान प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी होंगे। अतः आप वातोत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगी एवं किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको हानि हो सकती है। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने उत्साह एवं परिश्रम से धन अर्जित करने में सफल रहेंगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी ।साथ ही आपको समाज से भी पूरा यश तथा सम्मान प्राप्त होगा। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे उचित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय भी मिलेगा जिससे आप उनसे पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी। मिष्ठान के प्रति आप विशेष रुचिशील रहेंगी तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगी। इस समय शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगी तथा वे आपसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त

व्यापारादि अन्य कार्यों के द्वारा भी आप प्रचुर मात्रा में लाभार्जन करने में सफल रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के मध्य यदाकदा अशुभ फल भी घटित होंगे।अतः आप वातजन्य रोगों से अस्वस्थ रहेंगी। इसके अतिरिक्त अग्नि से भी आप किंचित हानि प्राप्त कर सकेंगी। अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करना चाहिए ।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगी तथा विभिन्न प्रकार से सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगी। साथ ही सामाजिक जनों से आप यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं विधिपूर्वक आप इनकी सेवा तथा पूजा करती रहेंगी। साथ ही अन्य सामाजिक जनों की भलाई के कार्यो में भी आप तत्पर रहेंगी। आपका स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग लाभ तथा धनार्जन करने में सफलता प्राप्त करेंगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपके मनोवांछित संकल्प भी इस समय पूर्ण होंगे। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा उनकी ओर से निश्चिन्त रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण की भी प्राप्ति कर सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्नकरेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़े क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाईयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गूरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने वौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों कोस्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती है। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरु हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रूकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध मे छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते है।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रूचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त कर सकती हैं। साथ ही शत्रुपक्ष भी इस मास में बलवान रहेगा अतः इनसे भी आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इस मास में आपके व्यापार या आजीविका संबधी कार्य में व्यवधान उत्पन्न होंगे तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा या कोई कार्य छूट भी सकता है। इसके साथ ही समाज में अन्य लोगों से आपके विशेष मधुर संबध नहीं रहेंगे एवं आपस में विवाद तथा वैमनस्य का भाव रहेगा। इस समय आपकी धन हानि की भी संभावना रहेगी एवं शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता हैं। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यो को संपन्न करें।

साथ ही इस मास में अशुभ फलों के साथ काथ अल्प मात्रा में शुभ फल भी होंगे। अतः आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपने बुद्धि चातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी एवं सुख की भी अनुभूति करेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों को प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। इस मास में संतति पक्ष से आप सुखी रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग भी प्राप्त करेंगी। साथ ही द्रव्य पदार्थो को अर्जित करने में भी आपको सफलता प्राप्त होगी। इस समय समाज के सभी वर्गो में आपका प्रभुत्व बढेगा एवं लोग आपकी श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। साथ ही आपके शुभ कार्य भी इस मास में पूर्ण होंगे तथा कहीं से आपको शुभ समाचार भी प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आप श्रद्धालु रहेंगी एवं निष्ठा पूर्वक उनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप वांछित लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा समाज में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा रहेगी एवं आपकी मनोकामनाएं भी पूर्ण होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगी एवं अपनी तीव्र बुद्धि से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखों को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त धार्मिक कार्यो में भी आप रूचि शील रहेंगी तथा अपने सत्कार्यो से समाज में सर्वत्र प्रतिष्ठा एवं सम्मान अर्जित करने में सफल रहेंगी।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप सामान्यतया अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथापि न्यूनाधिक रूप से शुभ फल भी प्राप्त होते रहेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा जिससे शरीर में दुर्बलता रहेगी साथ ही शत्रुपक्ष से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी। अतः इनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगी एवं मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगी। इस मास में आपके घर में चोरी भी हो सकती है अतः सावधान रहना चाहिए। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग की उपेक्षा न करें तथा उनकी आज्ञा का विनम्रता पूर्वक पालन करें अन्यथा आप दण्डित भी हो सकती हैं। इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने से भी सफल नहीं होंगे तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आर्थिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही इस मास में आपके द्वारा कोई ऐसा कार्य हो सकता है जिसके लिए पश्चाताप करेंगी। मित्र एवं बन्धुवर्ग से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव रहेगा अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति के द्वारा पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ होंगी तथा अपने बुद्धि चातुर्य से पर्याप्त मात्रा में धन तथा सुख भी प्राप्त कर सकेंगी। इसके अतिरिक्त समाज में न्यूनाधिक रूप से आपकी प्रतिष्ठा भी विद्यमान रहेगी।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभफल कम तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय पति तथा बन्धुजनों से आप कष्ट प्राप्त करेंगी या उन्हें किसी प्रकार की कष्टानभूति होगी। इस मास में शत्रुपक्ष के प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। साथ ही धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आप आर्थिक रूप से कमजोर रहेंगी। इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा उद्विग्नता की अनुभूति करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं स्वभाव में लोलुपता के भाव की वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्रवर्ग से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा परस्पर वैमनस्य का भाव रहेगा। साथ ही ऐसे समय में मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। इसके अतिरिक्त पारिवारिक तथा सामाजिक जनों से भी आपके मतभेद रहेंगे। अतः संयम एवं बुद्धिमानी से अपने समय को व्यतीत करें।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के मध्य आप शुभ फलों की प्राप्ति करने में भी सफल रहेंगे। इस समय आप श्रेष्ठ जनों तथा उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगी। साथ ही अपने कार्य क्षेत्र में भी उन्नति को प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त इस मास में आप नवीन वस्त्र या वस्तुओं को भी प्राप्त कर सकती हैं। जिससे आपको प्रसन्नता की अनुभूति हो सकेगी।

मई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय शत्रु वर्ग से आप चिन्तित रहेंगी एवं आपके लिए वे अनावश्यक व्यवधान तथा

समस्याएं उत्पन्न करते रहेंगे। साथ ही इस मास में आपके घर में कोई चोरी भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अत्यंत परिश्रम के पश्चात भी अल्प मात्रा में ही सफल हो सकेंगे। इस समय आपका धन व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। अतः आर्थिक दृष्टि से भी आप कष्ट की अनुभूति करेंगी। धर्म के प्रति आपके मन में अल्प श्रद्धा का भाव रहेगा एवं देवता तथा ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान कम ही करेंगी। शरीर से भी आप अस्वस्थ रहेंगी तथा कई प्रकार से कष्टानुभूति कर सकती हैं फलतः शरीर में दुर्बलता रहेगी। इस मास में आपकी दूर समीप की यात्रा भी सम्पन्न हो सकती है। इस समय आप पारिवारिक कार्यो को पूर्ण करने में भी असफल रहेंगी तथा मुकद्दमे आदि में धन का व्यय होगा। अतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगी।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इससे आप पति से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगी एवं अपनी बुद्धिमता से शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करके प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी। अतः आप अल्प मात्रा में ही सुखों का उपभोग करेंगी तथा प्रसन्न रहेंगी।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्य में वृद्धि करने वाला होगा। इस समय आप पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न रहेंगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे। फलतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इस मास में आपके घर में किसी धार्मिक उत्सव के आयोजन की भी संभावना रहेगी। संतति पक्ष से आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त होगा एवं देवता तथा ब्राहमणों के प्रति आपके हृदय में अनन्य श्रद्धा का भाव रहेगा तथा नियमपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगी। साथ ही सामाजिक जनों के मध्य आप यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही आपकी लाभदायक यात्रा के भी योग बनेंगे। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा एक दूसरे से आप इच्छित सहयोग प्राप्त करेंगी। इस प्रकार से समाज में सभी लोगों से आप हार्दिक सम्मान प्राप्त करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पति से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगी तथा अपनी बुद्धिमता से प्रचुर मात्रा में धन तथा सुखों को अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में रूचि शील रहते हुए समाज में पूर्ण यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल रहेंगी।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगी तथा अशुभ फल अल्प मात्रा में ही होंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में पूर्ण उन्नति होगी तथा समाज से आप यथोचित सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगी। इस मास में आपके उच्चाधिकारी भी आपसे

पूर्ण सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे फलतः आपके अधिकांश शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य इसी समय सम्पन्न हो जाएंगे एवं इनसे आप इच्छित लाभ भी अर्जित करेंगी। बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में अनन्य श्रद्धा का भाव रहेगा तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए उद्यत रहेंगी। संतति पक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगी तथा समाज एवं परिवार के मध्य आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके अलावा इस मास में आपके मानसिक संकल्प भी सिद्ध होंगे जिससे आप प्रसन्न तथा शान्त रहेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अल्प मात्रा में अशुभ फल भी होंगे। अतः आप गर्मी या पितोत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा रूधिर विकार की संभावना रहेगी। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा के प्रति पूर्ण सतर्क रहें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फल प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा आनन्दपूर्वक इसे व्यतीत करेंगी। इस समय पुरूष वर्ग से आप पूर्ण लाभ अर्जित करेंगी तथा सौभाग्य से युक्त होकर अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगी। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपके पूर्ण सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा तथा वे आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उतम रहेगा तथा ज्ञानार्जन के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगी एवं इसमें सफलता प्रप्त करेंगी। मित्रों तथा बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपको इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति होंगी। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुखी रहेंगी एवं उनसे पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी। इस मास में समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगी।

साथ ही इस समय आप पति तथा पुत्र से पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगी। इस मास में आपको नवीन वस्त्रों या स्वर्णादि के आभूषणों की प्राप्ति भी हो सकेगी। अतः सुख पूर्वक आपका यह समय व्यतीत होगा।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फल ही अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आप धन व्यय अधिक मात्रा में करेंगी तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति प्राप्त करेंगी। साथ ही आपके पास धनाभाव भी रहेगा। आपका स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आप कष्ट की अनुभूति करेंगी। इस समय मानसिक रूप से भी आप अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगी। इस मास में आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य परिश्रम करने पर भी सफल नहीं होंगे तथा असफलता ही आपको मिलेगी। धर्म के प्रति भी आप में उपेक्षा का भाव रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप यथोचित सम्मान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी आपके

धन हानि के योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग से आपके अच्छे संबध नहीं रहेंगे न ही उनसे वांछित सहयोग प्राप्त होगा। इस समय कार्य क्षेत्र में भी अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी। आपके शत्रु भी इस समय बलवान रहेंगे तथा उनसे आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगी उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप ठंड या वातोत्पन बीमारियों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगी तथा किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। इसके अलावा अग्नि से भी आप किसी प्रकार की क्षति प्राप्त कर सकती है। अतः सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अक्तूबर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी प्राप्त करेंगी। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुपक्ष को पराजित,चिन्तित तथा भयभीत करने में सफल रहेंगी। इस मास में आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा अपनी आर्थिक स्थिति को बल प्रदान करेंगी। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त आप अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में सफल रहेंगी। इस समय आपके भाग्योदय संबधी कार्य सम्पन्न होंगे तथा आपके रूके हुए कार्य भी बनेंगे। साथ ही अपने मित्र एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित सुख तथा सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही आपके सभी कार्य पूर्ण होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता होगी इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे तथा आपको इछित लाभ तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी होंगे। अतः आप शीत से उत्पन्न होने वाले रोगों से शारीरिक कष्ट की अनुभूति करेंगी। इस समय आप आग के द्वारा भी न्यूनाधिक क्षति प्राप्त कर सकती हैं। अतः सावधानी पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने उत्साह के द्वारा धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा सामाजिक जनों से यथोचित प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगी। इस समय आपके परिवार तथा अन्य मित्र जनों से मधुर संबध रहेंगे तथा उनके मध्य आप सम्माननीया रहेंगी। इस मास में सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको विशेष सहयोग तथा आश्रय प्राप्त होगा फलतः आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य आसानी से यथा संभव सिद्ध हो जाएंगे। इससे मानसिक रूप से आप प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी। साथ ही आपका स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। इस समय आपके शत्रु भी आपसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। मिष्ठान भक्षण में इस मास में आप विशेष रूचि का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही पति से आप पूर्ण सुख प्राप्त करेंगी तथा गृहस्थ जीवन भी सुख पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारादि कार्यो से भी आप प्रचुर

मात्रा मात्रा में धनार्जन करके आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करेंगी।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा पति का पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी तथा इनकी ओर से किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रहेगी। इसके अतिरिक्त इस समय आपको नवीन वस्त्र या स्वर्णादि के आभूषण की प्राप्ति भी हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा खुशी प्रदान करने वाला होगा।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी अल्प मात्रा में प्राप्त करेंगी। इस समय आप अपने पराक्रम के द्वारा धन अर्जित करने में समर्थ रहेंगी तथा विविध प्रकार से सांसारिक सुखों का भी प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगी। समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथा योग्य सम्मान प्रदान करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव रहेगा एवं विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करती रहेंगी। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे तथा उनसे आपको यथोचित मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी साथ ही समाज के अन्य लोंगो की भी भलाई करती रहेंगी। उच्चाधिकारी वर्ग से आपको आश्रय तथा सम्मान प्राप्त होगा एवं आपके शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

साथ ही इस मास में शुभ फलों के साथ साथ अशुभ फल भी घटित होंगे। अतः आप गर्मी से उत्पन्न होने वाले रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी तथा रक्त विकार की भी संभावना रहेगी। अतः शारीरिक सुरक्षा का इस मास में पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रूचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरु हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे । चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते है।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ्य रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दुर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि का राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यावसायिक जीवन में व्यवधान आ सकता है, परन्तु 17 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। यह समय आपके व्यापार में कुछ बड़ी उपलब्धियां लेकर आएगा।

पूर्ण रूप से यह वर्ष आपके लिए हितकर ही रहेगा। कार्यस्थल में भी आपका प्रदर्शन अच्छा रहेगा। जो लोग रोजगार के लिए परेशान है उन्हें जल्द ही सुखद समाचार मिलेगा। 23 सितम्बर से आप अपने काम को लेकर उत्साहित रहेंगे और अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास व मेहनत करेंगे। इस समय के अंतराल में आपको मनचाहा परिणाम मिलेगा। आपको केवल अपनी एकाग्रता बनाए रखनी है और फिर देखिए यह साल आपके लिए कितना लाभदायक होता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम नहीं रहेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य अनुकूल करने में आपका व्यय होगा परन्तु अप्रैल के बाद व्यापारिक अनुकूलता के चलते आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु हो जाएगा। भाग्य अनुकूल होने से आप बचत करने में भी सफल रहेंगे

गुरु एवं राहु की युति प्रभाव के चलते फरवरी से अप्रैल तक आप को बड़े निवेश या खरीदारी से बचना होगा। आने वाले महीनों में आपको निश्चित ही लाभ होगा। व्यवसायियों को व्यवसाय का विस्तार करने के लिए अवसर मिलेंगे। इस साल आप जमीन-जायदाद पर भी खर्च कर सकते हैं। यदि आप पिछले कई महीनों से घर लेने की सोच रहे हैं तो आप अपनी इस योजना को पूरा कर सकते हैं। 23 सितम्बर के बाद रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल जाएगी।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। आपके माता-पिता के लिए समय शुभ नहीं है। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। राहु ग्रह

का गोचर आपके भाईयों के लिए भी अच्छा नहीं है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध अच्छे नहीं रहेंगे।

01 मई से सामाजिक एवं पारिवारिक दोनों पक्षों के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य भी अधिक होंगे। आपकी सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। समाज उत्थान या सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य भी संपन्न करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से अप्रैल तक का समय संतान के लिए अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं राहु ग्रह की युति आपकी संतान के लिए अच्छी नहीं है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं।

मई से आपके बच्चों की उन्नति होगी और उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपकी दूसरे संतान के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं है।

स्वास्थ्य

वर्ष की प्रारम्भिक तिमाही छोड़ दें तो पूरे वर्ष आप स्वस्थ रहेंगे। आप मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से स्वस्थ रहेंगे अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए आप नियमित रूप से व्यायाम या योगा करते रहेंगे जिससे आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता रहेगा।

कुछ समय ऐसा भी आएगा जब आप खुद को थका हुआ महसूस करेंगे किन्तु कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधित समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आप तनाव व चिंतामुक्त रहें। 23 सितम्बर के बाद अपने खान-पान पर अधिक ध्यान दें और आलस्य न करें। यह आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्षारम्भ में आपको गुप्त शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। 17 अप्रैल के बाद भाग्य का सहयोग पूर्ण रूप से मिलने के फलस्वरूप प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

01 मई से विद्यार्थियों का नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व टेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा की दृष्टि से अनुकूल है। गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी यात्राओं

के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक यात्रा भी करेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर भी सकता है। विदेश यात्रा के भी योग हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में घरेलू परेशानी के कारण धार्मिक कार्य कम ही करेंगे राहु एवं गुरु ग्रह की युति आपके दैनिक पूजा पाठ को भी प्रभावित कर सकती है। अष्टमस्थ शनि के कारण तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र इत्यादि पर ज्यादा विश्वास करेंगे। तान्त्रिक क्रियाओं की सिद्ध के लिए आप साधना भी कर सकते हैं।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर गरीब लोगों को बांट दें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा जी की उपासना करें या राहु मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि नवम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपके सहयोगी और अधिकारी भी प्रभावित होंगे। अपने दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करेंगे। आप अपने लक्ष्यों को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी।

बेरोजगार युवकों को अड़चनों के बाद सफलता प्राप्त होगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपको रोजगार सम्बंधित सुखद समाचार मिलने शुरु हो जाएंगे और आप अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने लक्ष्य की तरफ पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक तौर पर यह साल आपके लिए चुनौतियों के साथ अनेक लाभ भी लाएगा। हालाँकि जिस तरह के चपल और बुद्धिजीवी व्यक्ति आप है, इन चनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। 18 फरवरी के बाद आप भूमि, भवन एवं वाहनादि पर भी अच्छा निवेश करेंगे। इस समय के अंतराल में आप इस बात पर ध्यान दे सकते हैं कि भविष्य में किए जाने वाले निवेशों से लाभ किस प्रकार पाया जाए। एक सही योजना बना कर आप निवेश से लाभान्वित हो सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कोई खोया हुआ जरूरी दस्तावेज भी मिल सकता है। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो वह भी बिना देरी के मंजूर हो जाएगा। हर प्रकार की आर्थिक परेशानियां तुरंत ही दूर हो जाएंगी। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से परिजनों के स्वास्थ्य के ऊपर भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष कम अनुकूल है। द्वितीय स्थान के मंगल पारिवारिक वातावरण में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिससे परिजनों के बीच सामंजस्य

बिठाने में कठिनाई पैदा होगी। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा। आपके पिता के लिए समय अनुकूल नहीं है।

गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक वातावरण के लिए बहुत अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के साथ भावनात्मक लगााव में वृद्धि होगी। आपकी माता के लिए समय काफी शुभ है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से आपका सामाजिक स्तर बढ़ेगा। मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

वर्ष के शुरु में संतान के लिए समय अच्छा है। आप अपने बच्चों के मनोबल को बढ़ाते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे।

9 अगस्त के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा हो रहा है। उस समय बच्चों के साथ प्रेम समन्वय में बृद्धि होगी। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं। तो यह समय श्रेष्ठ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल बना रहेगा। पूरा साल आप तंदरुस्त और सेहतमंद महसूस करेंगे। क्योंकि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलना एवं व्यायाम आदि।

यदि आलस्य ने आपके अन्दर घर बना लिया तो आपका स्वास्थ्य एक चिंताजनक विषय बन सकता है। इसलिए आपके लिए खास सलाह है कि आप एकाग्रता से अपने भीतर एक सशक्त भाव उत्पन्न करें और अपने स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान दें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। 18 फरवरी के बाद माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे शिक्षार्थियों के लिये सयम बहुत शुभ है।

विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय काफी शुभ है यदि आप अपने शत्रुओं को परास्त करना चाहते हैं, तो नीतियों में बदलाव करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ शनि के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आप लम्बी-लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक स्थलों की यात्रा करने का अवसर प्राप्त होगा। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थार पर स्थानान्तरण होगा।

अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्ति अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे या अपने परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आप अपने कार्य व्यवसाय पर अधिक ध्यान देंगे और कर्म ही पूजा है इस वाक्य को भी चरितार्थ करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दे एवं प्रणायाम करें।
- बुधवार के दिन चींटियों को दाना डालें एवं भूखे व्यक्तियों को खाना खिलाएं।
- नित्य हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं नवम भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य-व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रहीहै। 5 मार्च से कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा।राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होने कारण आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं लेकिन आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसका भी निदान निकाल लेंगे।

12 अगस्त से व्यावसायिक स्तर आपके लिए काफी हितकारी होने वाला है। आपको आपकी पिछली व्यावसायिक सफलताओं के लिए भी पुरुस्कृत किया जाएगा। साथ ही आपकी कड़ी मेहनत को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अन्दर गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सफल होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बहुत बढ़िया नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान के राहु आर्थिक उन्नति में रुकावटें डाल सकते हैं। आय की राह में रोड़ा खड़ा करसकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा बनाने वाले तरीको पर अंकुश लगाएं। 5 मार्च के बाद आय भाव पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोतों में वृद्धि होगी। साथ ही फंसे हुए या रुके हुए धन की प्राप्ति हो सकती है।धार्मिक यात्रा या मांगलिक कार्यों में धन व्यय होगा।

12 अगस्त से आर्थिक स्थिति के लिए समय और बढ़िया हो रहा है। भूमि संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप के सामने कई लाभकारी सौदे आएंगे। इसका भरपूर लाभ उठाने के लिए आप सतर्क रहें।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सुख, शान्ति का वातावरण बनेगा। इन सबके पीछे आपका ही महत्वपुर्ण योगदान

होगा क्योंकि आप भी बहुत से ऐसे कामों को अंजाम देने वाले हैं जो पारिवारिक जीवन के लिए हितकर होंगे। आपके माता पिता के लिए समय काफी शुभ है।

द्वितीयस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किंचित परेशानी आ सकती है परन्तु आप उन नकारात्मक पस्थितियों को भी सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर देंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके प्रेम संबंधो में मधुरता बढ़ेगी। बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। 23 अक्तूबर के बाद परिजनों के साथ आप किसी धार्मिक स्थल की यात्रा करेंगे या घर परिवार में शुभ कृत्य का आयोजन होगा।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए सामान्य रहेगा। 5 मार्च के बाद शिक्षा के क्षेत्र में उनकी रूचि बढ़ेगी। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो सबसे अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

नवविवाहित व्यक्तियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है।आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में व्यावसायिक व्यस्तता के कारण आप अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देंगे परन्तु 5 मार्च से लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास करेगी। आप अपने दैनिक कार्यों में स्फुर्तिवान बने रहेंगे।

12 अगस्त से आप प्रियजनों और परिजनों के साथ अधिक से अधिक समय बिताएंगे। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे। 23 अक्तूबर से आप अपनी दिनचर्या बहुत सशक्त रखेंगे और व्यायाम भी करेंगे जिससे अपने आपको आरोग्य व तंदरूस्त महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

इस वर्ष विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी ये समय बहुत शुभ है। प्रतियोगिता परीक्षार्थी परीक्षा में सफल होंगे। जो व्यक्ति अपना व्यापार शुरू करना चाहते हैं। उनके लिए यह समय अनुकूल है।

शनि के गोचर के बाद बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलेगी। रोजगार के नये अवसर भी पैदा होंगे। व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। 5 मार्च के

बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

23 अक्तूबर के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके घर में धार्मिक व मांगलिक कार्य अधिक होते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान व मन्त्र जाप के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी।

- तांबे के लोटे से प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।
- बुधवार के दिन गणेश जी को दुर्वा चढ़ाएं एवं गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष के प्रारम्भ के तीन माह श्रेष्ठ रहेंगे। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। अपने बौद्धिक बल के द्वारा व्यापार को एक अलग ही मुकाम पर ले जाएंगे। बड़ी-बड़ी योजनाएं और अवसर आपके द्वार पर दस्तक देंगे। आपको पूर्ण विश्वास के साथ आगे की ओर कदम बढ़ाना है। 18 मार्च के बाद दशमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। परन्तु व्यापारिक व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा।

व्यावसायिक जीवन में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो आपका साझेदार धोखा दे सकता है। उसके साथ संबंध खराब हो सकते हैं। आप अपने अनुभवों से खुद का विकास करेंगे। आपका धैर्य ही आपको प्रगतिशील रहने के लिए प्रेरित करता रहेगा और आप हर समस्या का समाधान सूझ-बूझ से निकाल लेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए उत्तम रहेगा। संचित धन में वृद्धि होगी। धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। नवीन संपत्ति खरीदने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। इसमें आपको सफलता भी मिलेगा। 18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आपको क्रय-विक्रय के मामले में सावधान रहना चाहिए। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं नहीं तो द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपका अनावश्यक खर्च बढ़ा सकती है।

8 अक्टूबर से मंगल ग्रह का गोचर आपके आय के स्रोत में बढोत्तरी करेगा। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। कार्य व्यवसाय में भी आपको अच्छा लाभ मिलेगा। जिससे पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू माहौल अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा। धर्मपत्नी के साथ वैचारिक मतभेद बना रहेगा। 18 मार्च के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह दृष्टि प्रभाव से परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। मातुल व ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

8 अक्टूबर के बाद आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यह समय काफी शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। लोग आपका सम्मान करेंगे।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आप उन पर अभिमान करेंगे। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान मे उनका प्रवेश हो जाएगा।

18 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से संतान संबंधित चिंताएं हो सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रतिकूल कर सकती है। जिससे कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। अतः उस समय अपने बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। शारीरिक आरोग्यता प्राप्ति के लिए आप उनका तुला दान भी करा सकते हैं।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक अनुकूलता बनाए रखने के लिए आप संतुलित आहार एवं नियमित व्यायाम करते रहेंगे। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। आपके अंदर अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। लग्नस्थ राहु के कारण मानसिक अशान्ति व आलस्य की भावना उत्पन्न होती रहेगी। अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुदृढ़ रखें।

सारे ग्रह प्रतिकूल होने से आप अत्यधिक उद्वेग व मानसिक चिंता से ग्रस्त रहेंगे। शत्रुओं से सावधानी भी हितकारी रहेगी। मुख रोग, नेत्र विकार आपका शारीरिक कष्ट बढ़ा सकते हैं। अपने क्रोध, हठ, जिद व अहं भाव का त्याग करें। कार्य को स्वास्थ्य से अधिक अहमियत न दें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को और उत्तम बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो अच्छा लाभ मिलेगा।

यदि आप विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो 18 मार्च से समय आपके लिए काफी शुभ हो रहा है। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यात्रा के अंतराल में किसी से मित्रता भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। आप अधिक से अधिक धार्मिक कार्य करेंगे। जैसे मन्दिर निर्माण में दान देना, धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता इत्यादि। तीर्थ स्थलों की यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आप पूजा-पाठ कम ही कर पाएंगे। परन्तु द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधु, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- दुर्गा कवच का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसका पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं एकादश स्थान में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु 28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से समय बहुत उत्तम हो रहा है। आप अपने परिश्रम की बदौलत व्यावसायिक जीवन में उन्नति करेंगे। दशमस्थ शनि आपके अंदर काम करने का जुनून उत्पन्न करेगा। यही आपके व्यवसायिक उन्नति का कारण बनेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा और बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे।

जुलाई के बाद समय और भी ज्यादा अनुकूल हो रहा है। व्यापारियों को उम्मीद से ज्यादा मुनाफा होने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। लक्ष्मी आपके द्वार पर दस्तक देगी। यदि आप ब्याज पर भी पैसे देते हैं तो भी अच्छा लाभ होने की संभावना है। इसके अतिरिक्त जो लोग शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हैं या इससे संबंधित क्षेत्र में उनका पैसा लगा है उनको भी बेहतर मुनाफा होगा।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो आपकी आर्थिक स्थिति बेहद ही शानदार रहने वाली है। इस सफर में आपको बहुत ही कम चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। जिन्दगी के इस सुनहरे पल का भरपूर आनंद लें और अपने कार्यों के प्रति दृढ़ संकल्पित रहें।

जुलाई के बाद एकादश स्थान के शनि धनागम में वृद्धि करते रहेंगे। यह समय आपके लिए उपलब्धियों से भरा रहेगा। नई संपत्ति में निवेश करेंगे। पुराने कर्ज से मुक्त होंगे एवं तरक्की के द्वार खुलेंगे। व्यावसायिक उन्नति के लिए भी आप धन निवेश करेंगे। घरेलू सुख-सुविधा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए वर्ष का पूवार्द्ध मिला-जुला रहेगा। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल में विषता की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। अतः आपको पारिवारिक मामलों में बड़ी ही समझदारी से काम लेना होगा। हालांकि द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि को दर्शाता है। मार्च के बाद मित्र व पत्नी के साथ संबंध बहुत ही मधुर होंगे। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके भाई-बहनों के लिए बहुत ही शुभ है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है। शारीरिक कष्ट एवं मानसिक परेशानी बनी रहेगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी रूकावटें आ सकती हैं।

28 मार्च से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। अतः उस के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी। फिर भी अपने बच्चों के स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापरवाही न करें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी शुभ है। उसका चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

साल का पूर्वार्द्ध स्वास्थ्य के लिहाज से अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ से ही कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपको बीमार कर सकता है। यदि पहले से आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। शारीरिक कष्ट के साथ मानसित चिंता भी बनी रहेगी।

28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि शारीरिक व्याधियों को दूर कर आरोग्यता प्रदान करेगी। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का विकास होगा जिसके फलस्वरूप आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठ कर टहलना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। शारीरिक आरोग्यता को अनुकून बनाने के लिए आप तुला दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। मार्च के बाद अध्ययन कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी।

जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको जुलाई के बाद मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। 28 मार्च से आप अपने जीवनसाथी के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द प्राप्त करेंगे। व्यावसायिक यात्रा भी आपको लाभ देकर जाएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। अधिक आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा-पाठ भी प्रभावित हो सकता है। 28 मार्च के बाद धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि बढ़ेगी। मन्दिर जाना, ध्यान करना, पूजा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। ईश्वर के प्रति आपका लगाव और बढ़ेगा।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णुजी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने घर में स्थापित करें एवं उसके सामने प्रत्येक दिन घी का दीपक जलाएं।
- गणेशजी के निम्न मन्त्र का पाठ करें-
  ॐ गं गणपतये नमः ।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि एकादश भाव में और सिंह राशि का राहु द्वादश भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष आप कुछ विशेष करने वाले हैं। पराक्रम के बल पर अपनी व्यापारिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। कार्य व्यवसाय में मित्रों व परिजनों से खूब मदद मिलेगी। आप महत्वपूर्ण व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। यदि साझेदारी में कोई व्यापार कर रहे हैं तो वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए श्रेष्ठ है। कानून से जुड़े लोगों अच्छा लाभ मिलेगा। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के बाद कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

अप्रैल के बाद आपके कार्यों में गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। आपके विरोधी बढ़ेंगे जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। कार्यक्षेत्र में किसी से मतभेद हो सकता है। ऐसी स्थिति में आपको घबराना नहीं चाहिए और बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए, क्योंकि अन्त में सफलता आपको ही मिलने वाली है। अतः आत्मविश्वसा के साथ कार्य करते रहें।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति को देखें तो वर्ष के प्रारम्भ में ही आय के स्रोत सृजित होंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए बहुत ही श्रेष्ठ है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

6 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय कम एवं व्यय ज्यादा होने का योग बन रहा है। ऐसे में आपको अनावश्यक खर्च रोकना चाहिए। निवेश के मामले में सावधान रहें एवं जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक स्थिति में कुछ उतार-चढ़ाव होंगे। जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे। भाईयों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे, लेकिन माता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। चिंता न करें इससे आपकी माता की भावनाएं आहत नहीं होंगी। रिश्तेदारों और चाहने वालों के साथ संबंध अच्छे रहेंगे।

गुरु ग्रह का गोचर आपके ससुराल वालों के साथ संबंध खराब कर सकता है जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या

विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा। एकादशस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक कार्य के प्रति आप हमेशा तत्पर रहेंगे।

संतान

वर्षारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे। उनके पराक्रम में वृद्धि होगी परंतु उसके बावजूद भी आपकी चिंताएं बनी रहेंगी। आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। यदि दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके बच्चों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। उनको स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां आ सकती हैं। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप रोग मुक्त रहने वाले हैं। खान-पान पर विशेष ध्यान देंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखेंगे। परन्तु 6 अप्रैल के बाद कुछ न कुछ शारीरिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। मौसमजनित बीमारियों से भी आप परेशान होते रहेंगे। यदि पहले से किसी बीमारी से परेशान हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा प्रभावित रहने वाला है।

द्वादशस्थ राहु के कारण आपके अंदर रोग-प्रतिरोधक शक्ति कम होगी। आप अपने आप को कमजोर व बीमार महसूस कर सकते हैं। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। नहीं तो पेट संबंधित तकलीफे बढ़ सकती हैं। तुला दान व अन्न दान करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष के प्रारम्भ में ही प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करेंगे। एकादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शत्रुओं पर आपका प्रभाव बढ़ेगा। आपके समस्त विरोधी शान्त होंगे। व्यावसायिक शिक्षा, औषधि क्षेत्र, कम्प्यूटर साईंस, सिविल सर्विसेज से जुड़ लोगों को सफलता मिलेगी।

6 अप्रैल के बाद समय कुछ खास अच्छा नहीं रहेगा। कुछ लोग आपके विरुद्ध षड्यंत्र भी बना सकते हैं। बेवजह आपके ऊपर आरोप भी लगाया जा सकता है, जिससे आप काफी तनाव महसूस करेंगे। यदि आप विदेश में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह समय आपके लिए बहुत ही शुभ है।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष बहुत ही शुभ है। द्वादश स्थान के राहु अचानक आपको विदेश यात्रा करा सकते हैं। ऑफिस व व्यवसाय से संबंधित छोटी-मोटी यात्राएं होती

रहेंगी। 6 अप्रैल के बाद जन्मभूमि की यात्रा करेंगे।

किसी भी प्रकार की यात्रा करते समय या वाहनादि चलाते समय सावधान रहें नहीं तसे दुर्घटना हो सकती है। क्योंकि अष्टम स्थान का गुरु एवं द्वादश स्थान का राहु चोट चपेट का प्रबल योग बना रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्यो के लिए बहुत ही शुभ है। ईश्वर की भक्ति में आपका अटूट विश्वास रहेगा। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ सभी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होंगे। धर्म से जुड़े सभी पर्वो को हंसी खुशी मनाएंगे। 6 अप्रैल के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त विद्याओं या तान्त्रिक सिद्धियों के प्रति भी आपका आकर्षण बढ़ेगा।

- गुरुवार के दिन केला गरीबों में दान करें एवं केले के वृक्ष की पूजा करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें। ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का प्रत्येक दिन पाठ करें।
- सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें और सूर्य नमस्कार करें आपके स्वास्थ्य के लिए लाभदायक रहेगा।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में एकादशस्थ शनि के प्रभाव से व्यापार में अच्छी सफलता मिलेगी, परन्तु गुरु एवं राहु ग्रह का गोचन प्रतिकूल होने के कारण कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं। जो कि आपके कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें, गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें।

गैरकानूनी तरीकों से धन कमाने की कोशिश न करें, वरना सकारात्मक परिणामों की जगह आपको नकारात्मक परिणाम मिल सकते हैं और आप कानून की जद में आ सकते हैं। अर्जित की हुई संपत्ति को व्यर्थ में न गवाएँ। सभी प्रकार के वित्तीय मामलों में पारदर्शिता बरतें। अप्रैल के बाद समय अच्छा हो रहा है। फिर भी बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। अगस्त के बाद नौकरी वाले व्यक्तियों को अच्छी सफलता मिलेगी। कार्यस्थल पर मान-संमान व अधिकारियों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी में कोई भी कार्य न करे नहीं तो आर्थिक हानि हो सकती है। निवेश व आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहें व जल्दबाजी न करें। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चो पर नियंत्रण रखें।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने के लिए किसी भी प्रकार के वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। अप्रैल के बाद आपके बंद आय के आय के मार्ग खुलेंगे। बहुत दिनो से फंसे हुए व रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। 9 सितम्बर के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अचल संपत्ति के साथ साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यो में आपका धन खर्च हो सकता है। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा और घरेलू वातावरण भी अच्छा रहेगा। माता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। परन्तु आपके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए यह समय अच्छा नहीं है।

15 अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे, जिससे समाज में मान संमान के साथ साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। आपको भाई-बहनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेगे। वो अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। अष्टमस्थ गुरु आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी दे सकते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

अप्रैल के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव कि स्थिति बनी रहेगी। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी है तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आप बहुत ज्यादा बीमार हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में खान-पान के साथ दिनचर्या को भी अनुशासित बनाएं और समय समय पर डॉक्टर की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

15 अप्रैल के बादे नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरु हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। फिर भी सुबह-सुबह व्यायाम करना आपके लिए लाभदायक रहेगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष ठीक ठाक रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 15 अप्रैल के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राओं के साथ साथ धार्मिक यात्राएं भी हो

सकती हैं।

इन यात्रा के अंतराल में किसी के साथ आपकी मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अगस्त के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानातरण आपके मनोनुकूल स्थान पर भी हो सकता है। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान का गुरु धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं होता। अतः पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आपकी रुचि नहीं रहेगी। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण मानसिक द्वन्दता बनी रहेगी, जिससे पूजा पाठ में आपका मन एकाग्र नहीं हो पाएगा। 15 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर धर्म स्थान में होगा। उस समय आपका मन धार्मिक कार्यों की ओर आकृष्ट होगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। विशेष रूप से आप भगवान शिव जी की उपासना करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन की लड्डू दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का नित्य पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- तुला दान करें व महामृत्युंजय मन्त्र का नित्य पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सफलता मिलेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण वरिष्ठ व अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा। एकादश स्थान का राहु अचानक सफलता का मार्ग खोल सकता है, जिससे व्यापार में उन्नति मिल सकती है। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा, जो आपके लिए अनुकूल रहेगा।

सितम्बर के बाद आपका समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण कुछ प्रतिद्वंदी आपके कार्यों में रुकावटें डाल सकते हैं, जिससे आप परेशान हो सकते हैं। अतः इस समय के अंतराल में आप बड़े विवेक से काम लें। व्यापार में किसी पर आंख बन्द कर विश्वास न करें नहीं तो हानि हो सकती है और कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह साल सामान्यतः अच्छा रहेगा। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धनागम के स्रोत बढ़ेंगे। 26 अप्रैल के बाद द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि की प्राप्ति होगी। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय करेंगे। यदि कोई बड़ा निवेश करना पड़े तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों कीा सलाह अवश्य लें।

शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं होने के कारण बीमारी इत्यादि में भी धन व्यय हो सकता है। सितम्बर के बाद अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है। अतः उस समय लेन देन के मामले में सावधान रहें। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके हक में नहीं होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यावसायिक व्यस्तताओं के चलते घर में अधिक समय दे पाना मुश्किल हो सकता है। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि घर में कुछ विषम स्थितियां भी उत्पन्न कर सकती है। अतः अच्छा यही होगा कि विपरीत परिस्थितियों को झेलते समय आप अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। परन्तु 26

अप्रैल के बाद से गुरु ग्रह का गोचर पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही बढ़िया है।

आपको परिवार में बुजुर्ग सदस्यों का सहयोग मिलेगा। परिवार के प्रति आपका भी आकर्षण बढ़ेगा। माता-पिता जी के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। आपके भाईयों की उन्नति होगी। सितम्बर के बाद सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यह सब आपके अच्छे व्यक्तित्व के कारण होगा।

संतान

संतान के दृष्टि कोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि आपके बच्चों के लिए शुभ है। उन्नति के सारे मार्ग खुलेंगे और आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। प्रथम संतान के बारे में शुभ समाचार प्राप्त होंगे।

अप्रैल के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। अतः आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में व्यवधान आ सकता है। परन्तु 16 सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है। यह समय गर्भाधान व संतानोत्पति के लिए श्रेष्ठ रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। लग्न स्थान में शुभ प्रभाव के कारण सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। परन्तु अप्रैल के बाद संक्रामक बीमारियों की चपेट में आ सकते हैं।

शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों की संभावना हो सकती है। अत्यधिक आलस्यता के कारण आप स्वस्थ्य रहते हुए भी बीमार जैसा अनुभव करेंगे। यदि आपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया तो किसी बड़ी बीमारी की चपेट में आ सकते हैं। ऐसे स्थिति में आपको दवा से ज्यादा दुआ की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी रहेगी। शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपको प्रवेश मिल सकता है।

अप्रैल के बाद अत्यधिक भोजन एवं आलस्यता से बचें। विद्याध्ययन में एकाग्रता बढ़ाने के लिए गुरुवार के दिन उपवास करें। यदि आप व्यापारी हैं तो 19 अक्टूबर के बाद आपके व्यापार में व्यवधान आ सकता है। नौकरी वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपकी विदेश यात्राएं होंगी। छोटी-मोटी यात्राओं के

साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा। अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है।

यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि द्वादश स्थान का शनि यात्रा के अंतराल में दुघर्टना का भी योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्षारम्भ श्रेष्ठ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगा। दान पुण्य अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ध्यान व योग अधिक करेंगे। सितम्बर के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। सत्संग व सत्कर्म अधिक करेंगे। भागवत कथा सुनना व सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काली वस्तु दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- तुला दान करें। (अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।)
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर नित्य उसका दर्शन करें।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं द्वादश भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं एकादश में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से साल का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। नौकरी में परिवर्तन व व्यवसाय में व्यवधान आने की संभावना बन रही है। शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। हार्डवेयर, ईधन व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। 11 मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। यदि उस समय किसी के साथ मिलकर व्यापार करें तो कुछ सफलता मिल सकती है। फिर भी व्यवसाय/नौकरी व निवेश संबंधी मामलों में जल्दबाजी में जोखिम भरा निर्णय लेना घातक होगा।

अक्टूबर के बाद क्रय-विक्रय व खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को सावधान रहना चाहिए नहीं तो हानि हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियां का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। धनागम तो होगा परन्तु व्यय अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको अचल धन व रत्नादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। 11 मई के बाद आय के स्रोत बढ़ेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे वापस मिलेंगे।

अक्टूबर के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक हानि का योग बना रहा है। इस समय आपको खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। अचानक परिवार में कुछ ऐसे खर्चे आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक कमी का एहसास हो सकता है। अतः इस समय के अंतराल में आपको सावधान रहना चाहिए।

घर-परिवार, समाज

द्वादश स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए आप छोटी छोटी बातों पर ध्यान दें। दशम स्थान में राहु एवं गुरु की युति आपके माता-पिता जी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। परन्तु 11 मई से

समय शुभ हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर होंगे। आपके भाईयों की उन्नति होगी।

एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से मान संमान तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, जिससे समाज में आपका यश सर्वत्र व्याप्त होगा। साथ ही किसी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था से भी जुडेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। फलतः सभी लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपको उचित सम्मान प्रदान करेंगे। अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

संतान

राहु एवं गुरु का चण्डाल योग संतान के लिए बहुत अच्छा नही रहेंगे। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना लाभप्रद रहेगा। 11 मई के बाद यह योग समाप्त हो रहा है। गुरु ग्रह के शुभ होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति होगी।

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। परन्तु अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में उन पर ज्यादा ध्यान देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेंगे। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। मौसमजनित बीमारियों से आप प्रभावित रह सकते हैं। आप को ऐसा लगेगा कि धीरे धीरे कमजोर होते जा रहे हैं।

11 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। आप अपने को पूर्ण रूप से स्वस्थ समझेंगे। खान पान पर ज्यादा ध्यान दें नहीं तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुची बढ़ेगी। इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग कर स्फूर्तिवान बनें। आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

द्वादश स्थान में शनि का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आलस्यता व दीर्घसूत्रता आपके उन्नति में बाधक बन सकती है। अतः समय का सदुपयोग के साथ मन को एकाग्र कर अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

11 मई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल रहेगा। जो विद्यार्थी किसी नये कॉलेज में प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे हों उन्हें मनोनुकूल कॉलेज में दाखिला मिल

जाएगा। यदि गूढ़ विज्ञान और मनोविज्ञान में आपकी रुचि है तो उनके लिए समय अनुकूल है। अक्टूबर के बाद यदि शिक्षा के संदर्भ में कोई लुभावना प्रस्ताव मिल रहा है तो सावधान रहिए क्योंकि शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने कारण आपको धोखा मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। व्यवसाय संबंधित यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ होगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। अक्टूबर के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। कर्म को ही अपना धर्म मानेंगे और कर्म पर ज्यादा विश्वास करेंगे। गरीबों की सहायता करेंगे और उसके दुखों को दूर करने का पूर्ण प्रयास करेंगे। मई के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ेगा, जिससे आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। सुबह शाम मन्दिर जाना व पूजा पाठ करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- अमावस्या तिथि को विद्वान ब्राह्मण को भोजन कराएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें व मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना करें और सुबह सुबह उसका दर्शन करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ व्यावसायिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके प्रतिद्वंदी बढ़ेंगे तथा आपको किसी षड्यन्त्र में भी फंसा सकते हैं। परन्तु 2 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण आप सभी शत्रुओं को पीछे छोड़ कर सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। यदि आप साझेदारी में व्यापार कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। अनुभवी व वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। जिसके प्रभाव से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 13 जुलाई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। आपके बड़े अधिकारियों से वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्नति रुक सकती है अथवा प्रतिकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। ऐसे प्रतिकूल समय में आपको बड़े ही विवेक से काम लेना चाहिए। 4 नवम्बर के बाद लोहा, तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकरी रहेगा। व्यापार में उन्नति व आशा से अधिक लाभ की संभावना बढ़ेगी। आर्थिक लाभ होगा एवं कार्यों में वृद्धि होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण अनावश्यक खर्चे बढ़ेंगे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाएं। धन के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। घर में रोग की अधिकता होगी जिसके निवारण में धन का व्यय होगा। रिश्तेदार व मित्रों के साथ पैसे का लेन देन न करें नहीं तो उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं। 3 मार्च से 2 जून तक समय कुछ अच्छा हो रहा है। फिर निवेश के मामले में सावधान रहें क्योंकि द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर शुभ नहीं है।

परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप व्यापारिक उन्नति के लिए बैंक से लोन भी ले सकते हैं । नई संपत्ति क्रय करने के लिए यह समय शुभ नहीं है। धन संपत्ति से जुड़े मामलों को कोर्ट कचहरी में ले जाने से बचें। नहीं तो आपका ज्यादा नुकसान होगा। 4 नवम्बर से समय आपके पक्ष में आ रहा है। उस समय आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे और शेयर बाजार लॉटरी इत्यादि क्षेत्रों से धन लाभ हो

सकता है।

घर-परिवार, समाज

दाम्पत्य जीवन के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं है। जीवानसाथी के रूखे व्यवहार का सामना करना पड़ सकता है। अपने दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ विशेष स्नेह व सहनशीलता से काम लेना होगा। 5 अप्रैल के बाद समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। द्वितीय स्थान का शनि पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं होता। अतः परिवार के लोगों के सुझावों पर अमल करना आपके लिए फायदे का सौदा हो सकता है और उनके विरुद्ध जाना घातक भी हो सकता है। माँ के साथ कुछ नाराजगी हो सकती है तथा उन्हें स्वास्थ्य संबंधी भी कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं।

समाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष समान्य रहेगा। 13 जुलाई के बाद भाईयों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। परन्तु आपके मातुल पक्ष के लोगों की उन्नति होगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्म पत्नी के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। 4 नवम्बर से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा पारिवारिक अनुकूलता प्राप्त होगा।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों के लिए समय शुभ नहीं है। आपके बच्चे कुसंगति का शिकार हो सकते हैं। उनका रहन सहन व दिनचर्या भी खराब हो सकती है, जिससे उन्नति में व्यवधान आ सकती है। 3 मार्च को गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा योग बना रहा है।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए शुभ है। आपके बच्चे अपने योग्यता के बल पर उन्नति करेंगे तथा उनके बारे में शुभ सामाचार प्राप्त होंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। 2 जून से समय प्रभावित हो रहा है। परन्तु चिंता न करें क्योंकि 4 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा। उसके बाद आपके बच्चे निर्विघ्नता पूर्वक उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी। चोट चपेट व वाहनादि से दुर्घटना इत्यादि का योग बन रहा है। स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या भी हो सकती है। पेट संबंधी समस्या जैसे अचानक पेट दर्द, गैस, अपच या बदहजमी आदि हो सकती है। सर्जरी आदि होने की भी संभावनाएं बनी हुई हैं। 3 मार्च से 2 जून तक का समय अच्छा रहेगा। आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। परन्तु उसके बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

अतः आपको समय-समय पर डॉक्टर की सलाह लेते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त आपको अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए अपने खान पान का

विशेष ध्यान रखना होगा। जहां तक हो सके शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। दाल, सब्जी, फल आदि का ही अधिक सेवन करें। 4 नवम्बर के बाद आपका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा हो जाएगा तथा आप निरोगी काया के स्वामी होंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 3 मार्च से पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए अच्छी है। यदि आप उच्च शिक्षा हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 3 मार्च से 2 जून तक का समय बहुत ही शुभ है क्योंकि सफलता के सारे मार्ग आपके पक्ष में है। उसके बाद समय प्रभावित हो रहा है।

साल के उत्तरार्द्ध में उन्नति के मार्ग प्रभावित हो रहे हैं। आप अपने करियर में सफलता पाना चाहते हैं तो अथक परिश्रम करना पड़ेगा। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। जो लोग विदेश में अपना करियर बनाना चाह रहे हैं। उनके लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान के गुरु वर्षारम्भ में ही विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 3 मार्च के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी मिलेगा।

5 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। जिससे आप मानसिक अशान्त रहेंगे। नवमस्थ राहु के कारण ज्यादातर यात्राएं आपकी अचानक ही होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। लग्न स्थान का शनि आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है। आलस्यता के कारण आपका दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों की सहायता करना, भूखे को खाना खिलाना इत्यादि कर्मों को ही आप अपना धर्म समझेंगे। 4 नवम्बर के बाद आपका मन पूजा-पाठ के प्रति आकर्षित होगा। दैनिक पूजा-पाठ में सुधार होगा। परमात्मा की भक्ति व मन्त्र पाठ में ज्यादा रुचि लेंगे।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु, केला या बेसन के लड्डू दान करें।
- महामृत्युंजय यन्त्र अपने घर में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।

वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे। पूरे वर्ष राहु वृष राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं प्रथम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं प्रथम भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके प्रतिद्वंदी व्यवसाय में बाधा डालने की काशिश करेंगे, जिससे आपको मानसिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। 6 अप्रैल से समय और ज्यादा प्रभावित हो रहा है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। फलस्वरूप आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपको दूसरों के लिये भी काम करना पड़ सकता है। किसी भी व्यासायिक यात्रा को करने से पहले भली भांति जांच लें कि वह यात्रा आपके लिए लाभकारी है या नहीं।

वर्ष का उत्तरार्द्ध खनिज, खाद्य विभाग व रासायनिक विभागों में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए शुभ है। नौकरी या व्यवसाय में अच्छा सुधार होगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से आपके सम्पर्क बढेंगे। लेकिन कुछ कामों में आप अनुभवी लोगों की सलाह को भी नजरअंदाज कर सकते हैं और गलत निर्णय लेकर चिंताग्रस्त हो सकते हैं। सरकारी व्यक्ति की सहायता से भी आपके काम बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक स्थिति के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं है। आपके अनावश्यक खर्चे बढें .गे, जिससे संचित धन में कमी आ सकती है। 6 अप्रैल के बाद घर परिवार में रोग व्याधियों की अधिकता होने से धन का अपव्यय अधिक होगा। पैसे का लेन देन करते समय कागजी कार्यवाही अवश्य करें। इस समय के अंतराल में अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाएं तथा जोखिम भरे कार्यो में निवेश न करें।

किसी नए काम को शुरु करने के लिए बडा निवेश करने से बचें अन्यथा धन हानि हो सकती है। लेकिन उत्तरार्द्ध में अचानक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। इस अवधि में वसीयत प्राप्त होने की सम्भावना बन रही है। यदि आप जुआ, लॉटरी आदि के माध्यम से कमाई करते हैं तो इनमें बडा निवेश करने से बचें। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे। वर्षान्त आपके लिए काफी श्रेष्ठ है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से चल एवं अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों में यह वर्ष मिले जुले परिणाम देने वाला रहेगा। वर्ष के प्रथम पक्ष में परिवार का वातावरण भी उत्तम व मेल-जोल वाला रहेगा। परिवार के लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। परिवार के सभी लोग आपका सम्मान और आदर करेंगे। 6 अप्रैल से समय किंचित प्रभावित होगा। नवम स्थान का राहु अचानक आपके पिताजी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है, जिसकी वजह से आप चिंतित रह सकते हैं। परिवार के कुछ सदस्यों का वर्ताव आपके प्रति रूखा या असहयोगात्मक रह सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध परिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल रहेगा। परिवार में सुख और शान्ति का माहौल बनेगा। आप पारिवारिक सुख प्राप्त करेंगे। आपके अन्दर अहंकार युक्त भावनाएं पनप सकती हैं जिससे घर-परिवार में आपकी जनप्रियता घट सकती है। बेहतर होगा आप अपनी अन्तर्दृष्टि से स्वयं को परखें। जरूरत से ज्यादा तर्क-वितर्क करने से बचें अन्यथा परिवारीजनों को आपकी निष्ठा और आपके पारिवारिक स्नेह पर संदेह होने लगेगा।

संतान

नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि बच्चों की उन्नति के सारे मार्ग खोल रही है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। संतान की उन्नति के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे।

6 अप्रैल से 28 जून तक समय किंचित प्रभावित रहेगा, परन्तु उसके बाद समय फिर से उत्तम हो जाएगा तथा पूरा वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षान्त में आपके बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा वे आपकी उम्मीदों से बढ़-चढ़ कर कार्य करेंगे, जिससे आपको उन पर गर्व होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा, परन्तु 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरु छोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से गुजर रहे हैं तो परहेज की ज्यादा आवश्यकता है नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। हांलाकि 28 जून के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा।

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मानसिक सन्तुष्टि बनी रहेगी। सभी महत्वपूर्ण कार्यों को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल बनाए रखने के लिए शुद्ध साकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता

है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय शुभ है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को सफलता मिलेगी।

अप्रैल से जून तक का समय नौकरी करने वालों के लिए अच्छा नहीं है। जून के बाद आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इजीनियरिंग व हार्डवेयर की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को अधिक सफलता नहीं मिलेगी।

यात्रा-तबादला

6 अप्रैल के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। सामुद्रिक यात्रा का भी प्रबल योग बन रहा है। सपरिवार किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।

28 जून के बाद आपकी लम्बी यात्रा होगी। यह यात्रा आपके लिए बहुत ही सुखद व मनोरंजात्मक होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से पूजा पाठ के प्रति आपकी विशेष रुचि बढ़ेगी। ईश्वर के प्रति आप का अटुट विश्वास होगा। 6 अप्रैल के बाद दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। मन्दिर निमार्ण, गोशाला, अनाथाश्रम, वृद्धाश्रम इत्यादि स्थानों पर खुले हाथों से दान देंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे, जिससे परिवार की सुख, शान्ति, समृद्धि इत्यादि में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्य कर आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा भी अधिक होंगी।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित करें एवं नित्य उसका दर्शन करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके लगेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं या विरोधियों द्वारा रूकावटें डाली जा सकती हैं जिससे आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे तथा चाह कर भी अपने शत्रुओं का मुकाबला नहीं कर पाएंगे। व्यापार में कोई बड़ा निर्णय लेने के लिए यह आवश्यक है कि आप पूरी जांच परख करके ही ऐसा करें, क्योंकि यह साल आपके के लिए अच्छा नहीं है। झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें अधिक आत्मविश्वास आपको आपदग्रस्त कर सकता है।

6 मई से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपकी मान-मर्यादा में बढ़ोत्तरी होगी तथा सभी सहकर्मियों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों को इच्छित लाभ होगा। नौकरी करने वालों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। वर्षान्त अधिक प्रतिकूल रहने वाला है, अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा किसी पर भी आंख बन्द कर विश्वास न करें।

धन संपत्ति

द्वितीयस्थ गुरु के कारण धनागम के स्रोत बढ़ेंगे, परन्तु राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने कारण कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अष्टमस्थ राहु एवं लग्नस्थ शनि के कारण धोखा या धन हानि के योग बन रहे हैं। आपको शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में वसीयत प्राप्ति से आपको धन लाभ हो सकता है अथवा किसी अप्रत्याशित जगह से अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप किसी धार्मिक कार्य में धन खर्च कर सकते हैं। परिवार के सदस्यों और अन्य लोगों के हित में भी आप खर्च करेंगे। 26 सितम्बर के बाद किसी प्रकार का निवेश न करें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्य आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने परिवार पर पूर्ण नियंत्रण रखेंगे तथा सभी परिवारीजनों का विशेष ख्याल भी रखेंगे। तृतीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके छोटे भाई

बहनों के लिए अच्छी नहीं है। 6 मई के बाद ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपसी मतभेद व तनाव हो सकता है।

26 सितम्बर के बाद पारिवारिक क्लेश होने की संभावना बन रही है। द्वितीय स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि परिवार में वैचारिक मतभेद उत्पन्न कर सकती है। इस समय के अंतराल में आपको बड़े विवेक से काम लेना होगा तथा अपनी धैर्यशक्ति बनाए रखनी होगी। समाजिक स्तर में कुछ कमी आ सकती है। अतः सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा। संतान आज्ञापालक भी होगी।

आप अपनी ओर से उनकी उन्नति हेतु यथोचित प्रबन्ध करेंगे और वे आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह के प्रबल योग बन रहे हैं।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। चिकित्सकीय परामर्श लेते रहें एवं अपने खान-पान पर भी विशेष ध्यान दें। नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

6 मई के बाद आपके स्वास्थ्य में सुधार होगा क्योंकि लग्न स्थान में गुरु ग्रह का गोचर सकारात्मक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है। जो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही शुभ है। वर्षान्त में आपका स्वास्थ्य फिर से खराब सकता है। अतः खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। घुटनों में दर्द व पैर में चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो 6 मई के बाद समय अनुकूल हो रहा है।

इंजीनीयर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के उत्तरार्द्ध में नौकरी में अचानक पदोन्नति हो सकती है।

यात्रा-तबादला

वर्ष में छोटी-मोटी यात्राएं होंगी परन्तु 6 मई के बाद आप बड़ी यात्राओं का आनन्द

लेंगे, जिसमें व्यवसाय से संबंधित अधिक यात्राएं होंगी। धार्मिक यात्राओं का भी योग बन रहा है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। विदेश यात्रा के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

लग्न स्थान के शनि धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगे जिससे आप चाह कर भी कोई शुभ कार्य नहीं कर पायेंगे। आलस्य के कारण दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित होगा। 6 मई के बाद लग्न स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। उस समय ईश्वर के प्रति आपकी निष्ठा एवं विश्वास बढ़ेगा। दैनिक पूजा-पाठ में भी सुधार होगा। वर्षान्त में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना व योग के लिए आप अधिक से अधिक समय निकालेंगे। सत्संग में जाना व गुरु वाणी सुनना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं काली वस्तु का दान करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- श्रावण मास में शिवजी का रुद्राभिषेक व पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं द्वितीय भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यापार में कुछ न कुछ परेशानियां आती रहेंगी। विरोधी तथा शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना होगा। गलत-सही का चुनाव करने के बाद ही निर्णय लें। हालांकि गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको कुछ सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। फिर भी व्यावसायिक मामलों में आपको बहुत सावधान रहना होगा।

यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो वर्ष का उत्तरार्द्ध ज्यादा प्रभावित रहने वाला है। आपका साझेदार धोखा दे सकता है। अतः उसके साथ सभी कार्यों में पारदर्शिता रखने की कोशिश करें। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए यह समय ज्यादा प्रतिकूल है। वर्षान्त में कोई नया कार्य व्यवसाय प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों को ही सुचारु रूप से चलाते रहें।

धन संपत्ति

शनि एवं राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आर्थिक मामलों में अधिक सतर्कता बरतने की जरूरत है। जितना ज्यादा हो सके धन की बचत करने की कोशिश करें और फिजूल के खर्चों पर नियंत्रण रखें। आपका कोई करीबी ही आपको दगा दे सकता है। ऐसे लोगों से बचने से के लिए वित्तीय लेनदेन में पूरी सावधानी बरतें। जोखिम भरा निवेश करने से बचें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राजनीति एवं भूमि से संबंधित काम करने वालों को वांछित लाभ मिल सकता है। अकस्मात् व गुप्त धन मिलने की संभावना बन रही है। बैंकिंग संस्थानों से कर्ज लेना चाहते हैं तो शीघ्र ही आपको लोन मिल जाएगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के स्वास्थ्य पर आपका अधिक व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान में शनि ग्रह का गोचर पारिवारिक मामलों के लिए अनुकूल नहीं है। परिवार से जुड़े हर मामलों में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। पारिवारिक सदस्यों के साथ कुछ तर्क-वितर्क होने की संभावना नजर आ रही है। हालांकि समझदारी से इसे टाला जा सकता है। ससुराल पक्ष के लोगों के लिए यह समय अच्छा नहीं है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से

आपके छोटे भाई-बहनो के साथ संबंध अच्छा रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पारिवारिक समस्याएं कुछ कम होंगी। फिर आप पारिवारिक स्थिति को लेकर चिंचित रहेंगे। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद होने की प्रबल संभावना है। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचम स्थान पर शनि की दृष्टि आपके बच्चे को आलसी व बीमार बना सकती है, जिसके चलते उनको वांछित सफलता नहीं मिलेगी। परन्तु आपकी दूसरी संतान के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। उनके विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग बने हुए हैं। उनका भाग्योदय होगा तथा व्यावसायिक उन्नति भी होगी तथा वे अपने प्रतिद्वंदियों से बेहतर कर सकने में सफल होंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीयस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव काफी देखने को मिलेगा। खासकर जोड़ों में दर्द, सिर में दर्द, मानसिक चिंता एवं वायु संबंधी समस्या हो सकती है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकती है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए और तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है। अतः स्वास्थ्य को लेकर किसी प्रकार की लापरवाही न करें अन्यथा स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

यदि कोई बीमारी पहले से चली आ रही है तो वह इस समय बढ़ सकती है, अतः पहले से ही सावधानी बरतें। वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु ग्रह के गोचर के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। उस समय कोई लम्बी बीमारी हो सकती है। व्यापारिक कारणों या अपने निजी कारणों की वजह से मानसिक तनाव बढ़ सकता है। अतः स्वयं को संतुलित एवं नियमित रखें। तुला दान व महामृत्यंजय जाप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें सफलता मिल सकती है। मैकेनिकल इंजीनियर व हार्डवेयर से संबंधित कार्य करने वाले जातकों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वालों के लिए यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। मैनेजमेंट, प्रशासनिक शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी अधिक होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि व्यावसायिक यात्राएं भी कराती रहेगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। धार्मिक यात्रा का सुन्दर योग बन रहा है।

चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय व वाहन चलाते समय सावधान रहें क्योंकि राहु एवं शनि दोनो ग्रहों का गोचर प्रतिकूल है। चोरी व दुर्घटना का योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष आपका मन धार्मिक कार्यों के प्रति विशेष आकर्षित रहेगा। घर में कोई मांगलिक या धार्मिक कार्य संपन्न होंगे। किसी तीर्थस्थान की यात्रा होगी। गुरु का आशीर्वाद व गुरु दीक्षा प्राप्त होगी।

शिवजी की उपासना करें एवं मृत्युंजय मंत्र का पाठ करें। मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं। आपके लिए अपने बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करना एवं माता-पिता की सेवा करना लाभदायक रहेगा।

- मंगलवार का व्रत करें या हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- दुर्गा सप्तशति का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2043

वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। सभी व्यावसायिक मामलों में निर्णय सोच विचार ही लें। हालांकि आप कारोबार के मामले में काफी होशियार हैं फिर भी अपने स्तर पर पूरी एहतियात बरतें। किसी गैरकानूनी क्रिया-कलापो में शामिल न हों तथा कोई ऐसा कार्य न करें जिससे आपकी मानहानि हो। साझेदारी में कार्य करने वाले लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। यदि आप अपनी पत्नी के साथ कार्य कर रहे हैं तो वांछित उन्नति नहीं मिलेगी।

नौकरीपेशा लोगों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आपको खास मुनाफा होगा। यह मुनाफा आपको सैलरी में वृद्धि तथा नई नौकरी के मौके के रूप में मिल सकता है। आपके बड़े अधिकारी आपकी काफी मदद करेंगे। आपके काम की सराहना होगी। अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। अगस्त से सितम्बर तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा। अतः उस समय सावधान रहने की आवश्यकता है। ऐसा कोई कार्य न करें जिससे आपकी छवि खराब हो जाए तथा वरिष्ठजनों और सहकर्मियो के साथ आपके संबंध खराब हो जाएं।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। इसके लिए आपको थोड़ी सावधानी बरतनी होगी। आपकी जमापूंजी में कमी आ सकती है। इसलिए समझदारी के साथ पैसे खर्च करें तथा वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया पूरी किए बिना किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्द करके विश्वास न करें, अन्यथा बहुत सारी दिक्कतें हो सकती हैं।

सितम्बर के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। चतुर्थस्थ गुरु के कारण अचल संपत्ति की प्राप्ति हो सकती है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि पैतृक संपत्ति प्राप्त करा सकती है। यदि कोर्ट कचहरी में कोई मुकद्दमा चल रहा है तो उसमें भी अनुकूलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्यों में तथा धार्मिक कार्यों में आपके पैसे अधिक खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा।

माता के साथ आपके संबंध बेहतर रहेंगे तथा वे हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगी। भाई-बहनों सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिससे में आपकी अहम भुमिका होगी। सप्तम स्थान का राहु आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा, जिससे समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं, जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और बढ़ेगी।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अपने जीवन में उन्नति के लिए अथक मेहनत करेंगे। देर से ही सही लेकिन उनको परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। आपकी दूसरी संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। अचानक उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य में सुधार व कार्यक्षमताओं की वृद्धि होगी। आपकी सन्तान इस वर्ष कोई नई सम्पत्ति या वाहन के क्रय में धन का निवेश कर सकती है। आपका दूसरी सन्तान से टकराव या वैचारिक मतभेद भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की बात करें तो यह वर्ष सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्कता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो इसका नकारात्मक प्रभाव आपके शरीर पर पड़ेगा। मौसमजनित बीमारियों से आप ज्यादा परेशान हो सकते हैं। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि सरदर्द, मांसपेशियों, रक्त और लीवर से संबंधित दिक्कतें दे सकती है। आंखों का विशेष ध्यान रखें। समय समय पर शिकायत होने पर जांच कराते रहें। आपके आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

19 सितम्बर के बाद आपके स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। फिर भी अपनी सेहत का विशेष ख्याल रखें। अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें तथा योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। सुबह सुबह टहलना आपके लिए ज्यादा लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

वष के उत्तरार्द्ध में छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार है। इसलिए दी गई

परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का सहयोग मिलेगा। कला और सामाजिक कार्यों से जुड़े लोगों को अवश्य लाभ मिलेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो 19 सितम्बर के बाद आपको इच्छित नौकरी मिल जाएगी।

यात्रा-तबादला

द्वादश पर गुरु की दृष्टि आपको विदेश यात्रा करा सकती है। जलीय मार्ग से दर्शनीय स्थल की यात्रा अधिक करेंगे। यदि आप अपनी जन्मभूमि से दूर रहते हैं तो परिवार सहित अपनी जन्मभूमि की यात्रा भी कर सकते हैं।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में उच्चपद प्राप्ति व स्थानांतरण के योग बन रहे हैं। नौकरी व व्यापार के मामलों को लेकर अधिक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन, पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे, जिसमें परिवार के सभी सदस्य शामिल होंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे।

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं तथा प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रतिदिन चिड़ियों तथा चींटियों को दाना डालें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष अभिमन्त्रित कर सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टिकोण से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। व्यापारिक व्यक्तियों को इस वर्ष अच्छा लाभ मिलने वाला है। कुछ नए व्यापारिक भागीदार मिलेंगे, कारोबार का विस्तार होगा। व्यापार में पूंजी लगाने वाले कुछ नए लोग मिलेंगे। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधी मे कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उमीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा।

यदि आप नौकरी में हैं तो अच्छे परिणाम मिलेंगे तथा कार्यस्थल पर आपकी तारीफ होगी और मान सम्मान भी बढ़ेगा। नई और बेहतर नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। पदोन्नति के साथ-साथ अनुकूल स्थान पर परिवर्तन भी हो सकता है। षष्ठस्थ राहु के कारण नौकरी से संबंधित इच्छाएं पूर्ण होंगी।

धन संपत्ति

आर्थिक उन्नति के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में ही आपको भूमि, भवन व वाहन सुख की प्राप्ति हो सकती है। 16 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि आपकी आर्थिक स्थिति में मददगार साबित होगी। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। आप अपने कार्यों के प्रति सजग रहेंगे। पैसे का आगमन निर्विवाद रूप से होता रहेगा। जमापूंजी में तेजी मे वृद्धि होगी।

छोटे भाई या मातुल पक्ष के लोगों से आपको ज्यादा लाभ होगा। संतान की शिक्षा पर व मांगलिक कार्यों में आप ज्याद खर्च करेंगे। पंचमस्थ गुरु के कारण शेयर बाजार से जुड़े लोगों को अच्छा मुनाफा होगा।

घर-परिवार, समाज

इस वर्ष आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहने वाला है। मित्रों के साथ किसी सामाजिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। आपके भाईयों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

माता-पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल तथा मातुल पक्ष के लोगों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

संतान

16 फरवरी के बाद समय आपके बच्चों के लिए अनुकूल हो रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

पंचमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि के कारण आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। सफलता के मार्ग पर आगे बढेंगे। आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़ कर उन्नति करेंगे और आप गर्व का अनुभव करेंगे। आपके प्रति उनके दिल में सम्मान का भाव बढ़ेगा तथा वे आपकी सभी आज्ञाओं का पालन करेंगे।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा। 16 फरवरी के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिसके फलस्वरूप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती भी है तो आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। यदि पहले से कोई लम्बी बीमारी से ग्रस्त हैं तो इस वर्ष उससे भी छुटकारा मिल सकता है।

यदि आपने खाने पीने पर ध्यान नहीं दिया तो आपका मोटापा बढ़ सकता है। क्योंकि वर्ष के उत्तरार्द्ध में मसालेदार और तेल वाले आहार के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, इसे नियंत्रित करने की कोशिश करें। आलस्य का त्याग करें और स्फूर्ति के लिए व्यायाम करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

16 फरवरी के बाद छात्र वर्ग के लिए समय अनुकूल रहेगा। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को मनचाहे परिणाम मिलने की संभावना है। आपकी एकाग्रता में बढ़ोत्तरी होगी। आप विषयों को ज्यादा से ज्यादा पढ़ेंगे। इससे आपका अभ्यास पहले से बहुत अच्छा होगा एवं नतीजों में सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो छात्र विदेश में जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, उनको नए अवसर मिलने की उम्मीद है। प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेने वालों के लिए समय अनुकूल है।

षष्ठस्थ राहु के कारण अचानक प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं। उनको करियर में सफलता मिलेगी। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको वांछित नौकरी की प्राप्ति होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्राओं का प्रबल योग बन रहा है। नौकरी करने वाले

व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी होगा। तृतीयस्थ शनि के कारण आप छोटी -मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी करेंगे।

व्यावसायिक यात्राओं के साथ आपकी मनोरंजनात्मक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको लाभ भी मिलेगा। इस वर्ष आप धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुर्ण्याजन करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे, जिसमें आपको धर्मपत्नी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। 16 फरवरी के बाद आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से आप अपना दैनिक पूजा करते रहेंगे। आप दान पुण्य भण्डारा इत्यादि अच्छे कर्मों पर अधिक पैसा खर्च करेंगे, जिससे आपको आत्मिक सुख का अनुभव होगा। अनाथालय अथवा गरीब बच्चे की पढ़ाई लिखाई पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

- साधू, संन्यासी एवं गरीबों को भोजन कराएं।
- श्वेतार्क गणपति अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- नौ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरू कुम्भ राशि एंव छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत ही उत्तम रहने वाला है। कारोबारियों को इस समय अप्रत्याशित मुनाफा प्राप्त हो सकता है। आपके प्रतिद्वंदी आपकी नकल करने की कोशिश करेंगे, लेकिन वे पूरी तरह से विफल रहेंगे। छठे स्थान का राहु आपको शत्रुओं से भी लाभ प्राप्त करा सकता है। आपका मन उत्साह से पूर्ण रहेगा और कठिन से कठिन समस्या का सामना करने के लिए आप तत्पर रहेंगे। किसी भी काम को आप मन लगाकर करेंगे जिससे आपके बड़े अधिकारी आपसे प्रसन्न करेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। आप अपने परिश्रम के बल पर कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। कुछ कारणों को लेकर आपसे बड़े अधिकारी आपके लिए समस्या पैदा कर सकते हैं। लापरवाह और अति आत्मविश्वासी बिल्कुल न बनें। कार्य की अधिकता के कारण आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अपने कार्यों को तेजी से करें।

धन संपत्ति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आमदनी के कई नये स्रोत मिलेंगे जिससे आपके संचित धन में तेजी से वृद्धि होगी। वर्षारम्भ में छठे स्थान का राहु अचानक कोई बड़ा लाभ करा सकता है। पिता एवं आपके बड़े भाईयों से भी धन लाभ होगा। शेयर बाजार, सट्टा व लॉटरी इत्यादि के माध्यम से आपको अच्छा लाभ मिलेगा, जिसके फलस्वरूप आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

वर्ष का उत्तरार्द्ध किंचित प्रभावित रहने वाला है। उस समय आपकी आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर रह सकती है। अतः वित्तीय जोखिम उठाने से बचें। बिना लिखित प्रक्रिया के किसी को पैसे न दें और किसी पर भी आंख बन्दकर विश्वास न करें। जोखिम भरे कार्यों मे धन निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहने वाला है। परिवार के सभी सदस्यों के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा वे लोग हर मोड़ पर आपकी मदद करेंगे। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। यह समय आपके जीवनसाथी के लिए उत्तम रहेगा तथा भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचम स्थान का राहु आपकी संतान के लिए अच्छा नहीं है।

सामाजिक रूप से यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई संस्था बना सकते हैं। इस संस्था से बहुत सारे लोगों का कल्याण होगा, जिसका पूरा श्रेय आपको मिलेगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए बहुत ही शुभ है। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान की प्राप्ति होगी। बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में वे अच्छी प्रगति करेंगे तथा पराक्रम में वृद्धि होगी।

15 जून के बाद आप संतान को लेकर चिंतित रहेंगे आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां हो सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां सावधान रहें, गर्भपात की सम्भावना है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहने वाला है। आपका मन प्रसन्नचित्त बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में मन लगेगा। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। मानसिक प्रसन्नता के साथ आपका समय व्यतित होगा तथा आप शारीरिक रूप से पूर्ण आरोग्य रहेंगे। 2 मार्च को गुरु ग्रह के गोचर के साथ आपका समय किंचित प्रभावित होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ न कुछ शारीरिक कष्ट होता रहेगा। लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि अचानक छोटी-मोटी बीमारियों से आपको परेशान कर सकती है। आंख, पेट, पाचन और नसों में परेशानी हो सकती है। इलाज के लिए आयुर्वेदिक दवा का सेवन करना फायदेमन्द हो सकता है। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमरियों से बचा जा सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष बहुत ही श्रेष्ठ रहने वाला है। प्रतियोगिता परीक्षा में आपको वांछित सफलता मिलेगी। वर्ष के प्रारम्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष उपलब्धी प्राप्त करेंगे। जो लोग नौकरी की तलाश में हैं उनको इच्छित नौकरी की प्राप्ति होगी।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं रहेगा। पंचम स्थान का राहु आपकी शिक्षा-दीक्षा में रुकावट उत्पन्न कर सकता है तथा गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके करियर में एकाग्रता नहीं रहेगी और आपका मन भी अशान्त रहा सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में आप छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राओं का भी आनन्द लेंगे। धार्मिक यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

2 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपकी व्यावसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं के दौरान आपके छोटी मोटी परेशानियां भी हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके धर्म कार्यों तथा आध्यात्मिक उन्नति व योग साधना के लिए उत्तम रहेगा। आपकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा, आस्था व भक्ति बढ़ती जाएगी। द्विज, देव, ब्राह्मण व ईष्ट देव की कृपा प्राप्त होगी। आप कोई विशेष पूजा, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि संपन्न कराने में सफल होंगे। 15 जून के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान में राहु ग्रह का गोचर धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। इस समय आप मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान नहीं कर पाएंगे। आपके दैनिक पूजा पाठ में भी कमी आएगी तथा आपके श्रद्धा व विश्वास में कमी आएंगी।

- प्रतिदिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें।
- अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- अपने पूजा घर में लड्डू गोपाल की स्थापना कर उनका पूजन करें।
- पांचमुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शनि
(28/04/2017 - 28/04/2036)

महादशा शनि की अवधि उन्नीस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 28/04/2017 को आरम्भ और 28/04/2036 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह स्वाभाव से एक अशुभ ग्रह है। यह बाधा-ग्रह के रूप में जाना जाता है और इसके कारण परिश्रम का फल प्राप्त होने में विलम्ब होता है हालाँकि यह फल से वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य फल की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। आपकी जन्मकुण्डली में अष्टम, द्वितीय तथा पंचम भाव पर दृष्टि है और यह उनके कार्य को प्रभावित करता है। अष्टम भाव, जिसमें यह स्थित है, दीर्घायु, विरासत, पैतृक सम्पत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, असन्तोष, पराजय, हानि, बाधा ओर चोरी का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शनि अष्टम भाव को बल प्रदान कर रहा है। दीर्घायु का कारक होने के कारण यह लम्बी आयु तथा प्रसन्नता देता है। विदेश में स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

धन-सम्पत्ति :

अष्टम भाव में शनि की स्थिति के कारण आपके जमीन, बाहन, शक्ति तथा पद की प्राप्ति होगी। यह चल-अचल सम्पत्ति की वृद्धि में आपकी सहायता करेगा और अनेक उत्तरदायित्व का भार भी वहन करना होगा। आप अपने मार्ग में आनेवाली विभिन्न कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यवसाय :

व्यवसाय में आप अपने पिता के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। व्यावसायिक जीवन में अनेक गम्भीर समस्याएं आ सकती हैं। पैतृक सम्पत्ति तथा व्यापार में भी बाधाओं और समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

पारिवारिक जीवन :

व्यावसायिक तथा व्यापारिक जीवन की तरह ही आपका पारिवारिक जीवन भी दुर्भाग्य, बाधाओं तथा समस्याओं से घिरा है। आपको इन बाधाओं का सामना करना है। आप अपने घर से दूर ओर दूसरी जाति की औरतों की ओर आकृष्ट हो सकते हैं।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

व्यापारिक तथा पारिवारिक जीवन की तरह ही आपकी शिक्षा के क्षेत्र में भी बाधाएं आएंगी।

अंर्तदशा :- शनि - शुक्र
(18/02/2024 - 19/04/2027)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 28/04/2017 को प्रारंभ होकर 28/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 18/02/2024 को प्रारंभ होकर 19/04/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति। उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी खूब यात्राएं होंगी। इस कारण बहुत से व्यक्तियों से मित्रता होगी। मित्रों में महिलाएं भी होंगी। लोकप्रिय बनेंगे, खूब धन कमाएंगे। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- शनि - सूर्य
(19/04/2027 - 31/03/2028)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 28/04/2017 को प्रारंभ होकर 28/04/2036 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 19/04/2027 को प्रारंभ होकर 31/03/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। सूर्य पिता का कारक है और आत्मा का प्रतिनिधि है। लग्न में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के 7वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है। प्रसन्नता में कमी आ सकती है। आकांक्षाओं की पूर्ति और सत्ता प्राप्त करने के लिए सिद्धांतों और नियमों को ताक पर रख कर पापकर्म कर सकते हैं। प्रसन्नचित चेहरे और आशावाद के कारण लोकप्रियता हासिल करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शनि - चन्द्र
(31/03/2028 - 30/10/2029)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 28/04/2017 को प्रारंभ होकर 28/04/2036 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठा भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज़, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। चंद्र शक्तिशाली ग्रह है। छठे भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पर कर्ज़ चढ़ सकता है। नौकरी में अधिकारी अप्रसन्न हो सकते हैं। सहकर्मियों और संबंधियों से संबंध भी मधुर नहीं रहेंगे। मानसिक क्षमता और साहस में कमी आ सकती है। जिगर की व्याधि संभव है। खानपीन में देखभाल आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 (रत्ती का मोती चांदी की अंगूठी में दायें हाथ की कनिष्ठिका में, सोमवार को प्राप्तःकाल कच्चे दूध से धोकर चंद्र मंत्र के 11 जाप के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :- शनि - मंगल
(30/10/2029 - 09/12/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 28/04/2017 को प्रारंभ होकर 28/04/2036 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 30/10/2029 को प्रारंभ होकर 09/12/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

मंगल ऊर्जा का कारक है। तृतीय भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 6, 9, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप साहसी, प्रसिद्ध और कार्यों में दक्ष होंगे। परिवार में अशांति हो सकती है क्योंकि आप अक्खड़ और सिद्धांतहीन हो सकते हैं। प्रत्येक कार्य और उद्यम में बाधाएं आ सकती हैं।

भाई-बहनों, परिवारजनों से कटुवाणी के कारण संबंध बिगड़ सकते हैं। कान के रोगों से बचाव करें।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के वैदिक मंत्र के 10000 जाप करें।

महादशा :- बुध
(28/04/2036 - 28/04/2053)

बुध की महादशा 28/04/2036 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 28/04/2053 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध लग्न में स्थित है। बुध की दृष्टि

सप्तम भाव पर है। इसके पहले आपकी 19 वर्ष की शनि की दशा चल रही थी। उस दशा के दौरान आपको समृद्धि की प्राप्ति, जीवन वृत्ति में प्रगति तथा यात्रा हुई होगी। बुध की इस दशा के दौरान जीवन का सुख, माता से लाभ, सुखमय वैवाहिक जीवन तथा जीवन में प्रगति होगी।

स्वास्थ्य :

बुध के अपनी ही राशि में होने के कारण आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा जीवनी शक्ति की प्राप्ति होगी। आप में शक्ति तथा उत्साह होगा तथा आप अशावादी और प्रसन्न होंगे। आपका व्यक्तित्व व रंगरूप आकर्षक होगा। अधिक परिश्रम तथा थकावट के कारण कोई संक्रामक बीमारी, बुखार अथवा स्नायविक दुर्बलता आदि मौसमी बीमारी हो सकती है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, वैभानिकी तथा मस्तिष्क से संबद्ध सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर और हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को अचानक लाभ होगा, कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और उच्च पद तथा अधिकार की प्राप्ति होगी। आपको उच्चाधिकारियों का सद्भाव तथा अधीनस्थ कर्मचारियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको कठिन परिश्रम करना होगा। व्यापारी वाणिज्य व्यापार में कुशल होंगे और उन्हें अच्छा लाभ मिलेगा। आर्थिक-समृद्धि तथा जीवन-वृत्ति में उन्नति के लिये यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में जीवन तथा वाहन का सुख मिलेगा। बुध की दशा के दौरान आपको सभी सुख, माता से लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और आपकी जमीन-जायदाद में भी वृद्धि होगी। सम्पत्ति के सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। सूर्य की अन्तर्दशा में छोटी तथा शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपनी परीक्षा में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा व्यापार में प्रवीण होंगे। आप तेज हैं और अपनी वाक्पटुता के कारण जाने जाएंगे। लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा ललितकला में भी आपकी रुची होगी। आप तेज, कूटनीतिज्ञ, व्यवहार कुशल, सर्वतोमुखी हैं और विविध विषयों में रुचि रखते हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनकी शिक्षा उत्तम होगी और वे उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे। उनके साथ आपका संबंध बहुत सुन्दर रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा होगी और उन्हें सम्पत्ति तथा साझेदारी में लाभ की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी के साथ आपका संबंध अत्यना मधुर रहेगा। आपकी माता का जीवन अत्यन्त सफल रहेगा और उन्हें सम्पत्ति, यश और ख्याति

की प्राप्ति होगी। आपके पिता का सट्टे तथा ऊँचे कारोबार में निवेश सफल रहेगा। आपके छोटे भाई-बहनों को विभिन्न स्रोतों से लाभ, उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे। आपके बड़े भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और उन्हें सम्पत्ति तथा माता से लाभ की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध अत्यन्त मधुर होंगे।

अन्तर्दशा :

बुध की मुख्य दशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और आपको सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे केतु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। शुक्र के कारण आपको बच्चों से सुख तथा सट्टे में लाभ मिलेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएं होंगी जबकि उसके बाद आनेवाली चन्द्रदशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में लाभ तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी जबकि राहु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरू के फलस्वरूप आपको साझेदारों से लाभ तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान कुछ परिवर्तन होगा और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- बुध - बुध
(28/04/2036 - 24/09/2038)

आपके लिए बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 28/04/2036 को प्रारंभ होकर 24/09/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको अपने ज्ञान के कारण प्रसिद्धि मिलेगी। सद्गुणों में वृद्धि होगी। ज्ञानार्जन उत्तम होगा। वाक्शक्ति प्रभावशाली होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार में सफलता मिलेगी। जीवनसाथी और व्यापार में साझेदार से संबंध मधुर रहेंगे।

आपके जीवनसाथी नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं या वर्तमान कार्य का विस्तार हो सकता है। आपके पिता को निवेश या सट्टेबाजी में लाभ हो सकता है। माता को कार्यों में सफलता मिलेगी, धन का लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए नये मित्र, धन, शिशु का जन्म, लघु यात्राएं, कार्यों में सफलता, नयी योजनाओं का संकेत है। आपकी संतान को उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो ज्ञान-विज्ञान के कार्यों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद मिल सकता है; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को अच्छा लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - केतु
(24/09/2038 - 21/09/2039)

आपके लिए बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/09/2038 को प्रारंभ होकर 21/09/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आपको निवेश या सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। कार्य में कर्मठ होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी। संतान के मामलों में रुचि होगी, उनसे खुशी मिलेगी। मंत्र-यंत्र में रुचि लेंगे। सफलता और धन का योग है। जीवन में सब सुख-सुविधाएं रहेंगी। कार्य पूर्ण होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, सम्मान में वृद्धि होगी।

आपके जीवनसाथी लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता को धनलाभ होगा, रिश्तेदार सहयोग करेंगे, सुख-सुविधाएं रहेंगी, धन का संचय होगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, साझेदारी से लाभ, व्यापार में लाभ,

विरोधियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान का आत्मविश्वास उत्तम रहेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्राएं हो सकती हैं; विरोधियों पर विजय होगी। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परितर्वन हो सकता है, अप्रत्याशित लाभ होगा। व्यापारी धनी बनेंगे।

अंर्तदशा :- बुध - शुक्र
(21/09/2039 - 22/07/2042)

आपके लिए बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 21/09/2039 को प्रारंभ होकर 22/07/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। उच्चपद और सम्मान प्राप्त होंगे। सट्टेबाजी या निवेश से लाभ हो सकता है। आप धनी बनेंगे, खुद का मकान और वाहन हो सकते हैं। किस्मत साथ देगी। सुअवसर खूब मिलेंगे। कला में रुचि होगी। सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। घरेलू सुख होगा।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, धनी बनेंगे, खुश रहेंगे और उच्चपद प्राप्त करेंगे। आपके पिता प्रसन्न और समृद्ध होंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है, अचानक धनागम होगा, सुख के साधन क्रय करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से मधुर संबंध, खुशी, धन, कला में रुचि, सौभाग्य, घर और कार्यालय में सुखद वातावरण और सुखी जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी, परिश्रम से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, व्यापार में फ़ायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता व्याप्त रहेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को विभिन्न माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए लक्ष्मीजी की आराधना करें।

अंर्तदशा :- बुध - सूर्य
(22/07/2042 - 29/05/2043)

आपके लिए बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/07/2042 को प्रारंभ होकर 29/05/2043 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे। आपका स्वास्थ्य और ऊर्जा उत्तम रहेंगे। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे। प्रबंधन शक्ति उत्तम होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है, इससे निबटने के लिए कूटनीति और धैर्य की आवश्यकता पड़ेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। व्यापार में लाभ होगा। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, व्यापार में लाभ होगा, यात्रा और प्रोन्नति का योग है। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी, प्रारंभ किये कार्य पूर्ण होंगे, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता को प्रसिद्धि, प्रोन्नति, कार्यों में सफलता मिलेंगी; धन का लाभ होगा। आपके भाई-बहनों को उच्चपद, सम्मान, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता का संकेत है।

आपकी संतान का भाग्य उत्तम रहेगा, सफलता और समृद्धि मिलेंगी, विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल सकता है, यात्रा हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा, भाग्य चमकेगा, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

सामान्यतः आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पित्त संबंधी मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - चन्द्र
(29/05/2043 - 27/10/2044)

आपकी बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 29/05/2043 को प्रारंभ होकर 27/10/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। कुछ शत्रु हो सकते हैं, मगर वे निर्बल रहेंगे। मातहतों और कर्मचारियों से अच्छे संबंध रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। वांछित वस्तुएं प्राप्त होंगी। पराविद्या और धर्म में रुचि हो सकती है। यात्राओं से खुशी मिलेगी। शुभकार्यों पर धन खर्च होगा। विदेश यात्रा हो सकती है।

आपके जीवनसाथी के जीवन में परिवर्तन हो सकता है, यात्रा और खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके पिता सफल होंगे, प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। माता को कला और सहित्य में रुचि होगी।

आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन, अचानक लाभ, अध्यात्म में रुचि, जायदाद से लाभ, जायदाद की खरीद, उत्तम शिक्षा और धन का संकेत है। आपकी संतान को लाभ होगा, शिक्षा उत्तम होगी और कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी और सुखी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र और नेत्रों में मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- बुध - मंगल
(27/10/2044 - 24/10/2045)

आपके लिए बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 27/10/2044 को प्रारंभ होकर 24/10/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजयी होंगे। धन का संचय होगा; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। कला में दक्षता प्राप्त हो सकती है। स्वास्थ्य और रोगनिरोधक क्षमता उत्तम रहेंगे। लघु यात्राएं हो सकती हैं। साख और प्रसिद्धि में वृद्धि होगी। विरोधियों पर विजय होगी। मुकदमें में विजय होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। सफलता मिलेगी। उच्चपद और सत्ता प्राप्त कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी के लिए यात्रा, महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है। आपके पिता को साझेदारी से लाभ हो सकता है; व्यापार में लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, प्रगति में बाधा आ सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए आत्मविश्वास में वृद्धि, उत्तम कार्यक्षमता, सफलता, बाधाओं से लड़ने की शक्ति का योग है। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी, प्रसिद्धि मिलेगी। अगर आप सेवारत हैं तो सफलता मिलेगी; आय बढ़ेगी। परामर्शदाओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारी सौभाग्यशाली होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अत्यधिक परिश्रम से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल दाल, लाल वस्त्र और लाल चंदन दान में दें।

अंर्तदशा :- बुध - राहु
(24/10/2045 - 13/05/2048)

आपके लिए बुध की महादशा 28/04/2036 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 24/10/2045 को प्रारंभ होकर 13/05/2048 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपके धन में वृद्धि होगी। आर्थिक प्रगति के लिए बहुत से अवसर मिलेंगे। चाचा से संबंध उत्तम रहेंगे। व्यापार में विस्तार होगा, उत्तम लाभ होगा। कार्य पूर्ण होंगे,

प्रसिद्धि मिलेगी। दूसरे लोगों से सहायता मिलती रहेगी। निवेश या सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। संतान का जन्म हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। धन का संचय होगा।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को कार्यों में सफलता मिलेगी। माता को अचानक लाभ हो सकता है, अचानक कोई घटना घट सकती है, यात्रा संभव है। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, भौतिक सुख, उच्चपद, सौभाग्य, आत्म-विश्वास, आर्थिक उन्नति, दूसरों से सहायता का संकेत है।

आपकी संतान को सहकर्मियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापार में विस्तार होगा, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। परामर्शदाताओं को हर प्रकार से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनजा और तिल दान में दें।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

एस्ट्रोग्राफ – 2026

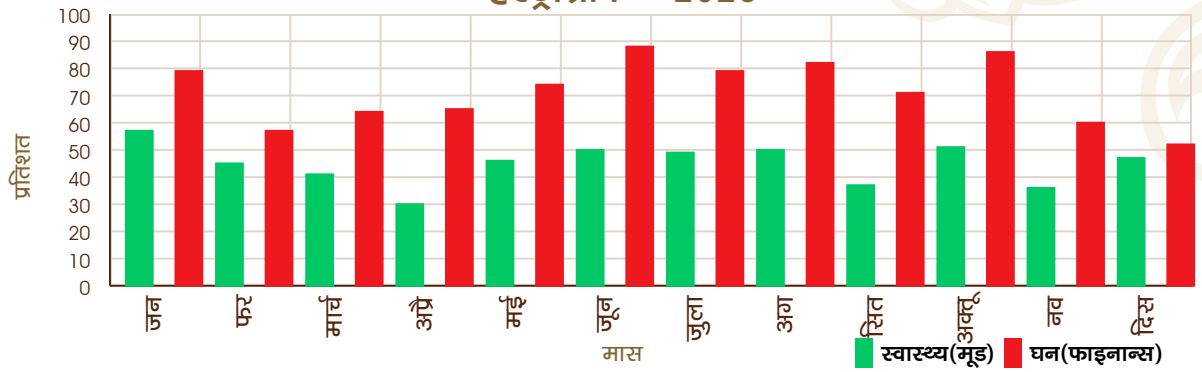

एस्ट्रोग्राफ – 2027

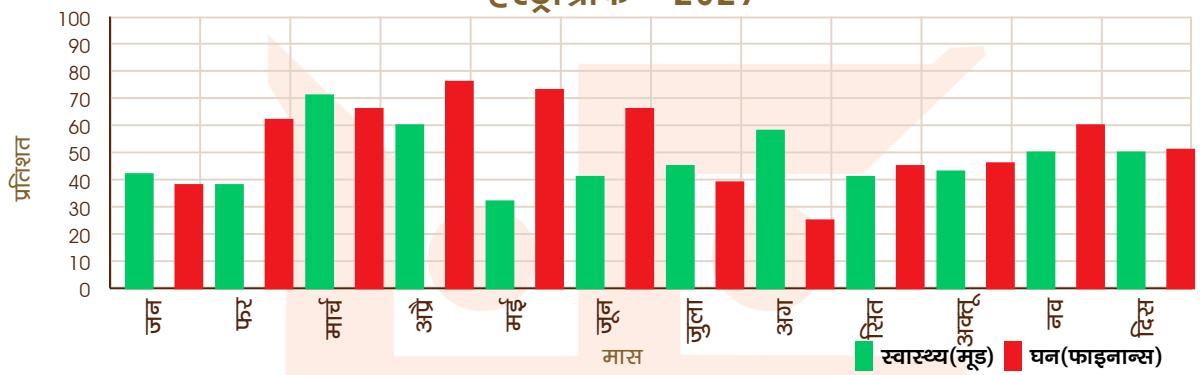

एस्ट्रोग्राफ – 2028

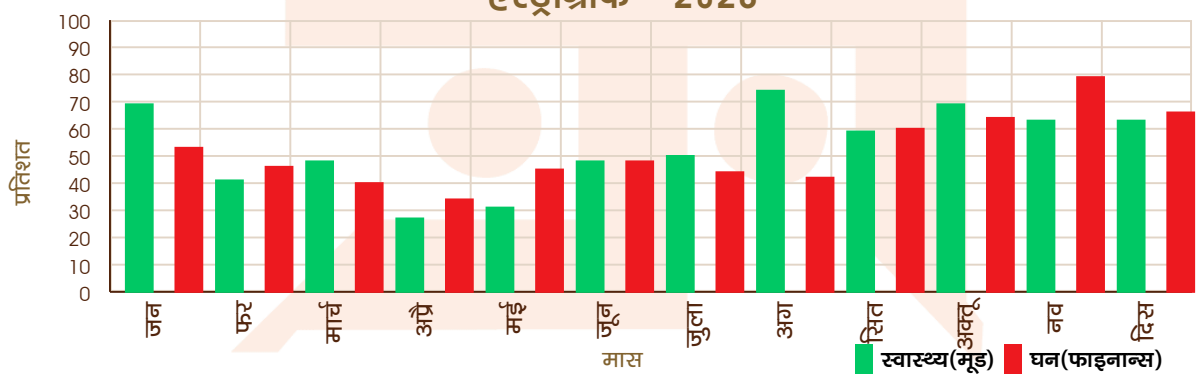

एस्ट्रोग्राफ – 2029

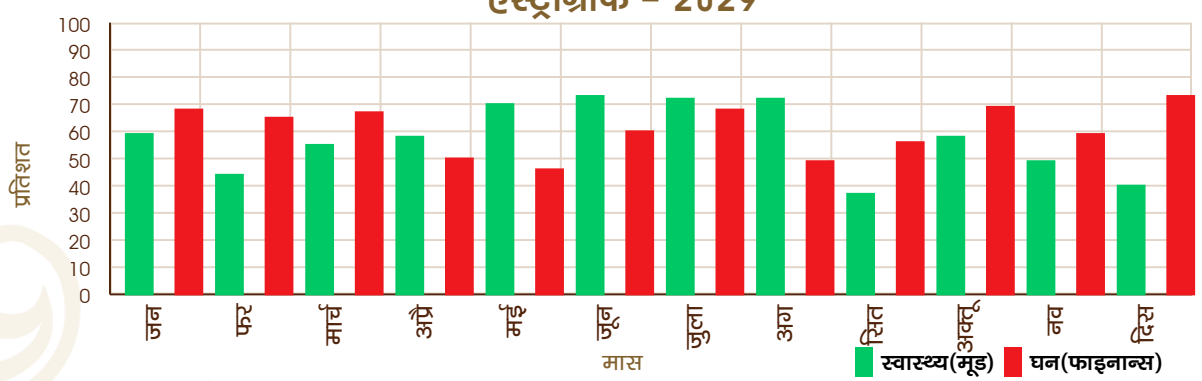

एस्ट्रोग्राफ – 2030

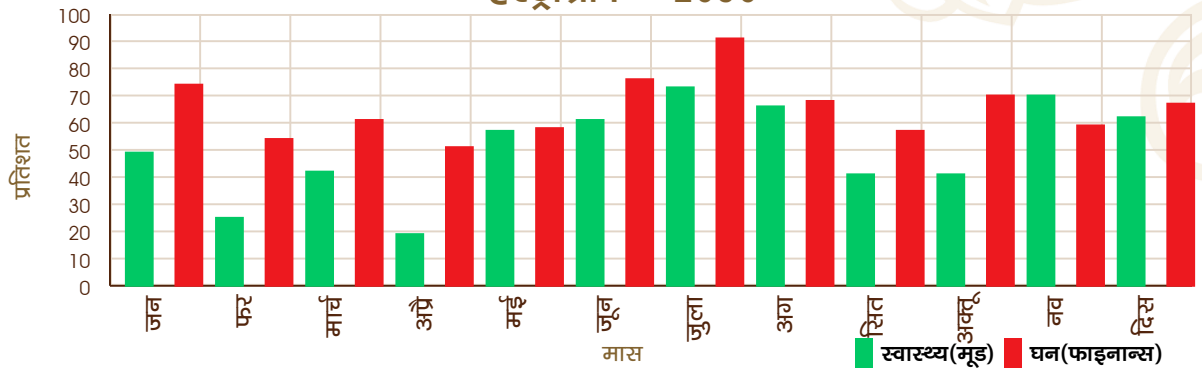

एस्ट्रोग्राफ – 2031

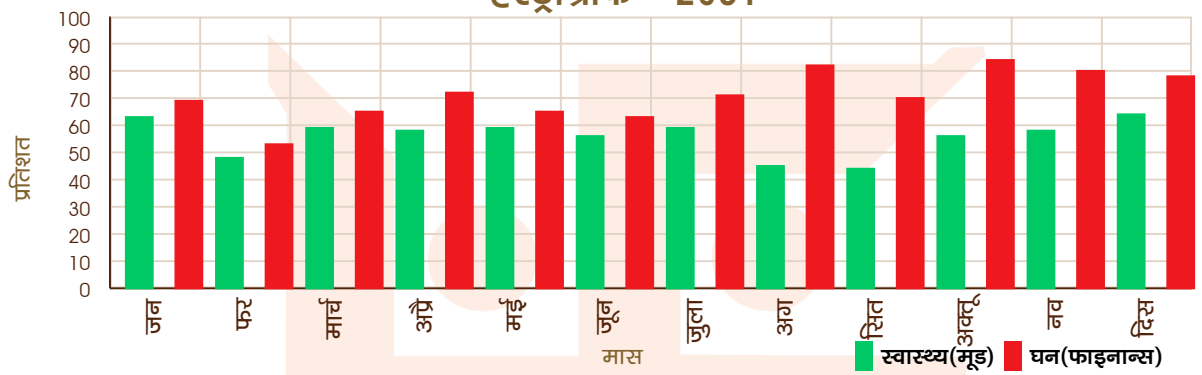

एस्ट्रोग्राफ – 2032

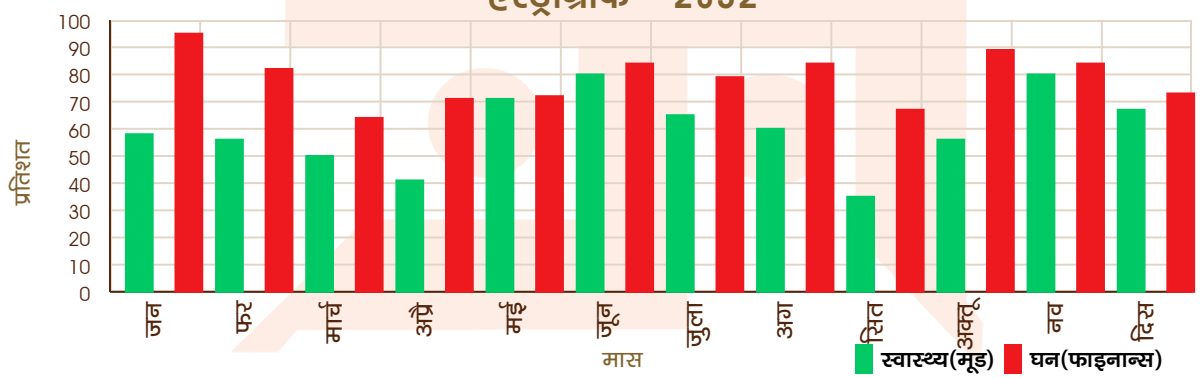

एस्ट्रोग्राफ – 2033

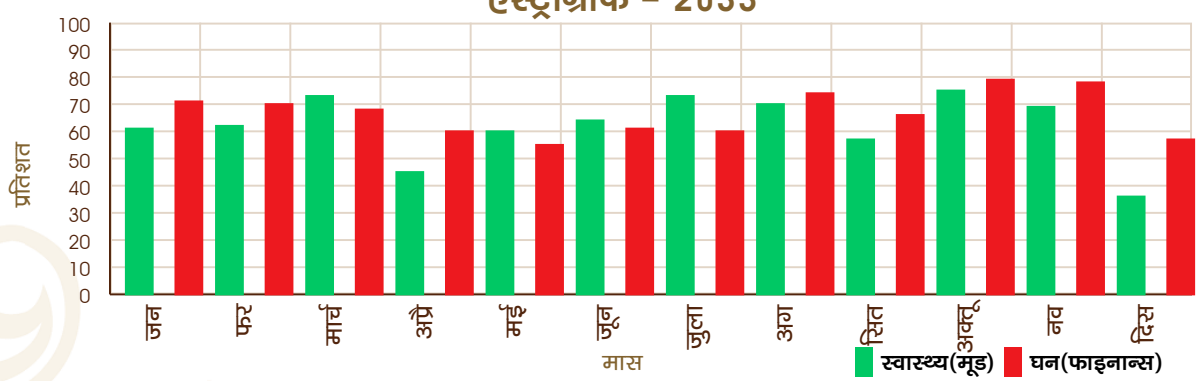

एस्ट्रोग्राफ – 2034

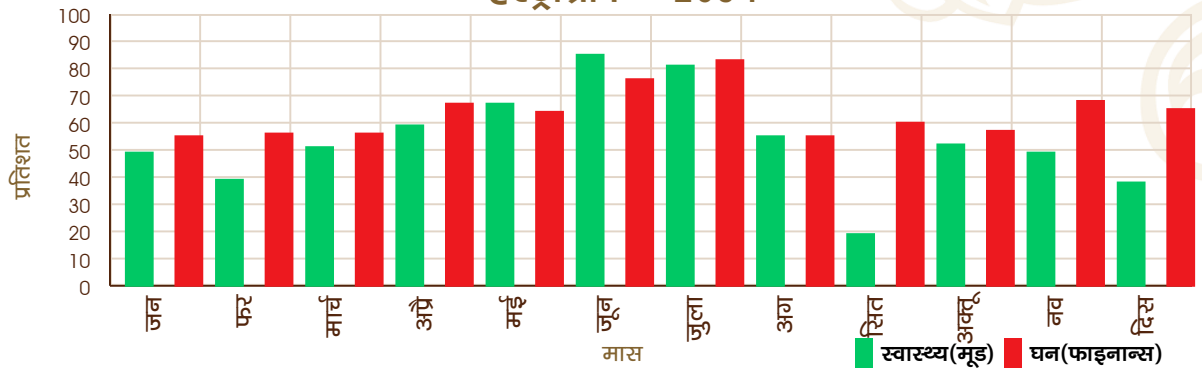

एस्ट्रोग्राफ – 2035

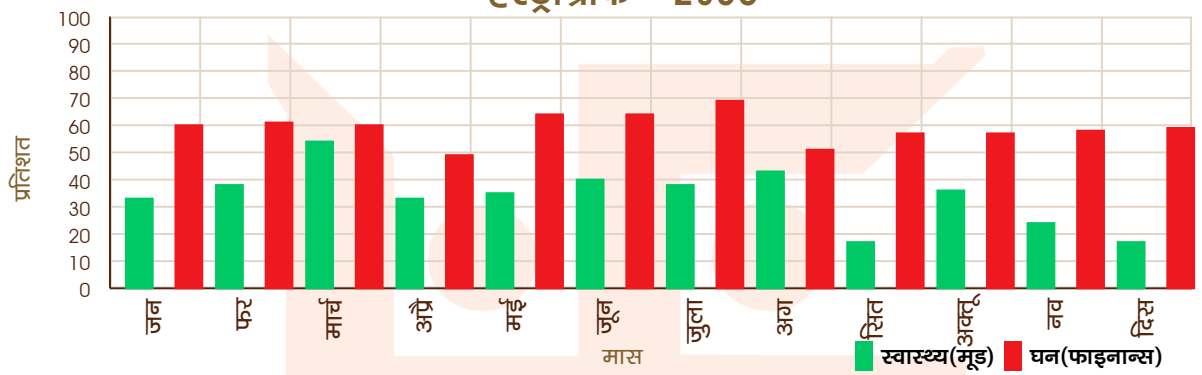

एस्ट्रोग्राफ – 2036

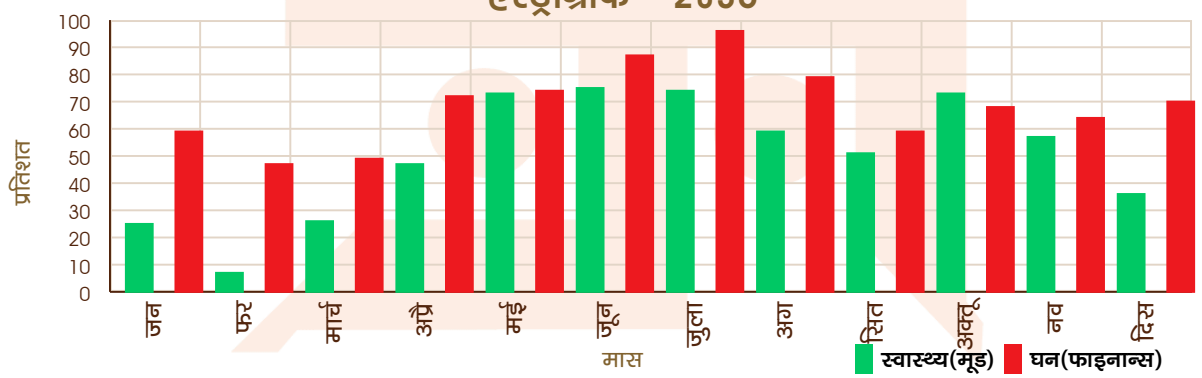

एस्ट्रोग्राफ – 2037

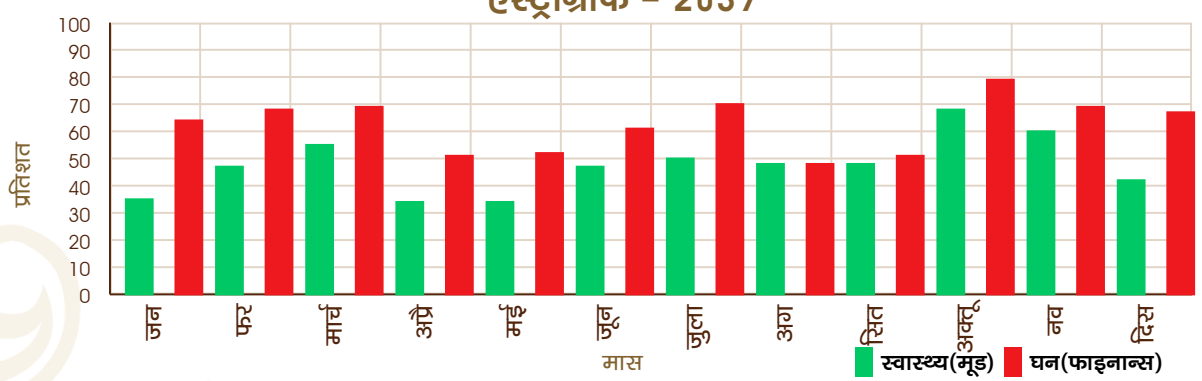

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2038

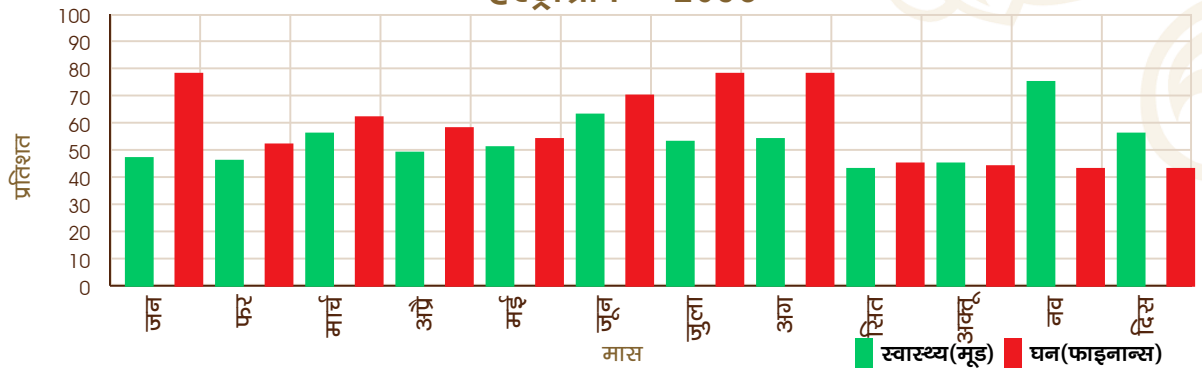

एस्ट्रोग्राफ - 2039

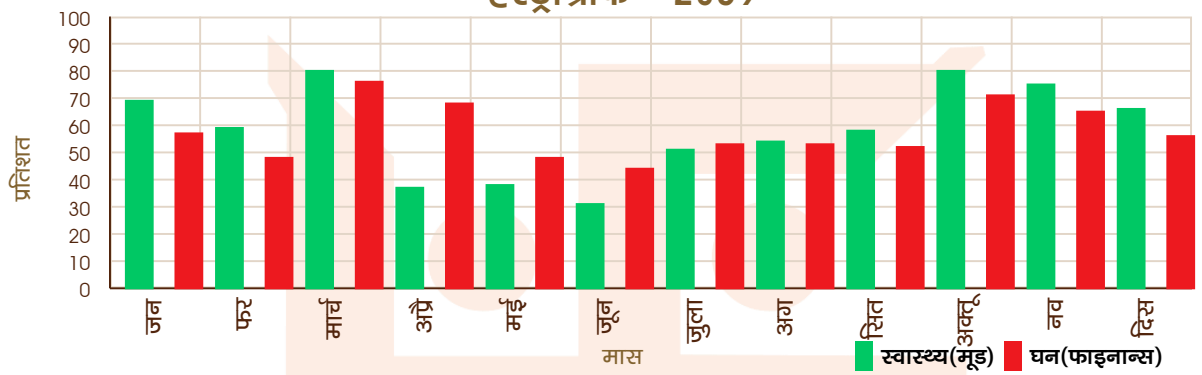

एस्ट्रोग्राफ - 2040

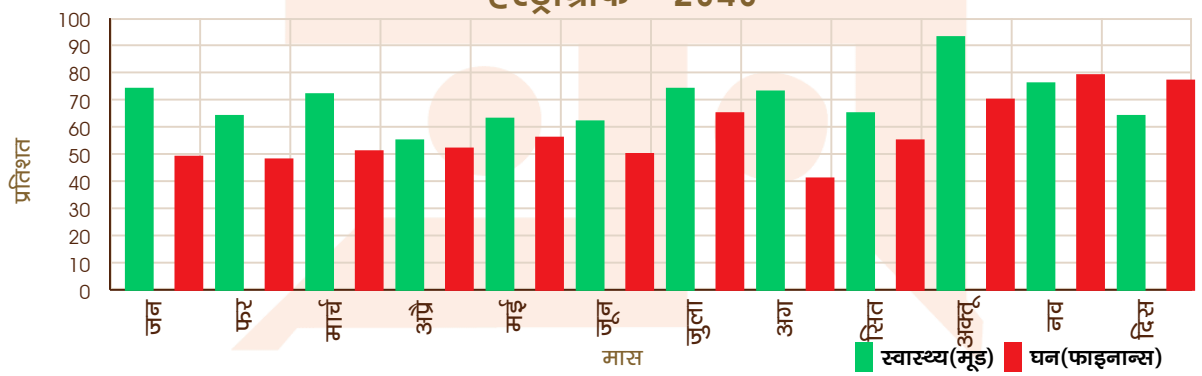

एस्ट्रोग्राफ - 2041

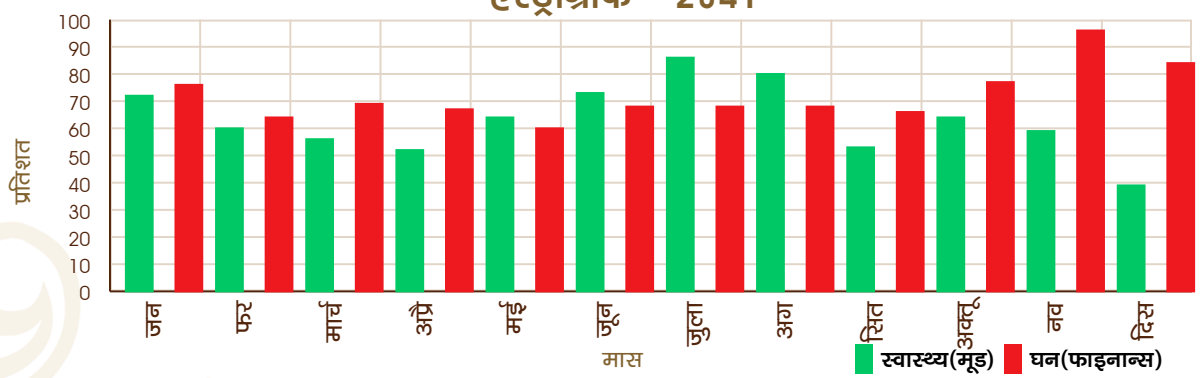

Vikram Bhalerao (Vedic Astrologer)
Vedic Astrology | Gemology | Numerology

Kharadi, Pune -411014 | Maharashtra, India.
+91 8999938866
vikram.bhalerao@outlook.com

एस्ट्रोग्राफ - 2042

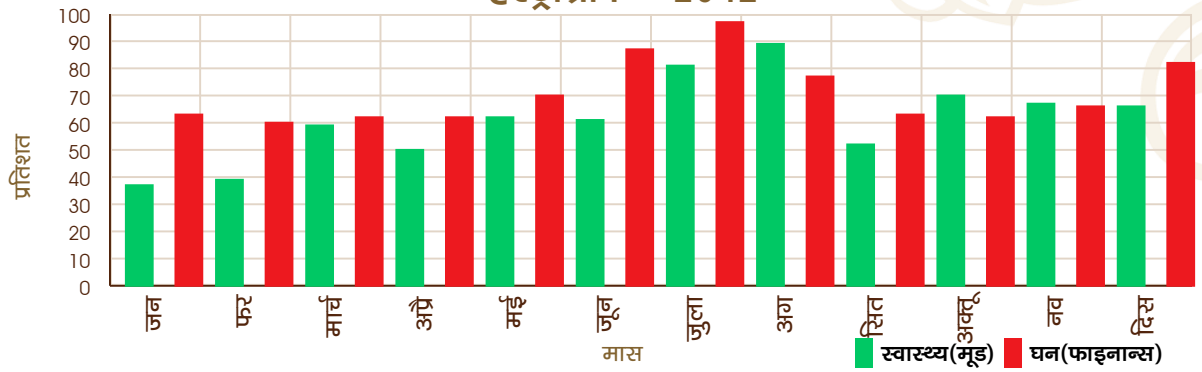

एस्ट्रोग्राफ - 2043

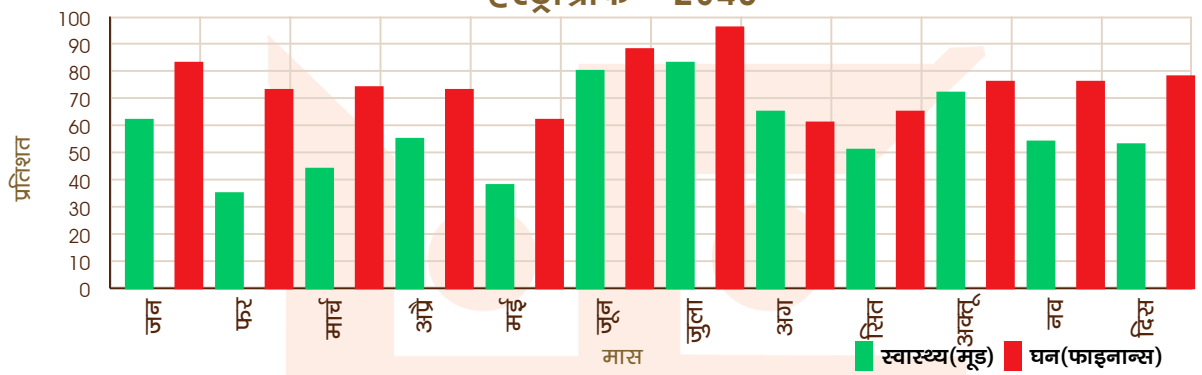

एस्ट्रोग्राफ - 2044

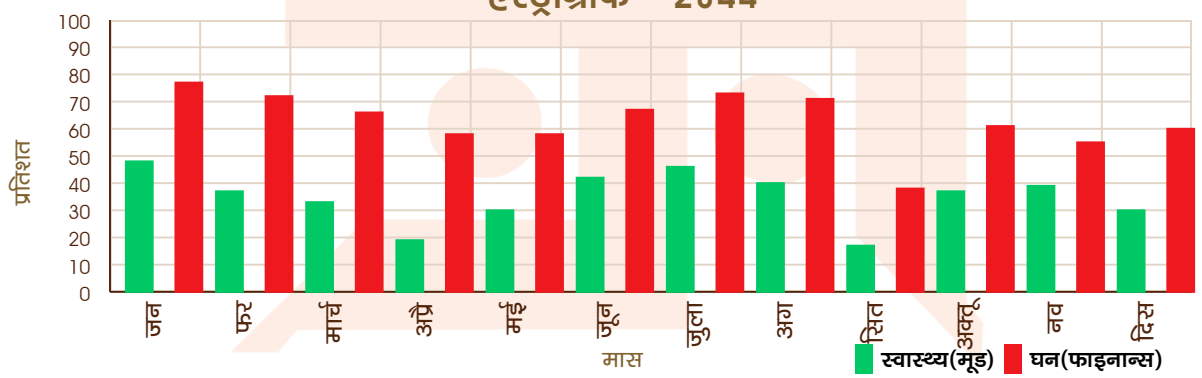

एस्ट्रोग्राफ - 2045

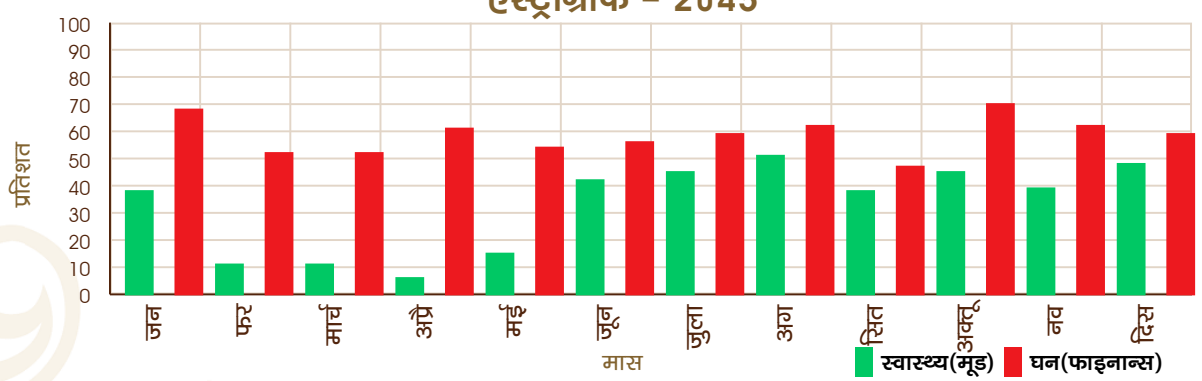

योग

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।

।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि

योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।
तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ।।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-33 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांद्यादियुते विशेषात् ।

।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-47 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांद्यंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शनि,केतु,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

दत्तकपुत्र प्राप्ति योग

मान्दं सुतर्क्षं यदि वाऽथबौधं
मान्द्यर्कपुत्रान्वितवीक्षितं चेत् दत्तात्मजः ।।
।। फलदीपिका ।। अ. 12/श्लो.-8 ।।

जन्मपत्रिका में यदि पंचम भाव पर मिथुन, कन्या, मकर या कुंभ राशि हो और शनि पंचम स्थान में स्थित हों या पंचम भाव पर मान्दिय शनि की दृष्टि हो तो दत्तक पुत्र प्राप्त होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको पुत्र गोद लेना पड़े, ऐसी संभावना है।

एक पुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 295 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम स्थान में राहु या केतु स्थित हो तो एक पुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको एक पुत्र का सुख प्राप्त होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वात (वायु) रोग योग

षष्ठाष्टमे मन्दे वातामयम्।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-11।।

यदि जन्मपत्रिका में षष्ठ या अष्टम भाव में शनि स्थित हो तो वात रोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप वात रोग से पीड़ित होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

शास्त्राग्निव्याघ्रसर्पादि पीड़ा योग

पापर्क्षयुक्ते निधने सपापे
शस्त्रानलव्याघ्रभुजङ्गपीडा।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-20।।

यदि जन्मकुंडली में अष्टमेश पाप ग्रह हो और आठवें भाव में पापग्रह भी हों तो शस्त्र, अस्त्र, अग्नि, व्याघ्र, सर्पादि की पीड़ा होती है।

योग कारक ग्रह : शनि,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको शस्त्र/ अस्त्र/अग्नि/व्याघ्र या सर्पादि से पीड़ा होगी। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।

।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

पुत्रेश्वरे दारपतौ बलाढ्ये दृष्टे युते वा त्वरिनायकेन जातोऽनपत्यः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-7।।

यदि जन्मकुण्डली में पंचमेश एवं सप्तमेश बलिष्ठ होकर षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को पुत्र नहीं होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,गुरु,शुक्र,बुध योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। अतः आप पुत्रहीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी

होती हैं।

योग कारक ग्रह : राहु,शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म कार्य में धन व्यय योग

व्ययाधिपसमायुक्तनवभागपतौ शुभे ।
शुभांशे शुभमध्यस्थे धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-4 ।।

यदि जन्मपत्रिका में व्ययेश जिस नवांश में हो वह शुभग्रह हो एवं शुभग्रह के अंशक में शुभग्रहों के मध्य हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अपने धन का व्यय धर्मकार्य में करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

धर्म के कारण धन व्यय योग

शुभेन कर्मनाथेन दृष्टे युक्ते व्ययेश्वरे ।
स्वोच्चामित्रस्ववर्गस्थ धर्ममूलाद्धनव्ययः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.8/व्ययभाव-8 ।।

यदि जन्मपत्रिकामें दशमेश शुभ ग्रह से व्ययेश दृष्ट युक्त हो तथा अपने उच्च, मित्र स्वराशिगतनवांशक में हो तो धर्म कार्य में धन का व्यय होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य योग की संभावना : 18 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धार्मिक कार्य में धन व्यय करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

''अन्योन्यकेन्द्रगृहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात् ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ।।

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्रम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''
।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी

प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

''नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।''

।।बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका के "उत्तमवर्ग" भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "उत्तमवर्ग" में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।